धन्यवाद ।

हम अपने श्रीमान् महाराजाधिराज महाराजा जी श्री १०८ श्री सज्जनसिंहजी सा० बहादुर रतलामनरेशको शुद्धअन्तःकरणसे धन्यवाद देते हैं कि, जिनकेराज्यमें हम आनन्दपूर्वक अपना पोषण तथा उनकी गुणग्राहकता द्वारा सदैव आनन्द प्राप्त करते हैं सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर इनकी दिन प्रति सर्व प्रकार वृद्धिकरे ॥

पुनः श्रीयुत खान बहादुर खुरशेदजी रुस्तमजी दीवान साहिब रतलामके अत्याभारी हैं कि, जिनके शासनसमय में हमलोगों के उत्साहने उन्नतीपाई ।

तत्पश्चात् विद्वद्वर डी० एफ़० वकीलसा० महाशय प्रिन्सिपाल सेन्ट्रल कालेज रतलामका कृतज्ञहूं कि, जिनकी सहायता और पूर्णअनुग्रह से नूतन पुस्तकोंके निर्मित करनेमें हमारा उत्साह बढताहै॥

अन्तमें हिन्दीभाषाके हितकारी और उत्तेजक श्रीमान् सेठ खेमराज श्रीकृष्णदासजी की परोपकारता सराहनीयहै जिन्होंने इसपुस्तक के मुद्रितार्थ स्वकीय "श्रीवेङ्कटेश्वर" यंत्रालय तथा द्रव्यका आश्रयदेकर देशभाषा भंडारकी पूर्ति की ॥

अर्पण पत्रिका।

श्रीयुत परम मान्यवर !

राο राο पंडित विनायकराव शास्त्रि

सुपरिंटेंडेंट मेल नार्मलस्कूल जबलपुर

महाशय ! आपकी कोमल प्रकृति, सन्माननीय तथा परोपकारी स्वभाव नीतिज्ञता तथा विद्या वृद्धि शीलता. देख बहुतदिनों से इसीविचार में था कि. कोई ऐसी पुस्तक आपके अर्पणकरूं जिसकी हिन्दीभाषा के भंडारमें न्यूनता हो, सो आज इस कृपालु परमेश्वरकी सुदृष्टि से यह लघु पुस्तक आपके आज्ञानुवर्ती सेवक द्वारा विनय-पूर्वक अर्पण कीजाती है आशा है कि, आप स्वीकारता द्वारा इस सेवक को आभारी करेंगे.

ग्रंथकर्ता.

भूमिका।

बहुधा जहाँतक देखागया, उससे यही ज्ञात होता है कि, हरएक देशकी भाषाओंमें कहावतें होती ही हैं यहांतक कि, इनके उपयोग बिना वार्तालापमें सरसता नहीं आती। ऐसा कोई भी मनुष्य नहीं जो थोडी से थोडी कहावतोंका उपयोग न करता हो वरन् कई भाषाओं में तो इनके ग्रंथके ग्रंथपाये जाते हैं।'

शोकका स्थल है कि, हमारी मातृभाषा हिन्दीमें कहावतोंका अधिकतासे उपयोग होते हुए भी बहुधा लोग उनके आशयसे अज्ञात रहते हैं इसका यही कारण है कि, सम्प्रति ऐसी पुस्तकों का इस भाषा के भंडार में अभाव है।

इसी अभाव को दूरकरने के निमित्त हिन्दी अंग्रेजी आदि मुख्य २ छः भाषाओं की कहावतें शुद्धहिन्दी में विवरण सहित इस पुस्तक में संग्रह की गई हैं कि, जिससे हिन्दी के प्रेमीगण सबभाषाओं की कहावतों का ज्ञान प्राप्त करें।

कहावतोंके निर्माणका मूलकारण सोचने से यही ज्ञात होता है कि, प्राचीन समयके बुद्धिशाली पुरुष अपनी कविता में ऐसे २ वाक्य रखते थे जो छोटे होकर बहुत अर्थ प्रकट करने-वाले हों तथा उनके अभीष्टअर्थ को पुष्ट करते हों। जब अन्य लोगों ने उनकी कविता में ऐसे उपयोगी वाक्य पाये तो वार्तालापमें भी उनका उपयोग करने लगे। इस प्रकार ज्यों २ समय व्यतीत होताचला त्यों २ लोग उन वाक्यों को विशेष काममें लानेलगे यहां तक कि, फिर उन कहावतोंमें बहुधा खूबी रहने सर्व मान्य तथा रस, ज्ञान, गर्भित अर्थ तथा भाषाका शृंगार होनेसे सभी लोग उनका उपयोग करने लगे तथा विशेषकर विद्वान् और रसीले लोगों ने तो इन्हें सादर ग्रहणकिया तथा अब भी ऐसाही देखा जाता है।

भूमिका।

कहावत सर्वप्रिय वही होती है जो छोटी होकर सर्व मान्य यथार्थ चित्तवेधक, शिक्षा पूर्ण और छटादार हो । बहुधा ऐसा देखा जाता है कि, एकही कहावत के कई अर्थ निकलते हैं। जो कहनेवाले की इच्छासे ही दार्ष्टांत हो सक्ते है ॥

जिस प्रकार व्याकरण मे सूत्र, गणितमें कुजी होती है उसी प्रकार भापामे अभिप्राय पुष्ट करने को कहावत है।

दूर २ प्रदेशों तथा देशोकी भाषाओ में जो कहावतें हैं वे बहुधा मिलान खाती है अर्थात इंग्लेन्ड, फ्रान्स, इटली, चीन, फारस आदि देशों तथा इस देशकी प्रान्तिक कहावतों का प्रतिबिम्ब बहुधा एकसमान दिखाई देता है । इसमे कोई आश्चर्य की बात नही, क्योंकि विद्वानों का ज्ञान, तथा अनुभव बहुधा एकसरीखा ही रहता है प्रगट है कि " सौ सयानों का एक मत " ॥

इस उपरोक्त वर्णन से हमारे पाठकों को भली भांति ज्ञात होगया होगा कि, कहावत भापा का शृगार अवश्य है परन्तु हमारी मातृभापा की कहावतो का अभी तक ऐसासग्रह न देखा गया जो उपयोगी साधारण और विवरणसहित हो इसीलिये आज यह लघु पुस्तक पाठक गणोके प्रति सादर समर्पण की जाती है । यदि हमारे मित्रगण इससे कुछभी आनन्द उठा सकेंगे तो मैं अपने परिश्रमको सफल समझूंगा ॥

अनुक्रमणिका.

इति विषयानुक्रमणिका समाप्ता ॥

श्रीः ।

कहावत कल्पद्रुम ।

सटीक ।

प्रथमकुसुम ।

हिन्दी ।

१ आप भला; तौ जगभला ॥ जब किसीकी अच्छी चाल चलन के कारण सर्व मनुष्य उससे अच्छा वर्ताव करते हैं तब लोग यह कहावत कहते हैं ॥

२ आवे न जावे, चतुर कहावे ॥ जब मनुष्य कोई काम कहींसे करके लाताहै और घरवाले उसे उस कामके करनेमें न्यूनता बताकर निन्दित करतेहैं अथवा जब कोई आदमी किसीकाममें कुछभी परिश्रम न करके चतुर बनना चाहताहै तब यह कहावत कहतेहैं ॥

३ आदमी जानिये बसे, सोना जानिये कसे ॥ जब कोई नया आदमी कहीं जाकर रहनेको स्थान चाहताहै तब लोग उसकी चालचलन के विषयमें यह कहावत कहतेहैं ॥

४ आबरू बचे तो जान जाना तुच्छहै॥प्रतिष्ठा रहते हुए किसी आदमीको क्लेश उठाना पड़े तब ऐसा कहतेहैं ॥

५ अपनी गलीमें कुत्ता शेर ॥ जब कोई निर्बल आदमी अपने अधिकारमें, या अवसर पाकर, निराधार बलवान्को सताताहै तब ऐसा कहतेहैं ॥

६ अपनी २ ढपली अपना २ राग ॥ जब प्रत्येक मनुष्य अपनी २ तानमें अलग २ मस्त रहतेहैं तब ऐसा कहा जाताहै ॥

७ अटका बनियाँ, देय उधार ॥ जब कोई आदमी किसी दूसरेको अपने मतलबके लिये कुछ देदेताहै यद्यपि देनेकी इच्छा नहींहै तब ऐसा कहतेहैं ॥

८ अपने मुंह मियाँ मिट्ठू ॥ जब कोई अपने मुंहसे अपनी बडीही प्रशंसा करताहै तब ऐसा कहतेहैं।

९ अपने मुंह धनावाई ॥ यहभी उपरोक्तानुसारहै

१० अटकल पच्ची डेढ सौ ॥ जब कोई बिना विचारे अटकलसे ऐसी बात कहताहै जो यथार्थमें सच निकल जाती है तब ऐसा कहतेहैं ॥

११ अपना २ कमाना, अपना २ खाना ॥ जब किसी समाज या कुटुम्बके आदमी मिलजुल कर नहीं रहते या काम नहीं करते बरन अलग २ वर्ताव करते तब ऐसा कहाजाताहै ॥

१२ अपना वही जो आवे काम ॥ जब कोई मनुष्य किसीके काम आताहै तो उसकी प्रशंसामें या जब कोई निजका मनुष्य काम पड़ेपर मुंह मोड़ देताहै तो उसकी यथार्थता जतानेको ऐसा कहतेहैं ॥

१३ आदमीरअन्तर, कोई हीरा कोई कंकर॥ जहाँ अच्छे बुरे बहुतसे आदमी एकत्र होतेहैं तहाँ

व्यक्ति विशेष प्रगट करनेको ऐसा कहा जाताहै ॥

१४ आपचले, तब चिट्ठी काहेकी ॥ जब कोई मनुष्य किसी जगह जानेका इरादा कियेहो उसी समय यदि कोई आकर कहै कि वहाँ को (जिस जगह जाने का उसका इरादा है) कुछ कहना तो नहीं है तब ऐसा कहते हैं अथवा जब कोई काम मनुष्य स्वतः कर सक्ता है और दूसरे की अनुमति लेने लगे तब भी ऐसा कहते हैं ॥

१५ अपना दाम खोटा परखैया को क्या दोष ॥ घरका आदमी तो अवगुणी है परंतु जब कोई दूसरा उसे प्रगट करता है तो वह क्रोधित होके लड़ने को तय्यार होता है तब ऐसा कहते हैं अथवा जब अपना कोई आदमी दूसरे का बिगाड़ कर देता है और दूसरा भी उसका बदला लेता है तब घरके लोग ऐसा कहने लगते हैं ॥

१६ आप मरे जग डूबा ॥ जब कोई अकेला

आदमी जिसका कोई सगा संबंधी नहीं है मरनप्राय होता है तब ऐसा कहता है ॥

१७ आगे नाथ न पीछे पड़ा ॥ (याने भैंसन तो नाकमें नथी है और न पीछे पड्डा याने बच्चा है) जब आदमी को किसी कामके करने में किसी भी प्रकारकी कुछ रोक नहीं होती तब ऐसा कहते हैं ॥

१८ आप करै सो काम. पल्ला होय सो दाम ॥ जब कोई काम दूसरे के बल या उधारके भरोसे बिगड़ जाता है तब ऐसा कहते हैं ॥

१९ आशा का मरै, निराशा का जिये ॥ जब कोई आदमी किसीके यहाँ किसी काम के लिये जाता है और कहता है कि भाई " हाँ, ना " कुछभी तो कहो और जब वह कुछ भी स्पष्ट उत्तर नहीं देता तब ऐसा कहते हैं ॥

२० आठ कनौजिया नौ चूल्हा॥ (कनौजिया ब्राह्मणोंमें इतना छूआ छूतका डर रहता है कि अपने

चूल्हे की आग तक दूसरे को नहीं देते) जब एक समूह या कुटुम्ब के आदमी बिखरकर अलग २ काम करते और आपसमें इतना बुराबर्ताव रखते हैं आपसमें लैन देन तक नहीं करते चाहे दूसरेसे करें तब ऐसा कहते हैं ॥

२१ अपना ठेंठ न देखें, दूसरे की फुली निहारैं ॥ (अपनी फूटी आंखका ध्यान न करके दूसरे की फूली देखना) जब कोई मनुष्य अपने बड़े दोषपर कुछ खयाल न करके दूसरे के तनिक दोषकी आलोचना करता तब ऐसा कहते हैं ॥

२२ अक्लमन्दको इशारा, मूर्ख को तमाचा जब जरासे कहनेसे बुद्धिमान् तो समझ जाता पर मूर्ख नहीं समझता तब ऐसा कहते हैं ॥

२३ आगे का गिरते ही पीछे का होशियार ॥ जब एक आदमी किसी काममें नुकसान उठाता है तब दूसरा आदमी उसका कारण जान फिर उसी काम

को करके लाभ उठाता है तब ऐसा कहते हैं ॥

२४ अधिका भलो न बोलनों अधिका भली न चुप ॥ जब आदमी कोई काम या बात अधिकतासे करता है तो अवश्य हानि उठाता है तब लोग ऐसा कहते हैं ॥

२५ आधीछोड आखीको नहीं जाना ॥ जब कोई हाथमेंकी थोडीप्राप्ति छोडकर बहुत प्राप्तिके लिये दौडताहै कि जिसके मिलनेकी पूरी आशानहीं है तो दोनों हाथसे जातेहैं तब ऐसा कहाजाताहै ॥

२६ आम खानेसे काम कि पेड गिननेसे ॥ जब कोई आदमी अपने मतलबकी लागूबातें छोडकर यहाँ वहाँकी बात करने लगता है तब ऐसा कहते हैं ॥

२७ आंधरोंमें कानेराजा ॥ जहाँ कहीं मूर्ख समाजमें कोई अल्पबुद्धिवाला आदमी बडी ज्ञानकी बातें अभिमान पूर्वक कहता है तो उसके लिये यह कहावत कही जातीहै ॥

२८ आंसू एक नहीं कलेजा टूक २॥ (१) जब किसी ज्ञानी आदमी पर अधिक दुख बीतताहै तो वह ऊपरी रोनागाना न करके हृदयमें अति शोकित होताहै (२) जब कोई आदमी दुखसे दुखीतो नहीं होता लोगोंको बतानेके लिये खाली बहाना करताहै तबभी ऐसा कहतेहैं॥

२९ अपकारके बदले उपकार॥ प्रथम तो लोग उपकारके बदले अपकार करते हैं अथवा उपकारके बदले उपकार करते ही करतेहैं पर जब सज्जन लोग अपकारके बदले उपकार करतेहैं तब यह कहा जाताहै॥

३० आंख बची माल दोस्तोंका॥ जब कपटी मित्र आंख बचाकर किसी बेवकूफका माल उड़ाते हैं तो यह कहावत कहीजातीहै॥

३१ आंखें हुईं चार तो जीमें आया प्यार॥ जब किसी प्रियजनसे कोई अप्रसन्न होजाताहै पर जब

साम्हना होताहै तो अवश्य चित्त नम्र होकर अप्रसन्न भाव चला जाताहै तब ऐसा कहतेहैं ॥

३२ आंखेंहुई ओट, तो जीमेंआया खोट ॥(१) जब प्रत्यक्षमें कोई आदमी प्रशंसा करता परंतु परोक्ष में निन्दा या बुरा करताहै तब कहतेहैं (२) जब आंखों के भुलाहिजेसे काम अच्छा नहींहोता तबभी ऐसा कहतेहैं ॥

३३ आंखका अन्धा गांठका पूरा ॥ जब कोई आदमी देखनेमें तो बेवकूफ सा पर अपने मतलबको होशयार होता तब ऐसा कहतेहैं ॥

३४ आंखों देखी मानिये कानों सुनी न मान॥ जब किसी विश्वासनीय पुरुषके मुहकी सुनी बातमें अन्तर पडजाताहै तब ऐसा कहतेहैं ॥

३५ आग लगै तबकूंआ खोदना ॥ किसीबात का प्रथमहीसे तो कुछ प्रबन्ध न करना पर जब सिरपर बीते तो फिर प्रबंध करनेको जो दौडताहै उसकेलिये ऐसा कहा जाताहै ॥

३६ आंख कानमें चार अंगुलका फर्क ॥ जब किसी सुनी और देखी हुई बातमें फर्क पडताहै तब ऐसा कहतेहैं ॥

३७ ईमान तो सब कुछ है॥ जब कोई आदमी ईमानदारीके साथ चलनेपर कुछ हानिउठाकर शोक करनेलगताहै तब ऐसा कहते हैं ॥

इत्तिफ़ाक़ वडी चीजहै ॥ यदि आदमीके पास कुछभी नहो पर सब आदमियोंसे मेल होतो ऐसा कहते हैं ॥

३९ इकलख पूत सवालखनाती } जब किसीके
तिस रावण घर दियान बाती } बुरेदिन आते और हरप्रकारकी क्षति दिनप्रति होतीजाती तब अथवा जब किसी आदमीकी नीयत बहुतही बिगडजातीहै तो उसकेलिये भी ऐसा कहतेहैं ॥

४० इश्कके शौकीनखर्चके कोता ॥ जब कोई आदमी नाम और आराम तो अधिक चाहताहै पर पैसा खर्च नहीं करता तब ऐसा कहते हैं ॥

४१ इस हाथदे इस हाथले ॥ जब कोई अच्छे कामका अच्छाफल और बुरेकामका बुरा फल तुरन्त पाताहै तब ऐसा कहतेहैं ॥

४२ उँगली पकडते पहुंचा पकडा ॥ थोडा सिल सिला जमाते २ जो अपना बडा काम साधलेतेहैं उनके विषयमें यह कहा जाताहै ॥

४३ ऊंटचढे कुत्ता काटे ॥ जब आदमी किसी कामको अत्यंत डरके साथ करताहो कि जिससे किसी प्रकारका दुःख पहुंचना असंभव है यदि तिस परभी दुःख मिले तब ऐसा कहतेहैं इसका अवसर विशेपकर उस समय आजाताहै जब किसीकोबुरे दिनोंमें विपरीत बुद्धि होजानेके कारण दुःख पहुंचताहै ॥

४४ ऊजड खेडा, नाम निवेडा ॥ जब किसी इकडा आदमीकी बातचीत कीजातीहै और कोई उसके विशेप निर्णयको निकालनेमें असमर्थ होजाताहै तब ऐसा कहताहै ॥

४५ उखलीमें सिर दिया, मूसलोंका क्याडर ॥ जब मनुष्य कोई काम (चाहे भला हो या बुरा) करनेपर उतारूहोताहै और दूसरे लोग उस काममें दुःखका डर बताने लगतेहैं तो वह धैर्यवान् यह कहावत काममें लाताहै ॥

४६ ऊंटकेमुंहमें जीरा ॥ जिसको इच्छा तो बहुतहै पर थोडामिले तब ऐसा कहते हैं ॥

४७ उतावला, सो बावला ॥ जब आदमी कोई काम जल्दी २ करके बिगाडदेता या हानि उठाताहै तब उसके लिये ऐसा कहतेहैं ॥

उतराघाटी, हुआमाटी ॥ (जबतक अन्न गलेसे नीचे नहीं उतरता तबतक वह भोजन कहाताहै परंतु जब गलेसे नीचे उतरा कि मट्टी होगया) जब कोई पदार्थ या मनुष्य कार्य होजाने पर निरर्थक होजाता तब उस पदार्थ वा मनुष्यके लिये ऐसा कहतेहैं

४९ उलटा चोर, कोतवाले डाटे ॥ जब कोई

मनुष्य अपराध करके उस मनुष्य पर जिसका अपराध किया गया है घुड़कनेलगे या उसे डरवावे तो ऐसा कहते हैं ॥

५० ऊंट वह, गधा कहे कितना पानी ॥ जब किसी कामको सामर्थ्यवान् पुरुष भी न करसके या करके हानि और निन्दा पावे और उसीको तुच्छ तथा असमर्थ मनुष्य करनेका साहस करे तोऐसा कहते हैं॥

५१ ऊंट दुल्हा, गद्धा प्रोहित ॥ जब किसी तुच्छ या नीचकी प्रशंसा वैसाही आदमी करे तब ऐसा कहते हैं ॥

५२ ऊंची दुकानका, फीका पकवान ॥ जिन लोगोंकी बड़ी तारीफ हो और उनका काम बिलकुल प्रशंसाके विरुद्ध होता है तब यह कहावत कहते हैं ॥

५३ एकतवेकी रोटी क्या छोटी क्या मोटी ॥ जब एकही कुटुम्बके या एकही पदार्थके हिस्से अलग २

होनेपर कोई आदमी एककी निन्दा और दूसरेकी प्रशं-
सा करे तब ऐसा कहा जाता है ॥

५४ एकान्त बासा, झगडा न झांसा ॥ जहाँ
दस आदमी होते वहाँ कुछ न कुछ गड़बड़ अवश्य होती
है उस समय या इकला मनुष्य अथवा एकान्त
वासी (साधु) इस कहावतको काममें लाते हैं ॥

५५ एकम्यानमें, दोतलवारें ॥ जब किसी
स्थानमें दोटेढे पुरुषोंके वास होनेका अवसर आने लग-
ता है तब यह कहावत कहीजाती है ॥

५६ एक बांबीमें दो सांप॥ उपरोक्त अनुसार है॥

५७ एकनभा छत्तीसरोगटाले ॥ (जब किसी
भीविषयमें अकेला " ना " कहदिया जाता है और
बहाना करनेकी आवश्यक्ता नहीं रहती) जब कोई
मनुष्य किसी बातपर " ना " कहदेता है तब ऐसा
कहते हैं ॥

५८ एकपंथ, दोकाज ॥ जब आदमी एक का-

मको जाताहो और उसमें दूसरे प्रकारका काम या लाभ होजाता है तब ऐसा कहते हैं ॥

५९ एकपर एक ग्यारह ॥ जिस संकट स्थानमें या आपत्ति समयमें एक आदमी को दूसरा आदमी सहायक मिलजावे तो उसे ग्यारह आदमियोंके बराबर होजाता है तब ऐसा कहते हैं ॥

६० एक२बात,नौ नौ हाथ ॥जब आदमी एक२ बातको घंटों तक घोलता है तो ऐसा कहा जाता है ॥

६१ एक हाथसे ताली नहीं बजती ॥ जब दो आदमियोंमें तकरार होती है और एक आदमी अपना दोषतो कुछभी नहीं बतलाता बरन दूसरेके मत्थे सब अपराध लगाता है तब लोग ऐसा कहने लगते हैं ॥

६२ ओछोंके पास बैठकर, सुघरोंकी पतजाय यदि दुर्जनकेसाथ सज्जनका संग होतो उसकी मान हानि होनेपर ऐसा कहते हैं ॥

६३ ओछेकी प्रीत, बालूकी भीत ॥ तुच्छ

आदमी जब तनिक कारणही से प्रीति तोड़ देताहै तब ऐसा कहतेहैं ॥

६४ औघट चले, चौपट गिरे ॥ जब कोई कार्य रीति विरुद्ध किया जाताहै तो अवश्य पूरी २ हानि होती है तब दूसरे लोग ऐसा कहतेहैं ॥

६५ औरतोंका फन्दा बुरा ॥ (इस संसारमें सज्जनोंने स्त्रियोंके लिये मायाकी पदवीदीहै यथार्थमें जब तक स्त्री नहीं मनुष्य हरप्रकार से बेफिक्र रहताहै स्त्री हुई कि अनेक प्रकारके सांसारिक कामोंकी चिन्तामें पड़कर मछलीकीनांई तड़पताहै जिनको स्त्री प्राप्त नहीं हुई वे उसे सुखदाई समझकर इच्छा करतेहैं तब सज्जन पुरुष यह यथार्थ कहावत कहतेहैं ॥

६६ अंधेके हाथ बटेर लगी॥ जो मनुष्य किसी कामके करनेमें बिलकुल असमर्थ हो या उसके हाथसे कार्य सुफल होनेकी किसीको किञ्चित् आशा भी नहो और यदि वह उस काममें सफलता प्राप्त करे तो ऐसा कहा जाताहै ॥

६७ अंधी पीसे कुत्ते खायँ॥ जब कोई काम अज्ञानी पुरुषसे बड़े परिश्रमके साथ किया हुआ अविवेकके कारण व्यर्थ जाताहै या किसी पुरुषार्थीका अधिक परिश्रमसे कमाया हुआ धन लुच्चोंके द्वारा उड़ाया जाताहै तब ऐसा कहतेहैं ॥

६८ अंधेर नगरी वेबूझ राजा॥ जिस देशमें हर-काम अविवेकतासे होता और भलाबुरा कोई नहीं पूछता तब ऐसा कहतेहैं ॥

६९ अंधेकी जोरूका खुदा रखवाला॥ जब किसी मनुष्यका धन योग्य प्रबन्धकर्ता के न होनेपर भी नाश नहीं होता तो लोग ऐसा कहतेहैं ॥

७० अंधेके आगे रोना, अपनी आँखें खोना॥ किसी वेदर्दीके आगे जब अपना दुःख वर्णन किया जाताहै और जब वह कुछ भी ध्यान नहीं देना तब ऐसा कहाजाता है ॥

७१ कांखमें लड़का, गांवमें टेर॥ जब पदार्थ

पास रक्खा हो और कोई यहां वहां ढूंढता फिरे तब ऐसा कहतेहैं ॥

७२ कामको वहां, खानेको गया ॥ जब कोई आदमी अपने प्रयोजनके लिये तो सेवाकरे पर दूसरेके कामको मुंह छिपावे तब ऐसा कहतेहैं ॥

७३ कमखर्च, बालानशीन॥जब कंजूस आदमी आदर पानेकी इच्छा करता या जो कम खर्च करके भी प्रशंसा पाताहै तब यह कहावत चारितार्थ होतीहै॥

७४ कहैं खेतकी, सुनैं खलियानकी ॥ जब बात कुछ और कही जावे और समझी कुछ औरही जावे तब ऐसा कहतेहैं ॥

७५ कंगालीमें गीला आटा ॥ जब आपत्तिके समय और भी कुछ आपत्ति आजावे तब यह कहावत कही जातीहै ॥

७६ कभी शक्कर घना, कभी मूठीयक चना॥ जब किसीको कभी तो अधिक प्राप्ति होजावे और कभी कुछभी नहो तब ऐसा कहतेहैं ॥

७७ कानी में आंखमें तुस ॥ जब कोई आदमी झूठा बहाना करके अपना दोष छिपाना चाहता है तब ऐसा कहते हैं ॥

७८ कहनेसे धोबी गधेपर नहीं चढ़ता ॥ आदमी जो काम सदैव करता है परंतु जब कहने पर नहीं करता तब ऐसा कहते हैं ॥

७९ ककडी के चोरको तलवार मारना॥अल्प अपराध पर जब भारी दंड दिया जाता है तब ऐसा कहते हैं ॥

८० कूर योगी, मौन साध ॥ (जिसको अच्छी बात चीत करना नहीं आता उसकी बडाई चुप रहनेमें है) जब कोई निर्बुद्धि बक२करके अपनी प्रतिष्ठा खोता है तब ऐसा कहते हैं ॥

८१ कुछ मूसल नहीं बदलाना ॥ (कहानी) किसी समय एक मुसाफिरने लुटेरों के भयसे मूसलमें अशर्फियां भरके और ऊपरसे बंद करके यात्रा आरंभ

कोई, रातके समय किसी गांवमें एक वुढियाके घर ठहरा, जब वह सो गया, तब उस वुढियाने यात्रीके मूसलको अच्छा देखकर अपना मूसल उसकी जगह वदलकर रख दिया । जब सवेरे मुसाफिर उठा तो जान पडा कि मूसल वदला गया है ॥ इसने भेद न खुलनेके भयसे कुछभी गुल न किया वरन वही वुढिया का मूसल लेकर चल दिया, थोडी दूरपर किसी गांवमें जाकर उसने कुछ अच्छे मूसल वनवाये, और फिर उसी गांवमें आकर रास्ते २ फिर कर कहने लगा कि जिसे पुराने मूसलसे नया मूसल वदलाना हो, लावे । इसी प्रकार कुछ मूसल उसने वदले, इतनेमें उस वुढि-याको भी यह हाल ज्ञात हुआ उसने भी यात्रीवाला मूसल जो कुछ पुरानासा था लाकर वदलाया, जव मुसाफिर को असली मूसल (जिसके लिये यह यत्न किया था) मिल गया तौ और २ लोगोंसे जो मूसल वदलाने को खडे थे कहा कि " अव हमैं मूसल

नहीं बदलाना) जब आदमी की गरज निकल जाती है तब पीछे कही जाती है ॥

८२ कलका योगी पांव तक जटा ॥ जब कोई कम उमरका आदमी पुराने ज़माने की गप्पें बढ़ २ कर मारता है तब ऐसा कहते हैं ॥

८३ कै कनभर, कै मनभर ॥ जब कोई पदार्थ इच्छासे बिलकुल थोड़ा या बहुत अधिक मिलता है तब ऐसा कहते हैं ॥

८४ काटे बाढ़ नाम तलवार का॥जब काम तो किसी और के द्वारा हो और प्रशंसा उससे संबंध रखने वाले किसी दूसरे की की जावे, तब ऐसा कहते हैं ॥

८५ काम प्यारा, चाम प्यारा नहीं ॥ जब कोई आदमी अपनी सुन्दरताके अभिमान में काम नहीं करता, तब ऐसा कहते हैं ॥ अथवा (देखो लोग चमड़े को छूनेसे घिन करते हैं पर जब उसीसे जूता, चाबुक, बाक्स आदि अच्छे २ उपयोगी

सामान बनते तो प्यारे लगते हैं तब भी ऐसा कहते हैं।

८६ कोयले की दलाली में काला हाथ ॥ जब बुरे काम के करने में बदनामी के सिवाय कुछ नहीं मिलता तब अथवा जब कोई काम करने में व्यर्थ परिश्रम जाता है और बदनामी मिलती है तो भी ऐसा कहते हैं ॥

८७ कंगाल काजी कौरा॥ (रोटीका टुकडा) में ॥ कैसी ही अच्छी बातें हो रही हों पर जब तुच्छ आदमी तुच्छही बातोंपर विशेष ध्यान देता है तब ऐसा कहते हैं ॥

८८ कहने से करना भला ॥ जब कोई काम कहने से तो आदमी नहीं करता पर फिर करता है तब अथवा बहुत बक न करके काम करना इस शिक्षाके लिये भी ऐसा कहते हैं ॥

८९ काम करेगी बेटी, सुखसे खावेगी रोटी ॥ परिश्रम करनेसे इच्छा पूर्ण होती और आनन्द मिलता है तब ऐसा कहतेहैं ॥

९० काजीजी दुबले क्यों शहरके अन्देशे ॥ जो आदमी अपना सोच न करके मुल्क भरकी चिन्ता करताहै उसके लिये यह कहावत कहतेहैं ॥

(किस्सा) किसी क्रोधी मुसल्मानने ईदके दिन हलाल करनेके लिये बकरा खरीद कर घरपर बांध रक्खा, दैवयोगसे ठीक ईदहीके दिन बकरा कहीं भाग गया मियां सा० मसजिद गयेथे बीबीने मियांके क्रोध से डरकर पहिले तो बकरेकी ढूंढ ढांढ़की परजब न मिला तो उनके आनेके पहिलेसे कुत्तेको हलाल करके उसका मांस पकाया, लड़के ने यह सब काम देख लिये पर चुप चाप रहा जब बाप खाना खाने बैठा तब लड़ केने यह कहावत कही)

९१ कहैं तो मा मारीजाय, नहीं तो बाप कुत्ता खाय ॥ कोई काम करनेमें भी या न करनेमेंभी जब दोनों ओर दुविधा होतो उस संकटकी दशामें ऐसा कहतेहैं ॥

९२ किसीका मुंह चले किसीका हाथ ॥ जब कोई किसीको बहुत गालियां देताहै तो दूसरा क्रोधित होकर उसे मार बैठताहै तब ऐसा कहते हैं ॥

९३ कटेसिर काहूका, बेटा सुधरे नाऊका ॥ जब किसीकी हानि होते हुए अपनेको लाभ हो तब ऐसा कहतेहैं ॥

९४ कोठीमें गुड फोडना ॥ जब बडा भारी कामभी ऐसे धीरजसे करताहै कि किसीको किञ्चित् भी सुधनहीं मिलने पाती तब ऐसा कहतेहैं ॥

९५ खट्टा खावे, मिट्ठेको ॥ जो लोग भलाईके लिये बुराई कहतेहैं या जिसमें प्रथम बुराई होकर परि-णाममें भलाई होती तबभी ऐसा कहते हैं ॥

९६ खुशामद ताजा रोजगार ॥ जब लोग वि-ना योग्यताके केवल चापलूसीसे लाभ उठातेहैं तब ऐसा कहा जाताहै ॥

९७ खर गुड एकही भाव ॥ जहाँ भले बुरे का कुछभी विचाराविचार नहीं वहां ऐसा कहतेहैं ॥

९८ खाली चना, बाजै घना ॥ जब कोई तुच्छ आदमी बड़ी २ बडप्पन की बातें करताहै तब ऐसा कहतेहैं ॥

९९ खाना और ऐंठना ॥ भोजन करलेना और कुछ काम न करके भी जब घरवालोंको कोई सताता है तब ऐसा कहतेहैं॥

१०० गाडर आनी ऊनको बैठी चरै कपास॥ जब कोई काम थोडे लाभके लिये किया जाता और उसमें बडी हानि होजातीहै तब ऐसा कहते हैं ॥

१०१ गाडीका नाम उखली ॥ कामके विरुद्द नाम होनेपर कहा जाताहै ॥

१०२ गईथी नमाज बख्शाने, रोजेगले पडे ॥ जब कोई आदमी सुख उपार्जनके लिये जावे और दुःख पावे तब ऐसा कहते हैं ॥

१०३ गयेथे गाडीकी बिन्तीको वाखर हार

आये ॥ जब थोडे लाभके लिये प्रयत्न करके बहुत हानि मिल तीहै तब ऐसा कहतेहैं ॥

१०४ गांव तेरा, नाम मेरा ॥ दूसरेका नाम होनेपर लाभ अपनेको हो तब ऐसा कहतेहैं ॥

१०५ गुडदेनेसे जो मरै, क्यों विप दीजे ताहि॥ जब अच्छी तरह काम निकले तो बुरीतरह से काम नहीं निकालना इस शिक्षाकेलिये ऐसा कहतेहैं ॥

१०६ गाल कटजाय, पर चावल न उगले ॥ जब आदमी अपनी हठपर जाकर कष्ट चाहे उठालेवे पर छोडता नहीं तब ऐसा कहतेहैं ॥

१०७ गये कटक, रहे अटक ॥ जब कोई काम आदमी कर रहाहै या करनेपर उतारू है परन्तु ऐसी कोई बाधा आपडे जिससे वह काम बन्द करनापडे तब ऐसा कहते हैं अथवा जब किसीको कामके लिये कहीं भेजतेहैं और वह बहुत देर लगाताहै तबभी ऐसा कहतेहैं ॥

१०८ गुरूगुड चेला शक्कर ॥ जब शिक्षकसे विद्यार्थी या बापसे बेटा बढचढ कर निकलताहै तब ऐसा कहतेहैं ॥

१०९ गौंनिकलगई, आंखबदल गई ॥ जब कोई आदमी अपना प्रयोजन सिद्ध होनेपर विरुद्ध होजाताहै तब ऐसा कहतेहैं ॥

११० गजभरलहँगा, नौगज पूंछ ॥ जब कोई आदमी आश्चर्य कारक और बेहूदा पहिनाव करताहै तब ऐसा कहतेहैं ॥

१११ गधासे जीतें ना, गधैयाके कान मरोडें॥ जब सबल आदमी कुछ अपराध करै तो उससे कुछ भी न कहकर उसके बदले उसके किसी निर्बल संबंधीको कोई सताताहै तब ऐसा कहतेहैं ॥

११२ गरीबकी लुगाई सब गांवकी भौजाई (भाबी)॥ गरीब और सीधे आदमीको बहुधा सब लोग सतातेहैं तब ऐसा कहाजाताहै ॥

११३ गँवारकी अकल सिरमें ॥ जब गंवार आदमी सीधी तरहसे तो नहीं वरन टेढी तरहसे वशमें आता तब ऐसा कहतेहैं ॥

११४ गरजताहै सो बरसता नहीं ॥ जब कोई आदमी बातें तो बहुत मारता पर कर कुछभी नहीं सक्ता तब ऐसा कहतेहैं ॥

११५ गप्पीका पूत गपाकडा ॥ झूठ बोलने वालेका लडका यदि उससे भी अधिक गप्पी होतो ऐसा कहतेहैं ॥

११६ गुरूगुरकावे, चेलाटरकावे ॥ जब किसी आदमीकी बुरीबातमें उसीका संबंधी सहायता करताहै तब ऐसा कहतेहैं ॥

११७ गरजवन्तको अकल नहीं ॥ जब कोई आदमी अपने प्रयोजनके लिये किसीका भला बुरा नहीं देखता तब ऐसा कहतेहैं ॥

११८ गधोंनेखाया खेत, पाप न पुन्य ॥ जब

अज्ञानी और कृतघ्न पुरुषोंमें व्यर्थ द्रव्य व्यय किया जाताहै तब ऐसा कहतेहैं ॥

११९ गंजीयार किसके, दम लगावे तिसके॥ जो जिसका साथी और समान गुणवाला होताहै उसीसे प्रीति करता तब ऐसा कहते हैं ॥

१२० गाडीकासुखगाडीभर, गाडीका दुख गाडीभर ॥ जब जिसकाममें आदमीको जितना सुख होताहै उसके बदले उतनाही दुख उठाना पडे तब ऐसा कहतेहैं ॥

१२१ गुरवेल (गिलोय) अरुनीमपरचढ़ी ॥ जब कोई आदमी स्वतः दुर्गुणीहो इतने पर दुर्गुणीही की संगति करै तब ऐसा कहतेहैं ॥

१२२ गोकुलसे मथुरा न्यारी ॥ जब प्रत्यक्षमें तो कोई आदमी मिलाहो पर अभ्यन्तर अलग हो तब ऐसा कहतेहैं ॥

१२३ घरका परसैया, अंधेरीरात ॥ जब तर-

फदारी करके निजके आदमीको दूसरोंकी अपेक्षा अधिक लाभ पहुंचाया जाताहै तब ऐसा कहते हैं ॥

१२४ घरसे खोवें, तो आंखें होवें ॥ जब आदमी पराया द्रव्य अन्धाधुन्ध और बेपीर होकर व्यय करताहै तब ऐसा कहाजाताहै ॥

१२५ घर आये पूजेनहीं, बांबा पूजन जायँ ॥ जब काम सहलतासे होताहो तब तो कोई उसे करे नहीं पर पीछेसे उसी कामको कठिन परिश्रम करके सिद्ध करनाचाहे तब ऐसा कहतेहैं ॥

१२६ घरतंग, बहू जबरजंग ॥ रहनेको जब छोटी जगहहो और रहने वाले अधिकहों तब अथवा निर्धन घरमें शाहखर्च औरत हो तबभी ऐसा कहते हैं॥

१२७ घर हानि, अरु लोगोंको हँसी ॥ अपनी हानि उठाकर जब दूसरोंको हँसी होती है तब ऐसा कहते हैं ॥

१२८ घरके घरहिंन समाय और लठीं गर

पाहुने ॥ जब किसीके घरमेंही इतने मनुष्य हों कि जिनका निर्वाह होना दुश्वार है तिसपर भी दूसरे लोग आजावें तब ऐसा कहते हैं ॥

१२९ घरमें धन, सिरपर ऋण ॥ जब कंजूस आदमी बहुत धन होनेपर भी यहां वहांका करजा रखताहै तब ऐसा कहते हैं ॥

१३० घड़ी भरकी बेशरमी, सब दिनका आराम ॥ जो काम अपन करनेमें असमर्थ हैं उसके लिये अकेला " ना " कहकर चुपरहने से यद्यपि थोड़ी देरके लिये उस मनुष्यको बुरा लगता है परंतु तकली-फसे बचाव होता है तब ऐसा कहते हैं ॥

१३१ घरखोवें अरु आस पास, तिनको नाम धर्म दास, ॥ जो लोग अपना कामही नहीं बरन दूस-रोंका कामभी बिगाड देते या बुरा करते और अपने तईं सज्जन बने फिरते हैं उनके लिये यह कहावत चरितार्थ होती है ॥

१३२ घरके पीरोंको तेलकी मिठाई ॥ जब बाहरके आदमीसे तो अच्छा वर्ताव किया जाता और घरके आदमियोंसे उनकी अपेक्षा बुरा तब ऐसा कहते हैं ॥

१३३ घरमें नहीं खानेको, अम्मा चली पीसनेको ॥ जब घरमें किसी चीजकी जो हमेशा रहना अवश्य हैं आवश्यक्ता हो और उसी समय लेनेको दौड़े तब ऐसा कहते हैं ॥

१३४ चार दिनकी चांदनी, फिर अँधेरी रात॥ जब कुछ दिन सुख होकर फिर दुख आजाता है तब अथवा जब कोई आदमी अच्छा वंसीला पाकर घमंड करने लगता है पर कुछ दिनमें दुःखी होजाता है तब भी लोग ऐसा कहने लगते हैं ॥

१३५ चाकरसे कूकर भला, जो सोवे अपनी नींद ॥ जब नौकर आठों पहर काम करते २ तंग होजाता है तब ऐसा कहता है ॥

१२६ चिकने मुंहको सभी चूमते हैं॥ बड़े आदमीकी हांमें हां जब सबलोग मिलाते तथा खुशा-मद करते हैं तब ऐसा कहा जाता है॥

१२७ चोरकी डाढ़ीमें तिनका॥ जिस मनुष्यमें कोई अवगुण हो यदि उसके सन्मुख उस अवगुणकी समालोचना कोई अपरिचित भी करे तो वह अपने ऊपर समझकर लड़नेको तय्यार होताहै. तब ऐसा कहतेहैं॥

१२८ चोर कामाल, चंडाळ खाय॥ (कहानी) चार चोर किसी जगहसे धन चुराकर लाये किसी गावँके वाहिर बैठकर उनने कहा कि भाई भूख लगी है कुछ मिठाई खावें ऐसा कहकर दो तो मिठाई लेने-गये॥ जो दो चोर शेष रहे उनने सोचा कि अपनेको जिन्दगीभर चोरी करते हुआ पर कंगालही रहे इससे आजका धन वहुतहै सो उन दोनोंको मिठाई

लातेही मारडालना चाहिये जिससे हम तुम दोनों आधा २ धन पावैं यहां तो यह विचार होरहाथा॥पर मिठाई लानेवालोंने इन्हीकी भांति सोचकर मिठाईमें कुछ लड्डू विप मिश्रित करदिये, जब वेदोनों मिठाई लेकर पहुंचे कि तलवारसे मारेगये फिर उन दोनोंने शान्तिचित्त होकर वह सब मिठाई खाई और विप प्रयोगके कारण मृत्युको प्राप्त हुए ॥ जब किसीनें इन चार आदमियोंको मरे देखकर गांवमें खबर दी तो भंगियोंको जलानेकी आज्ञादीगई तब भंगियोंने उनका सब माल असबाब आनन्द पूर्वक लिया जब कोई आदमी बेईमानी से द्रव्य उपार्जन करके उससे सुख प्राप्त नहीं करसक्ता वरन लुच्चे लफंगे खातेहैं तब ऐसा कहा जाता है ॥

१३९ चढै सो पडै ॥ आदमी जो काम सदैव करताहै उसमें कभी न कभी हानि अथवा कष्ट अवश्य होताहै तब अथवा जो आदमी बहुत बढताहै पर कभी

न कभी वह न्यून दशाको अवश्य प्राप्त होताहै तब ऐसा कहतेहैं ॥

१४० चाचा चोर भतीजा काजी ॥ जब कोई कामतो बुरा करे पर आपस वाला दूसरोंसे उस बुरे कामकी निन्दाके बदले प्रशंसा करे तो ऐसा कहते हैं॥

१४१ चोरहि चांदनी रात न भावे ॥ जो बात सबको प्रिय हो यदि उसीसे किसीका नुकसान होता हो और वह उसकी निन्दा करे तब ऐसा कहतेहैं ॥

१४२ चोर २ मौसेरे भाई ॥ एक झूठेकी बात को जब दूसरा पुष्ट करताहै तब ऐसा कहा जाता है ॥

१४३ चौबे गये छब्बे होनेको दुबे होआये ॥ (कोई दम्पति बच्चेके लिये उपाय करनेको कहीं गयेथे कि वहां जाने पर स्त्री ही मरगई तब अकेले रहगये) जब कोई आदमी लाभके लिये प्रयत्नशील हो और उल्टी हानि होजावे, तब ऐसा कहतेहैं ॥

१४४ चुका वायदा; कि दिखाया कायदा ॥

काम निकलनेके पीछे जब कोई आदमी बेमुरव्वतके साथ बर्ताव करता है तब ऐसा कहते हैं ॥

१४५ चोरकी स्त्री चुप चाप रोती ॥ जब कोई आदमी किसी अपराधमें दंडपाकर चुपचाप दुःखी होता और अपनी मान हानिके भयसे किसीपर प्रगट नहीं करता तब ऐसा कहते हैं ॥

√ १४६ चोर चोरीसे गया, तो क्या हेराफेरीसे भी ॥ (कोई खंगार साधू होगया पर उसका जाति स्वभाव नहींगया भला साधुओंके पास चोरी करनेको क्या था इसलिये इसको चैन न पड़े तब उसने तूंबी गटसट करदेने हीसे अपनी शान्ति करना ठहराया । जब साधु सवेरे उठते अपनी तूंबी किसी औरके पास तथा और की अपने पास पाते तब उन्होंने एक दिन मालूम करके उससे कहा तू ऐसा क्यों करता है तब उसने विनय की कि मेरा जाति स्वभाव यहीहै) जब आदमी किसी कुव्यसनका त्याग करदे पर उसकी टेवन

जावे और जब कभी कुछ चेष्टाभी उसके अनुकूल करे तब ऐसा कहतेहैं ॥

१४७ चिकने घडेका पानी ॥ जब किसीको बार २ शिक्षा करनेपर कुछ असर नहीं होता तब ऐसा कहते हैं ॥

१४८ चिडियेके शिकारमें शेरका सामान ॥ यद्यपि काम छोटाही करना हो तथापि जब सामान बडे काम करने का तय्यार कियाजावे तब ऐसा कहते हैं अथवा छोटा काम हो तब भी होशयारी बहुत रखने की शिक्षाके लिये भी ऐसा कहतेहैं ॥

१४९ चलनीमें गाय दुहें, कपाल दोष देयँ ॥ जो आदमी जान बूझकर तो बुरा काम करता और कहताहै कि हमारी तकदीर बुरीहै उसके लिये यह कहावत चरितार्थ होतीहै ॥

छोटा मुंह बडी बात ॥ जब किसी छोटे आदमीको बहुत बड़ा भेद प्रगट करनेका अवसर आता तब ऐसा कहता है ॥

√१८१ छड़ी लागे चट, विद्या आवे झट ॥ जब विद्यार्थी विना डरके पढ़ता नहीं तब उसका चित्त पढ़नेमें लगे इसलिये डर देनेके लिये ऐसा कहते हैं अथवा जब विद्यार्थी दंड देनेसे अच्छे पढ़ते हैं तब औरोंके उत्तेजनार्थ भी ऐसा कहते हैं ॥

१८२ जाकी लाठी, ताकी भैंस ॥ जिसका आतंक होता है उसके आधीनी लोग अवश्य उसके वशमें रहते हैं तब अथवा जब कोई मनुष्य जबरदस्ती से काम कर लेता है चाहे वह अयोग्यही हो तब ऐसा कहते हैं ॥

१८३ जाका कोड़ा, ताका घोड़ा ॥ इसका अर्थभी उपरोक्तानुसार है ॥

१८४ जबरदस्त का ठेंगा सिरपर ॥ जब कोई बलवान आदमी किसीसे बलात्कार अपनी आज्ञापा-लन कराता है तब ऐसा कहते हैं ॥

१८५ जोड़ू न जाता, खुदासे नाता ॥ जो

आदमी अकेला है अर्थात् भाई बंधु सम्बन्धी जिसके कोई नहीं उसके लिये लोग ऐसा कहते हैं ॥

१५६ जैसी करनी, तैसी भरनी ॥ सुचरित और धर्म सहित चलनेके लिये शिक्षा है ॥

१५७ जाके घरमें नौ सै गाय, सो क्या छांछ पराई खाय ॥ जिसके पास सर्वप्रकार की सामग्री उपस्थित है उसके लिये जब कोई कभी ऐसा कहने लगता है कि वह अमुक मनुष्य से अमुक पदार्थ लाया तब अथवा किसी सम्पत्तिवान का बडप्पन बताने को भी ऐसा कहते हैं ॥

१५८ जैसा देश, तैसा भेष ॥ जब कोई मनुष्य एक देशसे जाकर दूसरे देशमें जाकर रहने लगता है पर व्यवहार वहांके अनुसार नहीं करता तो बहुधा उसे नाम धराई तथा अडचन प्राप्त होती है उनके शिक्षार्थ ऐसा कहते हैं ॥

१५९ जैसा तेरा आव भाव, तैसा मेरा आशि

रवाद ॥ जब किसी आदमीके बुरे बर्तावके बदले बुराही बर्तावा किया जाता है और वह जब उलहना देने लगता है तब ऐसा कहते हैं ॥

१६० जबान सीरी, मुल्क गीरी ॥ जो लोग अच्छा बर्ताव अथवा बोल चाल से परदेशमें सुख पाते हैं उनके प्रशंसार्थ अथवा सब लोगोंके शिक्षार्थ ऐसा कहा जाता है ॥

१६१ जबान टेढ़ी, मुल्क बांका ॥ देशमें ठीक ही है पर परदेशमें जाकर जो अच्छी चाल नहीं चलता और दुःख उठाता है तब ऐसा कहते हैं ॥

१६२ जाकी घरमें माई, ताकी राम बनाई ॥ जब किसी आदमी का कहीं बसीला होता है और वह उसके द्वारा लाभ प्राप्त कर लेता है तब ऐसा कहते हैं

१६३ जब नटनी बांसपर चढ़ी, तब लाज काहेकी ॥ जो आदमी काम तो अतिही निन्दनीय करै पर मुंहके कहते शरमावे तब ऐसा कहते हैं ॥

१६४ जबर मारे रोने नदे ॥ जब जबरदस्त आदमी बलात्कार दूसरेसे काम करा लेना और उसको कहीं रोनेगाने भी नहीं देता अर्थात् झिडकता है तब ऐसा कहते हैं ॥

१६५ जेवरी जल गई, पर ऐंठ न गई ॥ जब कोई वज्र हृदय पुरुष बहुतप्रकार के दुःख देनेपर भी अपनी कुटिलता नहीं छोडता तब ऐसा कहते हैं ॥

१६६ जिसकी आंखनहीं, उसकी साखनहीं ॥ जिसने जो बात आंखसे नहीं देखी ऐसा ज्ञात होजाता है तो वह कितने ही सौगंध क्यों नखावे पर नहीं मानी जाती तब ऐसा कहतेहैं ॥

१६७ जन्मके दुखिया, सबसुख नाम ॥ जब दशा अथवा कर्मकी अपेक्षा विरुद्ध नाम होता तब तब ऐसा कहतेहैं ॥

१६८ जाके पांव न फटी बिवाँई, सो क्या जाने पीर पराई ॥ जब कोई आदमी दूसरेके दुःखसे

जिसका उसको कभी अनुभवभी नहीं हुआ कुछभी दुखी नहीं होता अथवा सहानुभूति प्रगट नहीं करता तब ऐसा कहतेहैं॥

१६९ जैसा बाप तैसा बेटा॥ जिस बीजसे जो पदार्थ उत्पन्न हुआहै उसका गुण जब बिना परीक्षा किये कहना हो तो ऐसा कहतेहैं अथवा जैसा बापका चालचलन आदि हो वैसाही बेटाकाभी हो तो उपमा देनेके लियेभी कहतेहैं॥

१७० जोरू किसकी, पास रक्खे तिसके॥ बुद्धिमानोंका वचनहै कि स्त्रीको सदैव अपनीही रक्षामें रखना चाहिये, नहीं तो कईप्रकार की हानि होतीहै इसी शिक्षाके लिये यह कहावतहै॥

१७१ जब तक सांसा, तब तक आशा॥ इस संसारमें जीवन तक सब साथीहै जब देह छूट-जाती तो मनुष्य निराश होजाते तब अथवा आशा एक ऐसी माया है कि जो जीवके अन्त समय तक

साथ रहती है इसको प्रगट करनेके लिये भी कहतेहैं॥

१७२ जानवरोंमें कौआ, आदमियोंमें नौआ॥ किसी व्यक्तिकी चालाकी प्रगट करनेको यह कहावत उदाहरण रूपहै ॥

१७३ जिसको कर, उसको डर ॥ जो आदमी सदैव भलाबुरा काम करताहै उसको वह डरताहै अथवा डरना चाहिये इसके प्रगट करनेको यह कहावत कही जातीहै ॥

१७४ जातका वैरी जात, काठका वैरीकाठ॥ (जब तक कुल्हाड़ीमें काठका बेंट नहीं लगाया जाता तब तक उसकी जाति याने लकड़ी नहीं कटती) जब किसी जातिका मनुष्य कुछ अपराध विरादरी संबंधमें करताहै तब जातिके लोग वैरीकी नाईं उसे दंडित करतेहैं तब ऐसा कहतेहैं ॥

१७५ जब तक जीना, तब तक सीना ॥ जब तक आदमी जीताहै उसे एक न एक सांसारिक काम लगाही रहता है तब लोग ऐसा कहतेहैं ॥

१७६ जगन्नाथकाभात, जगतपसारै हाथ ॥ जब किसी कार्यमें जो लोकविरुद्ध भी हो उसमें किसी प्रकार का परहेज न करके सब लोग धार्मिक कार्य समझकर करने लगतेहैं तब ऐसा कहाजाताहै ॥

१७७ जो करै लिखनेकी गलती, उसकी थैली होगी हलकी ॥ जो लिखनेमें असावधानी करके हानि उठातेहैं उनके शिक्षार्थ यह कहावत कही जातीहै

१७८ जागै सो पावै सोवै सो खोवै ॥ } आलसी मनुष्य सदैव व्यर्थ समय खोते और कुछभी लाभ नहीं उठाते परंतु जो निरालसीहैं वे उद्योग करके जब द्रव्योपार्जन करतेहैं तब दोनों प्रकारके मनुष्योंकी समालोचनार्थ यह कहावत कहतेहैं ॥

१७९ जिसकी तड़में लाडू, उसकी तड़में हम खुशामदी आदमी जिस तरफ दो पैसेकी आमदनी देखते उसी तरफ चापलूसी और लल्लोचप्पो करनेको पहुंच जाते, तब ऐसा कहा जाता है ॥

१८० जा विरियाना वा विरिया, गधे नो देइदे ॥ जब समय कुसमयका विचार न करके को आदमी अपना काम (जो उसके लिये करना अ भव है) करनेको कहता है तब ऐसा कहते हैं ॥

१८१ टेढी अंगुली, घीव न निकले ॥ ज सीधी तरहसे कोई काम नहीं निकलता वरन टेढेपन निकलता है तब ऐसा कहा जाता है ॥

१८२ टकामें टका, ढकामें ढका ॥ जब पै वालेके पास पैसा आता और दुःखीको दुःख अथ नुकसान पहुंचता है तब ऐसा कहते हैं ॥

१८३ टोपीकी इज्जत, पगडी गायब ॥ आ कल इस देशकी असली पोशाक पगडी बांधनेके बद लोग दूसरे देशकी पोशाक टोपी लगाना सीख गये इस लिये अथवा जब टोपी खोजाती या उसके पहि नेका व्यय करनेसे असमर्थ होते तब टोपीकी इज्जत करना पड़ती है तब ऐसा कहते हैं ॥

१८४ टांकीका घाव सहे तब ईश्वर ॥ (तकलीफ उठानेके पीछे लाभ होता है) जो लोग तकलीफ के डरसे अपना लाभ अथवा प्रतिष्ठा छोड़ते हैं तब उनके शिक्षार्थ ऐसा कहते हैं ॥

१८५ टुकड़े २ काम चलै, तो मिहनतकौन करै ॥ (आज कल बहुधा हट्टे कट्टे मनुष्य अपना धंधा समझके भीख मांगते हैं)जब ऐसे कुपात्र दरवाजे-पर आते हैं तब विवेकी दाता लोग उनको इस कहावत द्वारा लज्जित करके कहते हैं कि मजदूरी न करो॥

१८६ टूटीबांह गले पड़ी ॥ जब कोई अपना (पुरुषहो या अंग) जिसके द्वारा लाभकी आशा करतेथे निरर्थक होजावे और उससे दुःख उठाना पड़े तब ऐसा कहते हैं ॥

१८७ टांगकी जगह लँगड़ेकी लाठी ॥ जब कभी उपयोगी पदार्थ विगड़ जाता है और उसके बदले जिस प्रकार होसके दूसरेके द्वारा निर्वाह किया जावे तब ऐसा कहते हैं ॥

१८८ टर २ करना, सचकाझूठ बनाना ॥ दूसरे की सचबात जब किसीको झूठ बनाना होती है तब वह स्पष्ट उत्तर न देते हुए गटसट बातें करने लगता तब ऐसा कहते हैं ॥

१८९ टोड़र मल्ल कापेट, लोगोंकी दिल्लगी ॥ एक आदमीके साधारण किसी विषयमें जब दूसरोंकी हँसीका अवसर आता तब ऐसा कहते हैं ॥

१९० टाटपर पंचके बराबर, अमीर क्या गरीब ॥ जब किसी जगह जन समूह इकट्ठा होकर एकही आसनपर बैठता तब वहां बड़े छोटे का विचार नहीं रहता तब अथवा जाति संबंधी कार्योंमें जब ऐसा होता है तब भी ऐसा कहते हैं ॥

१९१ टूटे टांग कि होय निवेड़ा ॥ (कोई बीमार जिसकी टांगमें बहुत दर्दथा अस्पतालमें आया, वहां उसके घावपर बहुत तेज २ दवाइयां लगाई गई जिससे उसे और भी कष्ट हुआ किसी दिन डाक्टर

साहिबने आकर उसका हाल पूंछा तब उसने ऐसा कहा) किसी कष्टसे पार पानेके समय ऐसा कहते हैं॥

१९२ ठाट (छप्पर) काटकर लक्ष्मी ॥ (किसी मनुष्यने यह प्रण किया कि हम उद्योग कुछभी न करेंगे जब ईश्वरको देना होगा तो हमें ठाटकाटकर देगा, ऐसा प्रणठान मकानको बंदकर चुपचाप लेटरहा, दो तीन दिन पीछे पाखानेकी हाजत हुई गये तो दस्त न उतरा एक झाड़ को पकड़कर दस्त निकलनेका उपाय किया तो वह झाड जड़से उखड़ पडा जिसके नीचे दो घड़े सुवर्ण मुद्रासे भरे पड़े थे तब भी उसने उन्हें नहीं उठाया और प्रणपर रहकर जा लेटा, रात्रिके समय चोर आये, दीवार खोदने लगे तब उसने कहा कि घरमें कुछ नहीं है क्यों व्यर्थ परिश्रम करतेहो यदि धन चाहो तो पाखानेमें अमुक स्थानसे उठालाओ. जब वे वहां गये तो देखते क्या हैं कि उन घड़ोंमें सांप बिच्छू होगये

क्योंकि वह धन उनके भाग्य का न था तब उन्होंने क्रोधित होकर उन सांप विच्छूभरे घडोंको छप्पर काट-कर उसपर डाले. उसके भाग्यका वह धन था इस लिये गिरतेही स्वर्ण मुद्रा होगया तब उसने प्रणके अनुसार द्रव्य पाकर अपने घरमें रक्खा) जब कोई आदमी उद्यम तो कुछभी न करे पर लक्ष्मी उसके पास उपतके आवे तब ऐसा कहतेहैं ॥

१९३ डाकन बेटा बेटीदे, किले ॥ बुरे या हानि पहुंचानेका जिसका स्वभावहै ऐसे ओरसे कोई लाभकी आशा करे तब ऐसा कहवेहैं ॥

१९४ डेढ़ पहोली रमतिला, मिरजापुरकी हाट ॥ जब आदमी थोडा पदार्थ पास होनेपर उसके विषय बडे २ विचार अथवा शेखी कहताहै तब ऐसा कहते हैं ॥

१९५ डेढ़ पेड़ बकायन, मियाँ बागतले ॥ उपरोक्त अनुसार ॥

१९६ डारका चूका बन्दर, वातका चूका आदमी ॥ जब कोई आदमी ठीक अवसर परही चूक करके हानि उठाता तब ऐसा कहतेहैं ॥

१९७ ढालमें शेर ॥ जब कोई असंभवित वात होजातीहै तब ऐसा कहतेहैं ॥

१९८ ढाई चांवलकी खिचडी ॥ जब प्रत्येक मनुष्य अपनी २ इच्छानुसार पृथक् २ कार्य करतेहैं तब ऐसा कहतेहैं ॥

१९९ तलवार मारे एकवार, अहसान मारे वार २ ॥ जब कोई आदमी किसीपर कुछ उपकार करके पीछे अपना अहसान वार २ वताके उसे चपाता या दवाताहै तब ऐसा कहतेहैं ॥

२०० तुम्हारी डाढ़ी जलने दो, हमारा दिया वलने दो ॥ जब दूसरेका नुकसान होते हुए कोई अपना प्रयोजन गांठना चाहताहै तब ऐसा कहतेहैं ॥

२०१ तीनमें न तेरहमें, ढोल वजावें डेरमहें।

जो आदमी किसीसे कुछ प्रयोजन न रखके अपनेही रागमें मस्त रहताहै तब ऐसा कहतेहैं ॥

२०२ तीनोंपन एकसे नहीं जाते ॥ (आदमीके सब दिन एकसे नहीं निकलते) जो लोग सुखमें फूले नहीं समाते और दुःखमें हाय २ करते उनको शिक्षार्थ यह कहावतहै ॥

२०३ तीरथ गये तीनोंजने चित चंचल, मनचोर । रती-भर पाप घटौ नहीं सौमन लागा और } जो मनुष्य दुष्कर्मीहैं यदि वे तीर्थ या धर्मव्रत आदि भी करें पर उनकी कपट कतरनी नहीं छूटती तब ऐसा कहतेहैं ॥

२०४ तूं मेरी जिकरमें, मैं तेरी फिक्रमें ॥ जब कोई आदमी किसीकी बदनामी ही करता है तो दूसरा उसको भारी हानि पहुचानेका उद्योग करता है तब ऐसा कहतेहैं ॥

२०५ तीर नहीं तो तुक्का ॥ जिस कामको पूरा

करना चाहते हैं पर वह थोडा ही हो सक्ता है तव ऐसा कहते हैं ॥

२०६ तांवेकी मेख, तमाशा देख ॥ जव पैसा वाला आदमी सव कुछ संभव असंभव कर सक्ता है तव लोग ऐसा कहते हैं ॥

२०७ तिनका की ओट पहाड़ ॥ थोडे सहारे या छोटेके वलसे जव वडा काम सिद्ध होता तव ऐसा कहते हैं ॥

२०८ तेलीका तेल जले, मसालची का पेट फूले ॥ जिसका खर्च होता हो वह तो सोच न करे पर देखनेवाले या जिनके हाथ खर्च कराया जाता है वे फिक्र करें तव ऐसा कहते हैं ॥

२०९ तलवारके घावसे वचन का घाव वडा ॥ (तलवार का घाव पूर जाता पर कुवचन याद रहता है) कोई भी आदमी क्यों नहो उसे कुवचन वहुतही असह्य होता है यहां तक कि वातके पीछे जान तक देनेको तय्यार हो जाते तव ऐसा कहते हैं ॥

२१० तीन कौर भीतर, तब देवता पीतर ॥ जिस समय अति भूखा होता है तो उसे सिवाय भोजन करनेके दूसरा काम नहीं सूझता तब ऐसा कहा जाता है ॥

२११ तलवार किसकी, मारैगा तिसकी ॥ जिसके हाथ जो पदार्थ होता वह उसीके काम आता है पास न हो तो उसके किस कामकी, तब अथवा जो तलवार चलाना नहीं जानता हो उसीका तलवार सार्थक है जब लोग तलवार घरपर रख आते या बांधभी लेते पर चलाना नहीं जानते अथवा चलानेका साहस नहीं होता तब ऐसा कहते हैं ॥

२१२ तलवार ते देदी, परम्यान मरे मारें देंगे ॥ जब कोई आदमी असली प्रयोजनीय पदार्थ तो दे देवे और कुछभी खेद न करे परंतु तुच्छ पदार्थके देनेमें असमंजस करे अथवा दुःखी हो तब ऐसा कहते हैं ॥

२१३ थुर मोल अरु दुधार॥ जो आदमी थोडी कीमतमें भारी लाभकी और वहुमूल्य पदार्थ ले देनेको किसी से कहता है तो उसके उत्तरमें ऐसा कहा जाता है ॥

२१४ दैन कहो घोड़ो अव देत ३ ॥ जब कोई पदार्थ देनेको कह दिया जावे और फिर देनेका सदैव वादा किया जावे तव ऐसा कहते हैं (कहानी) किसी समय एक राजाने किसी कविको प्रसन्न होकर घोडा देनेके लिये कहा जव २ कवि घोडा मांगता तव २ यही उत्तर मिलता " हां देवेंगे " तव कविने यह कहावत कही ॥

२१५ दुधारू गायकी लात भली ॥ जिस मनुष्यसे लाभकी आशाहो अथवा काम निकलताहो यदि वह दुर्वचन भी कहे तो लोग सुनकर यह कहावत कहते हुए सहन करते हैं ॥

२१६ देखतकी धन नोंनी, रांटा करैं पौनी ॥

जो मनुष्य अपनी सुन्दरताके घमंडमें कुछ काम नहीं करता तो उसके धिक्कारनेको ऐसा कहते हैं ॥

२१७ दिलखोर खाना, सिरफोड लडना ॥ जब कोई मनुष्य आपसकी लडाई में क्रोधित होकर लंघन ठानताहै तो उसका क्रोध शान्ति करनेको ऐसा कहाजाताहै ॥

२१८ दूसरेकी आश, सदा निराश ॥ जो आदमी अपना बल कुछभी न होते हुए दूसरेके भरोसे कोई कार्य जो सामर्थ्यसे बाहिरहो करनेको ठानताहै पर पूरा नहीं पडता तब ऐसा कहतेहैं ॥

२१९ दिलजाने सो दिलदार ॥ (जो आदमी सदा दूसरेका दिल देखकर काम करता है वही मित्र है) जब कोई आदमी इच्छा विरुद्ध कामकरते हुए अपने को मित्र कहताहै तब ऐसा कहते हैं ॥

२२० दमडीकी हंडी गई, कुत्तेकी जात पहचानी ॥ (थोडा ही बातमें जाति कहीसे भली जुभई

जो कला खुल आई) जब थोडे ही नुकसानसे किसी-
का स्वभाव ज्ञात होजाताहै तब ऐसा कहा जाताहै ॥

२२१ दुनियाँ दोरंगीहै ॥ जब एकही काममें
कोई सुख और कोई दुःखमानता अथवाजब किसी
काममें लाभ होनेपर लोग प्रशंसा करते परन्तु उसीमें
हानि होनेपर निन्दा करते तब ऐसा कहा जाताहै ॥

२२२ देशी कुतिया विलायती बोल ॥ जो
लोग अपने देशका चाल चलन छोड दूसरे देशका
आचार व्यवहार विना योग्यताके अंगीकार करतेहैं
तब उनके लिये यह कहावत चरितार्थ होतीहै ॥

२२३ दूधका जला छांछ फूक २ कर पीता ॥
किसी काममें जब अधिक हानि अथवा दुःख होताहै
तो दूसरीवार छोटेसे काममें भी अधिक सावधानी
रक्खी जातीहै तब ऐसा कहतेहैं ॥

२२४ दिनभर चले, अढाई कोस ॥ जब कोई

काम रींग २ कर धीरे २ किया जाता हो तब ऐसा कहतेहैं ॥

२२५ दिन दूना, रात चौगुना॥ जब किसीकी दिन प्रति वे प्रमाण वृद्धि होतीहै तब ऐसा कहा जाताहै

२२६ दुविधामें दोनों गये, माया मिलीन राम जो आदमी दो जगह या दो कामोंमें चित्त रखता और एकभी पूरा नहीं पडता तब ऐसा कहते अथवा दो जगहसे मिलनेकी आशा रखते हुए को एकही स्थलसे प्राप्ति न हो तबभी ऐसा कहतेहैं ॥

२२७ दो घरका पाहुना भूखामरे ॥ उपरोक्ता नुसार ॥

२२८ दूबरी असदो अपाढ ॥ एक दुःख होते हुए दैवयोगसे दूसरा दुःख जब उपस्थित होता तब ऐ· सा कहा जाताहै ॥

२२९ दुकानपर वैठने नदे, अच्छा तौलना ॥ आदमी पास तो वैठने न दे और कोई उससे परिचय

करके लाभकी आशा करे तव ऐसा कहतेहैं ॥

२३० देश चोरी, परदेश भीख ॥ (चोरीमें विना जाने समझे सफलता नहीं होती इसी प्रकार परिचयके स्थानमें भीख मांगते लज्जा आतीहै) जव कोई आदमी वहुत दरिद्री और दुःखी होजाता है तव ऐसा कहता है ॥

२३१ दगाकिसीका सगा नहीं ॥ धोखेवाज लोग जव अपने कर्तव्य द्वारा दुःख पाते तव ऐसा कहा जाता है ॥ अथवा दगावाज लोग किसीको भी दगा करने से नहीं छोडते तवभी ऐसा कहतेहैं ॥

२३२ दमडीकी ठोकर टकाजुडाई ॥ थोडे कामके जव अधिक दाम मांगेजाते तव ऐसा कहतेहैं॥

२३३ दमडीकी मुर्गी नौटका चोंथाई ॥ जव किसी पदार्थका असंभवित अधिक मोल कहा जाता तव ऐसा कहतेहैं ॥

२३४ दिया तले अंधेरा ॥ जहां विशेष विचार

का स्थल हो यदि वहां अंधेर चले तब ऐसा कहते हैं॥

२३५ दुष्ट देवकी, धृष्ट पूजा ॥ जो आदमी दुष्ट हो जब वह सज्जनतासे प्रसन्न न होकर दुर्जनतासे प्रसन्न या ठीक हो तब ऐसा कहा जाताहै ॥

२३६ दे दिया, संगलिया ॥ कंजूसोंको दान देनेके शिक्षार्थ अथवा दानियोंकी प्रशंसाके लिये ऐसा कहतेहैं ॥

२३७ दमडीके तीन २ ॥ जो मनुष्य अत्यंत हलकी इज्जतका होताहै तो उसके बारेमें यह कहावत कही जातीहै ॥

२३८ दया धर्म नहिं तनमें
मुखडा क्या देखे दर्पणमें ॥ } जो लोग दया धर्मको छोड केवल अहंकार और भोग विलासमें मस्त रहते उनके शिक्षार्थ अथवा जो बुरा करके भला फल चाहते उनके उपहासार्थ यह कहावत कही जातीहै ॥

२३९ धोबीका कुत्ता, घर का न घाटका ॥

जो आदमी दो स्थानका रहनेवाला होकर किसी समय भी आरामनहीं पाता तब ऐसा कहतेहैं ॥

२४० धीरासो, गंभीरा ॥ जब कोई आदमी उतावलीसे काम बिगाडलेता तो उसके शिक्षार्थ अथवा जो धीरजसे काम सुधार लेताहै उसके प्रशंसार्थ ऐसा कहतेहैं ॥

२४१ धाके चलौ, न गिर पडौ ॥ जो लोग अधिक उतावली करके दुःख और हानि उठाते उनके शिक्षार्थ यह कहावत है ॥

२४२ नेकीका बदला बदी ॥ बहुधा लोग जब भलाईके बदले बुराई करते हैं तब ऐसा कहा जाता है॥

२४३ नये २ हाकिम नई २ बातें ॥ जब एक हाकिमकी जगह दूसरा आता है तो बहुधा ऐसे २ नये कायदे जारी करता है जो पहिलेके विरुद्ध होकर सर्व साधारणको दुःखदायी होते हैं ॥ तब ऐसा कहा जाता है ॥

२४४ नाक कटी परहठ न हटी ॥ जब हठीले आदमी चाहे कितनाही दुःख और हानि सहलेते पर अपनीटेव नहीं छोड़ते तब ऐसा कहा जाता है ॥

२४५ नाच न आवे अंगन टेढा ॥ किसी कामके करनेकी युक्ति तथा साधन ज्ञात न होते हुए सामानको दोष दियाजाता है तब ऐसा कहतेहैं ॥

२४६ नकटेकी नाक कटी, सवागज और वढी ॥ जो आदमी निर्लज्जहैं वे अपमान होनेपर भी कुछ ध्यान न करके अपनी चालको दिनप्रति वृद्धि देते जातेहैं तब ऐसा कहा जाताहै ॥

२४७ नाँगी भली कि मूसळ आडे ॥ बिल-कुल न होनेकी अपेक्षा जब थोडाही होता है तब ऐसा कहतेहैं ॥

२४८ नाम बडे दर्शन थोडे ॥ जिसकी परोक्षमें अधिक प्रशंसा सुनी जावे पर प्रत्यक्षमें कुछ भी न हो तब ऐसा कहाजाताहै ॥

२८९ नाम पहाडखां, बोले तवर्चां॥ जिसके नामसे वडप्पन प्रगट हो परकाम करनेमें नपुंसक हो तब ऐसा कहतेहैं ॥

२९० नेकी कर दरियामें डाल॥ जब किसीपर कुछ उपकार करना तो फिर कभी मुंहपर न लाना जो लोग अपने किये उपकारको वार २ कहतेहैं उनके शिक्षार्थ यह कहावतहै ॥

२९१ लाक नाँगिगले हमेल ॥ जिस वस्तुकी आवश्यक्ता हो उसकी इच्छा न करतेहुए अनावश्यक पदार्थ चाहनेपर ऐसा कहा जाताहै ॥

२९२ नाईकी वरातमें सभी ठाकुर ॥ (नाई, सबकी वरातमें कमीनी का काम करतेहैं पर उनकी वारातमें कमीनीका काम कौन करे) जहां सब आदमी बराबरीके हों वहां निकृष्ट अथवा परिश्रमका कार्य आपडे और कोईभी न करे तब ऐसा कहतेहैं ॥

२९३ न नव नगद न तेरह उधार ॥ जब काम

सफाईसे करताहै और कोई उसमें घांदा करताहो तो उसे समझानेको ऐसा कहतेहैं ॥

२५४ नासी वनियाँ कमाखाय, नासीचोर मा-राजाय ॥ जो अच्छे काममें वढ़ चढ़कर सफलता पाता है वह धन और वडप्पन पाता पर जो बुरे काम में वढ्चढ़ कर होता वह जब भारी हानि और दुःख पाता है तब यह कहावत कही जाती है ॥

२५५ नया नव गंडा, पुराना दस गंडा ॥ जहां नये आदमीकी अपेक्षा पुराना पुरानेकी कम कदर होजाती है यद्यपि दोनों एकसेहों तब ऐसा कहते हैं ॥

२५६ नौकी लकड़ी, नव्वै खर्च ॥ जब अल्प-मूल्यके पदार्थके लिये आदमी अपनी अज्ञानतासे वहुत सा धन व्यय कर देताहै तब ऐसा कहते हैं ॥

२५७ नसीव वरका खेत भूत जोतताहै ॥ जब किसी भाग्यशाली का काम सवलोग विना कहे स्वय मेव करनेको तत्पर होजाते या कोई काम पूर्व पुन्योदय से स्वयमेव होजाता तब ऐसा कहते हैं ॥

२५८ नाईके बाल आगे आवेंगे ॥ जो काम होरहाहै और उसका सामान्य परिणाम पूंछे तो लोग ऐसा कहतेहैं ॥

२५९ नाक दबानेसे मुंह खुलताहै ॥ जब कोई काम कराना हो तो बिना जबरदस्तीके नहीं होता और जब जब जबरदस्तीहीसे होजाता तब अथवा जब एकके सतानेसे दूसरेके द्वारा काम निकलताहै तब ऐसा कहतेहैं ॥

२६० नाकसे नथीया बड़ी ॥ जब अवयवकी अपेक्षा गहना इतना वजनदारहो जो देखनेमें भद्दा और दुःखदायी हो तब ऐसा कहतेहैं ॥

२६१ नाक काटके दुशालेसे पोंछना ॥ किसी मनुष्यका अपयश करके पीछे माफी माँगी जावे सो प्रसन्न करनेको लल्लोचप्पो कीजावे तब ऐसा कहा जाताहै ॥

२६२ परमुई सासू, आँखों आये आंसू ॥

जिसने जो दुःख कभी नहीं देखा और इकदम किसी दूसरेकाभी दुःख देखे तो अपने पर ऐसा दुःख पडेगा ऐसा विचार करके दुःखी होते तब ऐसा कहतेहैं ॥

२६३ परमुई सासू॥आसों आये आंसू ॥ जब दुःखपडे तब तो शोक न किया जाय पर बहुत दिनों पीछे केवल दूसरोंके बतानेको शोकप्रगट किया जाय तब ऐसा कहते हैं ॥

२६४ पूतके लक्षण पालने ॥ जब किसीके कुलक्षण या सुलक्षण अथवा अच्छा या बुरा नतीजा जब आरंभहीसे ज्ञात होताहै तब ऐसा कहतेहैं ॥

२६५ पड़िया मोल, भैंसरुगौना ॥ जब थोडे मूल्यका पदार्थ लेकर अधिक मोलकी वस्तु रुगौना (मुफ्तमें) मांगे में चाहे तब ऐसा कहतेहैं ॥

२६६ पढै न लिखै, नाम विद्याधर ॥ योग्यता अथवा करतूतिके विरुद्ध नाम होनेपर ऐसा कहा जाताहै

२६७ पांडेही पछतायँगे, सूखे चने खायँगे ॥

जब बहुत निहोरा करनेपर आदमी नहीं मानता और हठके कारण दुःख पाताहै तब ऐसा कहतेहैं ॥

२६८ पानी पीकर, जाति पूंछना ॥ कामहो चुकनेपर फिर जब विचाराविचार किया जाताहै तब ऐसा कहतेहैं ॥

२६९ पांच उँगली बराबरँ नहीं होतीं ॥ (इस संसारमें एक पंक्तिके पदार्थ वा मनुष्य एक समान नहीं होते) जब एक जातिके दो पदार्थोंमें किसी प्रकारकी न्यूनाधिक्यताका दोष आरोपण किया जाता है तब ऐसा कहतेहैं ॥

२७० पराई नौकरी सांप खिलानेके बराबरहै। जब कभी दूसरेकी नौकरीमें कुछभी असावधानी होतीहै और वह अप्रसन्न होता अथवा दंड देताहै तब ऐसा कहाजाताहै ॥

२७१ पांच सातकीलाकड़ी, एक जनेका बोझ ॥ किसी बडे कामको जब दसपांच तुच्छ आद-

मीभी एकत्र होकर करडालतेहैं तब ऐसा कहतेहैं ॥

२७२ पढ़ें पारसी बेंचें तेल ॥ जब उद्योगतो बड़प्पन पानेका कियाजावे और भाग्यवश निन्दित कार्य करनापड़े तब ऐसा कहतेहैं ॥

२७३ पानीमें रहकर मगर से वैर ॥ जिस आदमीसे सदैव कामपड़े उससेही वैर करके कोई निर्वाह करना चाहे तो सदैव हानि उठानी पड़ती तब ऐसा कहतेहैं ॥

२७४ पराई हँसी, गुड़से मीठी ॥ दूसरेकी हंसी करनेमें पैसा खर्च नहीं करना पड़ता यही कारण है कि सहजहीमें सब लोग दूसरेकी हँसी करनेको तय्यार होजातेहैं तब ऐसा कहा जाताहै ॥

२७५ पांसा पड़ै सो दाव ॥ जैसा भाग्यवशात् आदमीपर बीतताहै तैसाही भुगतना पड़ताहै तब यह कहावत कहतेहैं ॥

२७६ पचै सो खाना, रुचै सो बोलना ॥ हरएक बात या काम योग्य करनेके लिये शिक्षाहै ॥

२७७ पंचोंके मुख परमेश्वर ॥ जहां पांच सत्यवादी इकट्ठे होकर निर्णय करतेहैं वहां न्यायही होताहै तब यह कहावत कही जातीहै ॥

२७८ फूसका तापना, उधारका खाना॥ (इन दोनोंमें बरकत नहीं होती) जो लोग ऋण निकालकर गुजर करतेहैं उनके शिक्षार्थ यह कहावत है ॥

२७९ फूहर चालै, सब घर हालै ॥ अज्ञानी और बेहूदा लोग जब कोई काम करते तो उसमें इतनी गड बड मचा देतेहैं कि दूरतक प्रगट होजाताहै तब ऐसा कहतेहैं ॥

२८० फतह खुदाके हाथ, मार किये जाओ ॥ पस्त हिम्मतको साहस बँधानेके लिये यह कहावत कहतेहैं ॥

२८१ बाप ओझा मा डायन, बेटी बेटा सबै खायन ॥ जिस घरमें मा और बाप दोनों संतानको त्रास देनेमें एकसे एक बढचढ़कर हों तब ऐसा कहतैं

२८२ बावले गांवमें ऊंट आया, लोगोंने जाना परमेश्वर आया ॥ जहां कहीं गाँवड़ेके अज्ञानी लोग कोई साधारण पदार्थ देखकर उसको बडा और आश्चर्य कारक समझते तब ऐसा कहाजाताहै ॥

२८३ बासी बचै न कुत्ते खायँ ॥ जो काम परिमितितासे किया जावे और पीछे आधिक्यताकी आवश्यक्ता आपड़े तब अथवा कंगाल आदमीसे जिसके खानेकेबाद रोटीका टुकड़ाभी नहीं बचता कोई मांगने आवे तब भी वह ऐसा कहताहै ॥

२८४ वक्तपड़े बांका, तो गधेसे कहिये काका जब अपना काम अटकता तो तुच्छ आदमीको बडप्पन देकर उसके साम्हनेभी दीनता करनी पडती है तब ऐसा कहा जाताहै ॥

२८५ बापराज खाये न पान, दांत निकालें निकले प्राण ॥ जब कोई कंजूस आदमी जिसने कभी कोई करतूत न की हो और बडी २ बाते मारे तब ऐसा कहते हैं ॥

२८६ वनमें मोर नाची, किसने जानी ॥ जब कोई महान्‌व आश्चर्य कारक कार्य घर व गांव छोडकर बाहिर किया जावे पर घर या गांवमें कभी कुछभी करतव्य न किया हो तब ऐसा कहा जाताहै ॥

२८७ बाप भलौ ना भैया, सबसे भलौ रुपैया आजकल क्या सदैवसे धनके पीछे भाई बंधु कुटुम्बमें बिगाड होताहै और जब धनके लिये संबंध पर ध्यान नहीं करके तकरारकीजातीहै तब ऐसा कहतेहैं ॥

२८८ बेदर्द कसाई, ना जाने पीर पराई ॥ जो लोग सदैव दुष्ट करते रहतेहैं जब वे किसीपर कुछभी दया न करके दुष्टतासे भरा हुआ बर्ताव करतेहैं तब ऐसा कहाजाताहै ॥

२८९ बांझस्त्री, प्रसूतीका दुःख नहीं जानती॥ जो दुःख किसीने देखो सुनाभी नहीं वह उसकी पीडा को सुनकर वा देखकर सहज समझती है तब ऐसा कहते हैं ॥

२९० बैलन कूदा, कूदी गौन ॥ जिससे कोई मर्म भेदी वचन कहाजावे वह कुछभी ध्यानमें न लावे वरन दूसरा चिढ़ पडे तब ऐसा कहतेंहैं ॥

२९१ बाप न मारी मेंडकी, बेटा तीरन्दाज ॥ बाप जब कायरताके काम करता हो और बेटा बहादुरीकी बातें करे तब ऐसा कहाजाताहै ॥

२९२ बुड्ढीघोड़ी लाल लगाम ॥ जो काम जिस अवसरका है उसपर न करके कुअवसरपर कियाजावे तब अथवा कुरूप शरीर होनेपर अधिक शृंगार किया जाताहै तब भी ऐसा कहते हैं ॥

२९३ वक्त भूलता, परबात नहीं ॥ आपत्तिके समय कोई कठोर वचन कहै और पीछे दैवयोगसे आपत्ति चली जावे तो आपत्ति स्मरण न होके जब वह कुवचन स्मरण आताहै तब ऐसा कहा जाताहै॥

२९४ बड़ेमियां सो बड़े मियां, छोटे मियां सो शुभान अल्ला ॥ जब जेठेकी अपेक्षा छोटा भाई

नष्टता व श्रेष्ठतामें बढकर हो तब ऐसा कहतेहैं ॥

२९५ बडे बोलका सिरनीचा ॥ जो लोग लंबी चौडी शेखी मारतेहैं उसे अवश्य लज्जा उठाना पडतीहै तब ऐसा कहा जाताहै ॥

२९६ बैठे से बेगार भली ॥ एक मनुष्य निष्काम बैठा रहताहो और दूसरा मनुष्य कुछ भी काम करताहो यद्यपि उससे लाभकी आशा तो नहीं पर उसको अभ्यास तो अवश्य बना रहता है इसलिये प्रथम मनुष्यकी निन्दामें और दूसरेके उत्तेजनाके लिये यह कहा जाता है ॥

२९७ बिल्लीका खेल चूहों की मौत ॥
हाड़ियाने मनहस वने दंडकान जीवजाया ॥
एक आदमीके आनन्दमें जब दूसरेको मरण प्रायः दुःख पहुंचेया पहुंचनेका संदेह होतो ऐसा कहा जाता है ॥

२९८ बारह हाथकी काकड़ी तेरह हाथका बीज ॥ जब कोई झूठा अतिही असंभव गप्पें मारें तब ऐसा कहते हैं ॥

२९९ बानियांसे सयानो, सो दिमानो ॥ (बानियां हरएक कार्य पूर्वापर विचारके बहुत साव-धानीसे करता है) जब कोई अपनी चतुराई प्रगट करनेके लिये बनियेको बेवूकूफ बनाता है तब ऐसा कहते हैं ॥

३०० बिछौना देख, पैर फैलाना ॥ अपनी आमदनीके भीतर व्यय करनेके शिक्षार्थ यह कहा वत कहते हैं ॥

३०१ बापसे बेटा सवाई ॥ जब बापसे बेटा किसीभी बातमें बढ़ चढ़ कर होता है तब ऐसा कहा-जाता है ॥

३०२ बांधे लंगोटी, नाम पीताम्बर दास ॥ कुछभी पास न होनेपर पर जो बड़प्पनका नाम रक्खे तब ऐसा कहते हैं ॥

३०३ बन्दर क्या जाने अदरखका स्वाद ॥

जब कोई आदमी किसी पदार्थके स्वादसे बिलकुल अनजान हो तब ऐसा कहते हैं ॥

३०४ बाप मरा घर बेटा हुआ, उसकाटोटा उसमें गया ॥ जब किसीको एक तरफसे हानि और दूसरी तरफसे लाभहो तब ऐसा कहा जाता है ॥

३०५ बड़े बकुलाभक्त ॥ जो आदमी ऊपरसे तो बडीही सज्जनताकी बातेंमारे पर अंतरमें दुष्ट हो तब ऐसा कहा जाता है ॥

३०६ बादलदेख पोतला फोड़मा ॥ प्राप्तिके आशाके भरोसेही अपने पासका द्रव्य जो व्यय कर देता है और दुःखी होता है तो उसके लिये ऐसा कहते हैं ॥

३०७ बादल फटे तब कहां तक थकैला ॥ जब चारों ओरसे अप्रमाण आपत्ति व हानि आती है और कोई उसके दूर करनेका उपाय नहीं सूझता तब ऐसा कहते हैं ॥

३०८ मौजीकी थैली, देवरा सराफी करै ॥ जब आदमी दूसरेके काममें अपना नाम चलाता है तब ऐसा कहते हैं ॥

३०९ भैंसके आगे भागवत, मरैं २ रोंथाय ॥ अज्ञानीके साम्हने अच्छे २ उपदेशोंका फल निष्फल होता तब ऐसा कहते हैं ॥

३१० भैंसबडी, कै अक्कल ॥ जो लोग अकल को तुच्छ समझके धन बड़ा समझते हैं उनके भ्रम शोधनार्थ अथवा छोटे २ बालकोंकी बुद्धि जांचनेके लियेभी ऐसा कहते हैं ॥

३११ भोलेका रामदाता ॥ जब किसी सीधे आदमीको भाग्यवश सर्व प्रकारके सुख प्राप्त होते हैं तब ऐसा कहा जाता है ॥

३१२ भूतोंकेघर बेटाबेटी ॥ जिसके पास किसी पदार्थका होना निपट असंभव हो और तिसपर कोई मांगे तब ऐसा कहतेहैं ॥

३१३ भूतोंकेघर बराई ॥ पूर्वोक्तानुसार ॥

३१४ भीखमांगे, आंखदिखावे ॥ जब कोई आदमी जबरदस्ती करके किसीसे कोई पदार्थ मांगे तब ऐसा कहतेहैं ॥

३१५ भेडिया धसान ॥ जब कोई पद्धति जो अच्छी हो या बुरी आगेके आदमीने नहीं मालूम किस प्रयोजनसे चलाई हो और उसीकी देखादेखी सब आदमी विचाराविचार रहित होकर चलें तब ऐसा कहते हैं ॥

३१६ भजेगा, उसका ईश्वर ॥ जो जिस्पर विश्वास करके भरोसे रहताहै वह विश्वासके अनुसार अवश्य फलदेताहै और जो विश्वासनहीं करते वह उनकी सिद्धि भी नहीं होती इन दोनों दशाओंमें यह कहावत कहीजातीहै ॥

३१७ भरीमुदी, सवालाखकी ॥ अप्रगट पदा· र्थका जब कोई प्रमाण नहीं करसक्ता तब ऐसा कहतेहैं

३१८ भय विन, प्रीति नहीं ॥ (हरएक काम भयसे सुधरता अथवा भयके कारण लोग प्रीत भी करतेहैं) जब कोई आदमी निरंकुश होनेके कारण अप्रेम भावसे कार्य करता तब ऐसा कहाजाताहै ॥

३१९ भात छोडना पर साथ नहीं ॥ सुखको त्यागना अच्छा है पर साथ छोडना नहीं इसशिक्षाके लिये अथवा जो लोग जीभके लोलुपतासे साथ अथवा मेल तोडदेतेहैं उनके शिक्षार्थ यह कहावत कहतेहैं ॥

३२० भूखा बंगाली भात २ ॥ जो पदार्थ मनुष्य बहुतायतसे और सदैव खाता रहता है उसका अभ्यास पडजाताहै जब भूख लगती या आवश्यक्ता पडती तो वही मांग आता तब ऐसा कहतेहैं ॥

३२१ भागे भूतकी मूंछ ही सही॥जिससे कुछ भी मिलनेकी आशा न हो यदि थोडाभी मिलजावे या लेयावें तब ऐसा कहतेहैं ॥

३२२ मुंहदेखकर बातेंकरना ॥ जो लोग अपनी

योग्यताके विरुद्ध बात चीत करताहै उसके लिये ऐसा कहाजाताहै ॥

३२३ मनुष्य देखकर बातेंकरना ॥ जो लोग दूसरेकी योग्यतापर ध्यान न देकर मनमाना बकने लगते हैं तब ऐसा कहतेहैं ॥

३२४ मच्छरमारके ऐंठासिंह ॥ जब कोइ महानपुरुष छोटा काम करके ऐंठता या फूलताहै उसके लिये यह कहावत कहतेहैं ॥

३२५ मुंहदेखकर थप्पड मारना ॥ जब किसीको योग्यताके बाहिर दंड या वर्ताव किया जाताहै तब ऐसा कहतेहैं ॥

३२६ मूंड मुडाये मगरौ } जोकाम सर्व सा-
गांव कौन २ कालीजे नाम } धारण करतेहों
और एक व्यक्तिपर संदेह कियाजावे तो अथवा जब एकव्यक्तिका नामपूंछा जावे तबभी ऐसा कहतेहैं ॥

३२७ रान चंगा तो कठौतीमें गंगा ॥ जो

लोग योगके लिये धर्म काम करते हैं उनसे शुद्ध हृदय वाला जो धर्म काम करनेकी सामर्थ्य नहीं रखता ऐसा कहता अथवा जब संपत्तिवान पुरुष हरएक कामका सहल समझ अपनेको घरहीमे सर्व सुखी मानते हैं तब भी ऐसा कहा जाताहै ॥

३२८ मुंड मुंडाई तभीओलेपडे ॥ कोई काम अवकाश पाकर आरामके लिये कियाजावे दैवात इस प्रकारका दुःख उपस्थित हो कि उस कामके कारण अधिक दुःखदाई होवे तब ऐसा कहतेहैं ॥

३२९ मूर्ख वैद्यकी मात्रा, वैकुंठ की यात्रा ॥ जो मूर्ख वैद्य है उनसे कोई औषधि कराके जब आरोग्य होनेके बदले अधिक रुज ग्रस्त हो जाता है तब लोग ऐसा कहते हैं ॥

३३० मानो तो देव, नहीं तो पत्थर ॥ (इस संसारमें जितना कुछ संबन्ध है वह सब मानने से है विना मान्य बुद्धिके सब निरर्थक हैं जो कहते हैं कि

हम ईश्वरके भक्त हैं पर विश्वास नहीं रखते उनके लिये ऐसा कहते हैं अथवा गुरु व्यक्तिमें जब पूज्य बुद्धि नहीं होती तब भी ऐसा कहा जाता है ॥

३३१ मुंडा योगी, और पिसी दवा ॥ जब किसी मिश्रित पदार्थ की ठीक पहिचान नहीं हो सक्ती तब ऐसा कहा जाता है ॥

३३२ मिजाज बादशाह का, औकात भड़-भूंजेकी ॥ जिसकी करतूत तुच्छ हो पर मिजाज बहुत करता हो, तब ऐसा कहते हैं ॥

३३३ मुरगी खाना; पर नहीं खोसना ॥ अपना मतलब करते हुए दूसरोंपर प्रगट नहीं होने देना अथवा अपना प्रयोजन तो करते नहीं पर दूसरोंके बताने को जब अधिक ढोंग बनाया जाता है, तब ऐसा कहते हैं ॥

३३४ मूर्खोंका माल, यारोंकी खूराक ॥ जब मूर्खोंका माल उनकी मूर्खताके कारण लोग खाते हैं तब ऐसा कहा जाता है ॥

३३५ माँगे भीख, नाम लखपतिराय ॥ योग्यताके विरुद्ध नाम होने पर ऐसा कहा जाता है ॥

३३६ मा के पेट कुम्हार का आवा, कोई काला कोई गोर ॥ एक स्थानसे जो पदार्थ उत्पन्न होते वह भी भिन्न प्रकारके होते हैं इस बात की यथार्थताके लिये यह कहावत कहते हैं ॥

३३७ मेंडकी को भी जुकाम ॥ जो आदमी कट्टर है और सुकुमारता का नाम भी नहीं जानते यदि वे दूसरोंपर प्रगट करनेको सुकुमारता जनावें तब ऐसा कहा जाता है ॥

३३८ मन जाने आप, माई जाने बाप ॥ गूढ पुरुषोंके हृदय का भेद ज्ञात न होते हुए ऐसा कहा जाता है ॥

३३९ मारने वालेसे बचाने वाला बड़ा है ॥ जब किसीको दुःख अथवा हानि पहुंचानेके उपाय करने पर भी भाग्यवशात कोई दुःख अथवा हानि न

पहुँचकर सबके सब निष्फल हो जाते तब ऐसा कहा जाता है ॥

३४० मियाँकी जूती, मियाँका सिर ॥ जिसके द्वारा तिसही को जब हानि पहुँचाई जाती है तब ऐसा कहते हैं ॥

३४१ मरी बछिया ब्राह्मण को दान ॥ जब कोई पदार्थ अपने काम न होकर जगह रूंधता अथवा दुःखदाई होता हो तिसको चपल बुद्धिके मनुष्य दूसरों पर अहसान अथवा धर्म प्रगट करके किसीको देते हैं तब ऐसा कहा जाता है ॥

३४२ मांगें भीख, पूछें गांवकी जमा ॥ इज्जत भिखारी कीसी होनेपर जो लोग बडी २ बातें करते या बडी २ बातोंका भेद लेना चाहते हैं तब ऐसा कहा जाता है ॥

३४३ मांगे न आवे भीख, तो सुरती खाना सीख ॥ (बहुधा जो लोग तमाखू खाते हैं उनको

तमाखू मांगने की भी आदत पड़जातीहै जिन लोगोंको मांगनेकी आदतहै उनकी तथा तमाखू खानेवालोंकी निन्दामें ऐसा कहते हैं ॥

३४४ मा खाने न दे, बाप भीख न मांगने दे ॥ जब कोई काम लाभके लिये किया जाता हो पर उसमें कई लोग बाधक हो जावें तब ऐसा कहा जाताहै

३४५ मनमें भावे, मुडी हिलावे ॥ जिसकी आन्तरिक इच्छा तो है पर लोगोंको बतानेको या लज्जित होकर इनकार करता है तब अथवा जिसको जो बात पसंद होती है उसके लिये जब वह किञ्चित् इशारा तो करता है पर लज्जावश मुंहसे कुछ नहीं बोलता तब भी ऐसा कहते हैं ॥

३४६ मेरे बापने घी खाया, मेरा हाथ सूंघो॥ जब कोई आदमी ऐसी दो बातोंको मिला देताहै जिनका कुछभी संबंध नहो तब ऐसा कहतेहैं ॥

३४७ मुखमें राम, बगलमें छुरी ॥ जो लोग

मुखसे राम २ कहते बगुला भक्तबने फिरते उनके लिये यह कहावत कहतेहैं ॥

३४८ मनमानेका मेला, नाहिं सबसे भला अकेला ॥ जब जबरदस्ती दस आदमी इकट्ठे किये जावें पर दिल सबके पृथक् २ हों तो ऐसा कहतेहैं ॥

३४९ माके प्यारसे बेटीकीखराबी ॥ (बहुधा घरमें स्त्रीकी बात बहुत चलतीहै) और लड़कीपर माका प्रेमभी अधिक रहताहै जब घरके दूसरे लोग किसी बातपर लड़कीकोधमकातेहैं तो वह धमकाना माके प्रेमके कारण व्यर्थ जाताहै जब लडकीके आचरण माकेप्यारसे सुधरनेके बदले बिगड़तेहैं तब ऐसा कहा जाताहै ॥

३५० रंगमें भंग ॥ जब खुशीके काममें शोकदायक कोई विघ्न आजाता तब ऐसा कहा जाताहै ॥

३५१ राम बनाई जोड़ी, कोई अंधा कोई कोढ़ी ॥ जब दो दोषी पुरुषोंका समागम और मित्रता होतीहै तब ऐसा कहा जाताहै ॥

३५२ रिसानी वाई पुंआर लौंचे ॥ जब कोई आदमी ऐसे आदमीके द्वारा सताया जाकर रूस जाता है कि जिसका कुछभी न करसके, और फिर अपनेसे ओछे और तुच्छ लोगोंको अपनी संतुष्टताके लिये कष्ट देताहै तब ऐसा कहतेहैं ॥

३५३ रौन कुमरईकी कुतिया ॥ (कहानी) रौन और कुमरई, छोटे २ गांव वहुतही नजदीकहैं वहां एक कुतिया थी। एक दिनकी बातहै कि दोनों गांवमें ज्योनार हुई, कुतियाने सोचा कि दोनों जगहकी जूंठन खाऊं इस लिये दो पहरको रौनमें जाकर देखा कि लोग भोजन कररहेहैं तब उसने सोचा यहां क्यों ठहरुं तबतक कुमरई जाऊं ॥ जब वहां गई तो देखा कि यहां भी लोग खारहेहैं। इस लिये रोनको जल्दीसे भागी तो क्या देखतीहै कि लोग खाकर चले गये और जूठन भी महतर लेगया तब तो घबराई हुई कुमरईको भागी पर वहां भी यही हाल हूआ अन्तको

कुतिया निराश होकर भूखके मारे दोनों गांवके वीचमें आकर मरगई तवसे यह कहावत प्रसिद्ध हुई) जव कोई आदमी अधिक लोभमें पडकर सभी लाभ लेनेको अधिक दोड धूप करताहै परंतु एकभी जगह सफलता नहीं पाता तव ऐसा कहतेहैं ॥

३५४ रांडभांड अरु नकटा भैंसा ये विगडें तव होवे कैसा ॥ जव कभी उद्दंड और मूर्ख आदमी विरुद्धहोजाता और वहुतसमझाने पर नहीं समझता तव ऐसा कहतेहैं ॥

३५५ रामनाम जपना, पराया माल अपना ॥ जो लोग भक्त बनकर लोगोंको ठगते फिरतेहैं उनकी यथार्थता प्रगट करनेको ऐसा कहतेहैं ॥

३५६ रंडीका दोस्त पैसा ॥ जो निर्लज्ज आदमी केवल अपने मतलवके लिये अच्छे वुरे अथवा नेकनामी वदनामी वा पाप पुण्यका विचारानिचार नहीं करता तव ऐसा कहतेहैं ॥

३५७ रहै बांस न बजै बांसुरी ॥ जब कोई आदमी अपने शत्रुके मूलतकको नाशकरनेका उपाय करते हैं तब ऐसा कहा जाताहै ॥

३५८ राजा मानै सो रानी ॥ छाना (कंडा) बीनती आनी ॥ जब किसी ओछे आदमीका महत्पुरुष बड़प्पन अंगीकार करलेतेहैं तब सबको भी मानना पड़ताहै ऐसे अवसरपर यह कहावत कही जाती है ॥

३५९ राम २ भजना, यही काम अपना ॥ जो सन्त लोग संसारसे विरक्तहैं उन्हें जब कोई सांसारिक कामोंमें लगानेकी शिक्षा देनेलगता है तब ऐसा कहा जाताहै ॥

३६० रहतेथे वनखंडमें, रखातेथे चारो। जैसो जेठमास तैसो बसकारो ॥ जो लोग सर्वदा वनमें रहते और सांसारिक आचार व्यवहार को नहीं जानते अथवा जो बिलकुल अज्ञान और गवाँर होतेहैं उनकी उपमामें यह कहावत कही जातीहै

३६१ रोटीको रहोगे, कि वहभी छोड़ोगे ॥ जब आदमी अपने गुजरका खयाल न करके मनमानी चाल चलताहै तब उसके शिक्षार्थ यह कहावत कहतेहैं

३६२ लड़े सिपाही, नाम सरदारका ॥ जब मातहत लोग परिश्रम करके अच्छा काम बतलाते और अफसरकी तारीफ होतीहै तब ऐसा कहतेहैं ॥

३६३ लेना न देना, बातोंका जमाखर्च ॥ जब कोई निठल्ला आदमी किसी काम करते हुए पुरुषके पास बेकाम जाकर यहां वहांकी बातोंमें लगाता जिस से उसको काम करना दुश्वार होजाता तब ऐसा कहते हैं ॥

३६४ लातोंकी देवी, बातों नहीं मानती ॥ जब कोई दुष्ट आदमी अच्छेबर्तावसे सीधा न होकर बुरे बर्तावसे सीधा होता है तबऐसा कहतेहैं ॥

३६५ लेना एक न देना दो ॥ जहां कुछभी प्राप्ति न होते हुए फँसजाकर काम करना होताहै वहां यह कहावत कहते हैं ॥

२६६ लड़नादे पर विछुडनानदे ॥ जिस घरमें दश आदमी होतेहैं उनमें कुछ न कुछ खटपट अवश्य होतीहै कई लोग ऐसाभी कहतेहैं कि अलग २ होजाओ जिससे झगडा न हो तव सज्जन लोग जो देश कालके ज्ञाता हैं इस कहावतको कहकर संतुष्ट कर-देतेहैं ॥

२६७ लोभी गुरू लालची चेला ॥ जब दुष्टको दुष्टही शिक्षा दाता मिल जाता या एकसे दो नीचोंका संबंध होजाताहै तव लोग ऐसा कहतेहैं ॥

२६८ लडकेकी दोस्ती, जीका जंजाल ॥ अज्ञान आदमीसे मुहब्बत करके जब समय कुसमय का विचार न होते हुए सताये जाते हैं तव ऐसा कहा जाताहै ॥

२६९ लड़केकी यारी, गधेकी सवारी ॥ अविवेकीसे मित्रता करनेसे उसकी अविवेकताके कारण सदैव बदनामी उठाना पडतीहै तव ऐसा कहतेहैं ॥

३७० लिखते न बने कलम टेढी ॥ अपनेसे काम बनते न देख जब सामानको दोप दियाजाताहै तब ऐसा कहतेहैं ॥

३७१ लड़ाईका मुहकाला ॥ जब सज्जन लोग लडाईका अवसर देखते तो ऐसा कहकर चुपचाप रह-जातेहैं ॥

३७२ लडाई की जड हांसी ॥ जब मसखरी होते २ लड़ाई हो पड़ती, तब ऐसा कहा जाता है ॥

३७३ वह गुडनहीं कि चिउँटा खाय ॥ जब कोई लुच्चा आदमी किसीको सीधा सा देखकर अपन लुच्चपन करता है तो वह आदमी ऐसा कहताहै अथवा लोभी लोगोंका धन कोई सीधा समझ कर खाना चाहता है तो वहभी ऐसा कहते हैं ॥

३७४ सदा दिन एकसे नहीं रहते ॥ जब कोई संपतिवान सुखी आदमी नष्ट भृष्ट होकर दुःखी होजाता है तब लोग उसकी दशा देखकर यह कहावत कहते हैं॥

३७५ सूझैन वाजै, नैनसुखनाम ॥ जब योग्यताके विरुद्ध नाम होता है तब भी ऐसा कहते हैं ॥

३७६ सिरें दालरोटी, सवैबात खोटी ॥ सबसे पहिले खानेकी फिकर कीजाती तव ऐसा कहते अथवा हिन्दुओंके लिये सदैवसे दाल रोटी खाते आये हैं आजकलके आचार व्यवहार देख नवयुवकोंके शिक्षार्थभी यह कहावत कहते हैं ॥

३७७ सीधी अँगुली, घीव नहीं निकलता॥ जव दुष्ट मनुष्यसे कोई आदमी अपना काम सीधी तरह निकालना चाहे और न निकले तव ऐसा कहा जाता है ॥

३७८ सिरफोड़ लड़ना, जांघ जोड़ खाना॥ जव कोई आदमी लड़ाई होनेपर अपने कुटुम्बसे अलग होना चाहता है तो उसके शिक्षार्थ यह कहावत कही जाती है ॥

३७९ शिर मुँडाये, मुर्दाहलका ॥ जव काम

तो वड़ा भारी करना है और कोई आदमी थोड़ासा अंश करनेपर कहे कि अवतो थोड़ा रहगया तव ऐसा कहा जाता है ॥

३८० सौ सुनारकी, एक लोहारकी ॥ जव एक आदमी किसीको थोड़ा २ वार २ सतावे परंतु दूसरा एकही वारमें ऐसा सतावे कि सवका वदला ले लेवे तव ऐसा कहा जाता है ॥

३८१ सांचको आंच क्या ॥ जव कोई आदमी सच वोलताहो और लोग घुड़कावें तो वह डरता नहीं तव ऐसा कहते हैं ॥

३८२ सव रात पीसा ढँकनी (पारे) के उठाया ॥ जव कोई काम वड़े परिश्रमसे तो किया जावेपर अन्तमें फल तुच्छ मिले तव ऐसा कवते हैं ॥

३८३ सारा जाता देखिये आधा दीजे वांट ॥ यदि पूरी हानि होतीहो और दूसरेको आधी देनेसे वच सक्तीहो तो देदेना चाहिये जो लोग ऐसे निर्वुद्धि होते

हैं कि उनका माल चाहे नष्ट होजावेपर देनेमें तो हाथ दूखता है तब ऐसा कहा जाता है ॥

३८४ सुहाते की लात सही ॥ अनसुहातेकी बातनहीं ॥ जब मित्रकी गाली भी कोई सहे परा शत्रुकी साधारण बात भी बुरी लगे अथवा जहां प्राप्ति की आशा है वहां दुर्वचन सह लेवे पर जहां प्राप्ति नहे वहां की साधारण बातसे भी अप्रसन्न हो तब ऐसा कहा जाता है ॥

३८५ सूना घर चोरोंका राज ॥ जिस घरमें कोई दबावदार आदमी नहीं उसके आदमी जब मन-मानी चाल चलने लगते हैं तब ऐसा कहते हैं ॥

३८६ सुकुमार बीबी, चठाई कालहँगा ॥ जब कोई बड़ा आदमी कंजूसपन और भद्दी पोशाक पहिन-ता है तब ऐसा कहा जाता है ॥

३८७ संपत्तिसे भेट नहीं, बातोंके लठालठे ॥ (कहानी॥ किसी समय एक ग्वाल जो अतिही दरिद्र

था अपनी स्त्रीसे वोला कि परमेश्वर धन देवे तो एक भैंस अवश्य लेना चाहिये स्त्रीने कहा अच्छाहै भैंस आजावे तो अच्छा है मैं अपने भाईके घर छांछ दे आया करूंगी तव उसका पति क्रोध करके कहने लगा क्योंरी? मैं क्या तेरे भाईके वास्ते भैंस लेऊंगा ऐसी २ वात चीतमें मार पीटकी नौवत गुजरी) जव मूर्ख आदमी निष्प्रयोजन आपसमें झगडने लगते हैं तव ऐसा कहा जाताहै ॥

३८८ सोवतथी, अरु विछी पाई ऊंघतेको विछौना } किसी आदमी-को कोई करना हो और तिसपर कोई आश्रय अथवा वहाना मिल-जावे जिससे उसका मनमाना काम पूर्ण हो सके अथवा जव आलसी लोग कुछ वहाना करके वैठ रहतेहैं तव भी ऐसा कहाजाता है ॥

३८९ सांचीकहे खुशरहे ॥ जो लोग सत्य वो-लते हैं वे यथार्थमें सुखी अर्थात् निश्चिन्त रहते हैं उनके शिक्षार्थ ऐसा कहतेहैं ॥

३९० साँचेका रंग रूखा ॥ सदैवकी बात कि सच बात लोगोंको बुरी लगती और झूठी चापलूसीसे सब प्रसन्न रहतेहैं जब ऐसा अवसर आता है तो यह कहावत कही जातीहै ॥

३९१ शौक का विवाह, सनौरोके रजियाटे॥ कोई काम जब बड़े उत्साहसे तो कियाजावे पर उसमें काम सब कंजूसीसे किया जावे तब ऐसा कहतेहैं ॥

३९२ सब झूठा मरगये, तुमको तापभी न आई ॥ अति पापी आदमीको जब पाप पुन्यसे नहीं डरता तब ऐसा कहतेहैं ॥

३९३ सौबार चोरकी, एकबार साहुकी ॥ जब आदमी कईबार दोष कर बचजाता पर एकबार पकड़े जानेपर पूरा २ दंड पाताहै तब ऐसा कहतेहैं ॥

३९४ सुख कहना जनसे, दुःख कहना मनसे॥ जो लोग सुखमें तो किसीसे बोलते भी नहीं पर दुःखमें घर २ रोते फिरतेहैं उनके शिक्षार्थ यह कहावत कहतेहैं ॥

३९५ सौहाथ मारे,तब पचास हाथ चालै ॥ जो आदमी बहुतही सुस्त होकर बार २ कहनेपर भी कुछ काम नहीं कहता उनके लिये यह कहावत कही जातीहै॥

३९६ सवासनके अटके व्याह ॥ (व्याहमें जिसको नेग के टके मिलते जैसे फूआ या वहिन, इनको सवासन कहतेहैं) कोई आदमी जिसको किसी काम होनेमें कुछ प्राप्ति होनाहै और अपने अटकासे उसकामके होनेको दबावे तब ऐसा कहा जाताहै ॥

३९७ सास पतोहूमें हसिया गायब ॥ जहांदो चार विश्वासनीय और आपसके आदमी बैठे हों और कोई वस्तु गुमहोजावे तब ऐसा कहा जाताहै ॥

३९८ सुनना सबकी, करना मनकी ॥ (किसी भी काममें दस आदमी दसप्रकारकी सम्मति देतेहैं उनमें कोई इष्ट और कोई अनिष्टभी होतीहै) जो आदमी सभाकी बातमें से अपना इष्ट जिससे होता देखे वही करे तब ऐसा कहतेहैं ॥

३९९ सत्तीसे सूम भला, जो शीघ्र उत्तरदे ॥ जो आदमी किसीका बहुत समय व्यर्थ खोता और देने नदेनेका उत्तर नहीं देता पीछे घंटे दोघंटेमें कुछ देदेवे तव ऐसा कहाजाताहै ॥

४०० सबकेगुरु गोवर्द्धन चेला ॥ जो आदमी सबसे चालाक और चतुर होताहै उसकी उपमामें यह कहावत कहतेहैं ॥

४०१ सेवाकाफलसेवा ॥ जो जिसकाममें परि-श्रम करताहै उसमें फलभी मिलताहै तव ऐसा कहा जाताहै ॥

४०२ सुईभर छान, मूसलभर अंधेर ॥ जहां बहुत बारीक बातका विचार कियाजाता पर मोटी २ बातोंपर ध्यान भी नहीं दियाजाता तव ऐसा कहतेहैं॥

४०३ सूरतसे, कीमत बडी ॥ अच्छा रूप होनेसे जब पदार्थका मूल्य बढजाता तव ऐसा कहते

अथवा जब स्वरूपका ध्यान न होते हुए गुणका मान-
किया जाताहै तब भी ऐसा कहते हैं ॥

४०४ सैयाँभये कोतवाल अब डर काहेका ॥ जब किसीका बडे आदमी अथवा उहदेदारसे मेल हो जाता है अथवा आपस का घरका आदमी बडप्पन या बड़ा उहदा पाजाता है जिसके भयसे लोग भला बुरा कुछ भी नहीं कह सक्के तो वह मनुष्य मनमानी चाल चलने लगता है तब ऐसा कहा जाता है ॥

४०५ सौ सयानों का एक मत ॥ जहां दस बुद्धिमान् आदमी एकत्र होते हैं और उनसे किसी काममें एकसी सम्मति मिलती है तब ऐसा कहाजाता है ॥ (कहानी) किसी समय अकबर बादशाहसे बीरबलने यह कहावत कही तो बादशाहने परीक्षा कर-नेके लिये १००बुद्धिमानोंको यह आज्ञा दी कि अमुक हौजमें तुम लोग रातके समय एक २ घड़ा दूध डालना मैं सुबह देखूंगा. सबने घर जाकर यही सोचा कि

९९ आदमी दूध डालेंगे यदि उनमें हम १ घड़ा पानी डाल आवेंगे तो क्या जान पड़ेगा, ऐसा सोच सब एक २ घड़ा पानी डाल आये । बादशाहने सुबह आकर देखा कि हौज पानीसे भरा है दूधका नाम नहीं तब बीरबल को बुलाकर सब हाल कहा । बीरबल बोले, जहां पनाह । मैंने तो पहिले ही अर्ज किया था ॥

४०६ हाथमें सुमरनी. बगलमें कतरनी ॥ जो लोग बाह्य तो साधुवृत्ति रखते हैं पर अंतरमें बड़े पापी और कपटी हैं उनकी यथार्थता बतानेको यह कहावत कहते हैं ॥

४०७ हीरेकी परख जौंहरी जाने ॥ जो मनुष्य जिस काम या बातसे अनभिज्ञ है जब उससे ऐसी बातकी परीक्षा कराई जाती है तब ऐसा कहते हैं ॥

४०८ हाकिम के आँख नहीं ॥ बहुधा प्रति-ष्ठित आदमी किसी बातको बिना जांचे केवल लोगोंके कहने सुननेसे मान लेते हैं और उसी परसे किसीका

इष्ट अथवा अनिष्टकर बैठते हैं तब ऐसा कहते हैं ॥

४०९ हाथ कौडी, न बाजार लेखा ॥ जब कोई आदमी बिलकुल निर्धन हो जाता है तो अपना छूंछापन प्रगट करनेको ऐसा कहता है ॥

४१० हुई बड़ी फजर, गई चूल्हेपर नजर ॥ जिस आदमी को भली या बुरी आदत पड़जाती है वह जब समय कुसमय को न देखकर स्वभाव के अनुसार वर्ताव करनेको तत्पर होता तब अथवा जिसको सवेरे से भोजन करनेकी टक है और जब वह सोकर उठतेही "भोजन२" चिल्लाता है तब भी ऐसा कहतेहैं॥

४११ हाथी को पीर, गधा दागा जाय ॥ जब बडे आदमीके अपराधमें छोटे आदमीको दंड दिया जावे या अपराधी ठहराया जावे तब ऐसा कहते हैं ॥

४१२ हाहा करके बूढे, नहीं व्याहे जाते ॥ बिलकुल असंभवकाम बिनती करनेपरभी सिद्ध नहीं होता अथवा जब लोग अपना असंभव काम होनेके

लिये बहुत २ विनती करते हैं तब ऐसा कहा जाताहै।

४१३ हाथमें सुमरनी, बगलमें कतरनी ॥ जो लोग धर्मात्मा का रूप धारणकर लोगोंको ठगते हैं उनकी यथार्थता प्रगट करने को। यह कहावत कहते हैं ॥

४१४ हाथी निकल गया, पूंछ रह गई ॥ जब किसी कार्यका बहुतसा अंश होजावे और कुछ शेष रहे तब ऐसा कहतेहैं अथवा आदमी जब किसी कामका बहुतसा भाग तो करदेवे पर थोडेके लिये असमंजस करे तब ऐसा कहतेहैं ॥

४१५ हाथ कंगनको आरसी क्या॥ जो काम-या बातसाम्हने होती हो और कोई उसके लिये पूंछा पूंछी या निर्णयकरे तब ऐसा कहतेहैं ॥

४१६ हिसाब कौडीका, बखशीश लाखकी ॥ जो लोग हिसाब तो कौडी २ का करते पर दान लाखोंका कर देतेहैं उनके लिये यह कहावत कहतेहैं ॥

४१७ हाकिमहारे मुंहमें मारे ॥ जब बड़ा आदमी अनुचित बात करनेपर लज्जित अथवा निरुत्तरतो होजाताहै पर बड़प्पनके कारण धमकाकर अपनी बात सच्ची करलेताहै तब ऐसा कहतेहैं ॥

४१८ हारमाने, झगडा टूटा ॥ दो दलोंमें जब किसी विषयपर वादानुवाद या झगड़ा चलताहै और दोनों अपना २ पक्ष पुष्ट करके उसे और भी बढातेहैं यदि उनमेंसे एक हार मानकर चुप होरहे तो झगड़ा तैं होजाताहै तब ऐसा कहतेहैं ॥

४१९ हनता को हानिये, पाप दोष नागिनिये जब आदमी किसी पापी द्वेषीको दंड देताहै तो दंड देते समय या सताते समय ऐसा कहताहै ॥ अथवा जब कोई आदमी किसी अधमको दंड देनेमें विचाराविचार करके दूसरोंसे सम्मति लेताहै तो दूसरे लोग सलाहमें यह कहावत कहतेहैं ॥

४२० होम करते हाथ जला ॥ कोई भला

काम करते हुए दैवयोग से कोई दुःख उत्पन्न होजाताहै तब अथवा जो लोग मनमें कपट रखके धर्मकाम करते और जब उनकी मनसाके अनुसार दशा होतीहै तब भी ऐसा कहा जाताहै ॥

४२१ हाथीके दांतमें रांढा (डांडा) ॥ जब बड़े आदमीको तुच्छ भेंट दीजाती और वह उसे तुच्छ समझता या बहुत खानेवालेको अल्प भोजन दिया जावे तब ऐसा कहतेहैं कभी२ बलवान्के हाथसे छोटा काम सिद्ध न होनेपरभी ऐसा कहा जाताहै ॥

४२२ हाथीके दांत खानेके और, बतानेके और॥ जब किसी आदमीके अभ्यंतरमें तो और बात रहतीहै और दूसरोंसे औरतरह की बातें करताहै तब ऐसा कहतेहैं ॥

४२३ हंसा तो सरवर गये, भये कागा पर-धान ॥ जहां पहिले सज्जन स्वामी द्वारा अधिकारके मनुष्योंको सुख मिलतारहा हो यदि पीछे कोई दुष्ट उस स्थानपर आकर सतावे तब ऐसा कहतेहैं ॥

४२४ हीजडेके घर वेटा हुआ ॥ जव कोई असंभव वात कहताहै या होतीहै तव ऐसा कहा जाताहै ॥

४२५ होओ, न वाई मो सरीखी ॥ जो लोग जैसे होतेहैं वैसेही संसार भरको होना विचारतेहैं विशेषकर दुःखी दरिद्री होनेपर दुर्जन और सुख सम्पत्तिमें सज्जन तव ऐसा कहतेहैं ॥

नीचे लिखी हुई और भी कहावतें हैं जिनका अर्थ स्पष्ट होनेके कारण नहीं लिखा

१ अनजानताको दोष नहीं
२ अनवींध्यों सांड़
३ अति दुखियाको दुःखनहीं
४ अपनी जांघ उघारिये आपन मरिये लाज
५ आंखका काम भौंहँसे नहीं निकलता
६ आंखोंकी शरम
७ अँधेरेमें चोरका वल

८ आती लक्ष्मीको लात मारना

९ आंख मीचीं तो सदा अँधेरा

१० आंत भारी तो शीश भारी

११ अंधेके आगे दीपक रखना

१२ आमोंकी कमाई नीबूमें गमाई

१३ आमा फले तो नीचानमे

१४ आग खाय ते अंगार उगले

१५ आटेमें नमक, सच्चेमें झूठ

१६ आन फँसे भई आन फँसे

१७ आपकी लापसी पराई सो कुसकी

१८ आप बीती कै परबीती

१९ आप लिखे और खुदा बांचे

२० आतेका बोल बाला जातेका मुंहकाला

२१ उद्धवका लेना न माधवका देना

२२ उठाऊका माल बटाऊमें जाय

२३ ऊंगतेका पांव पड़ना

२४ एक गांवमें नकटावसे क्षणमें रोवे क्षणमें हँसे
२५ कर्म अभागौ खेती करै बैल मरै के सूखापरै
२६ कसाईके घरसे गाय छुड़ावना
२७ कसाईके हाथसे गाय छूटना
२८ कहनेसे कुह्मार गधेपर नहीं चढ़ता
२९ काजलकी कोठरीमें दाग लागे ही लागे
३० काजीकी घोडी क्या घी मूततीहै
३१ काले २ सब जामूं नहीं
३२ काल गया पर कहावत रहगई
३३ कालमें कोदों मीठे
३४ कालौ कुत्तौमन करै तो बावसे लड़ै
३५ काली कुत्ती मरनेवाली वंदेको यश
३६ कीडी ऊपर कटक
३७ कुआकी मिट्टी कुआमें
३८ केलपर केला एकही वार लागै
३९ कोठी धोकर कीच निकालना

४० गूंगाकी पारसी
४१ ग्रहणमें सांप मारना
४२ गांवका जोगी आन गांवका सिद्ध
४३ घासकी गंजीका कुत्ता खायनखानेदे
४४ चंडाल चौकडी
४५ चनेसे फोड़ना
४६ चने खाकर हाथ चाटना
४७ चमारका मठा (छांछ)
४८ जलेपर नमक छींटना
४९ जहां न पहुंचे रवि तहां पहुंचे कवि
५० झट मँगनी पट व्याह
५१ गली भूलीमैं जाऊं एक संदेशालेती जाऊं
५२ डुकरो मरी सो मरी पैयम घर देखगये
५३ टेढ़की आमली खाटी होय कि मीठी
५४ दुनियां झुकतीहै झुकाने वाला चाहिये
५५ देखतेकी लुगाई अंधालेगया

५६ दोस्तीमें लेन देन, वैरका मूल
५७ धप्पा लगाकर माफ मांगना
५८ धोबीका भाई पत्थर
५९ धोबी बेटा चांदसा
६० नकटीके साम्हने नाक पकड़ना
६१ नक्कार खानेमें तूतीकी आवाज
६२ न मिली नारी तो सदा ब्रह्मचारी
६३ नाक कटा तो कटा, परघी तो चटा
६४ नाचने वालेके पांव फरके
६५ नौकरी पाथर परकी जड
६६ पराया लडका पहाड चढाना
६७ पड़ोसीकी दो फोड ओर मेरी एक
६८ पत्थर पर पानी
६९ पत्थर पिघलना
७० पाहुनेसे सांपपकडाना
७१ पांच अंगुली बराबर नहीं होतीं

७२ पांच अंगुली पहुंचौ शोभै
७३ पानीसे पतला क्या
७४ पानीमें आग लगाना
७५ पाप पहाडपर चढ़कर पुकारै
७६ पैसा कहीं झाडपर नहीं फलते
७७ पोथा सो थोथा पाठैते साथै
७८ बकरेकी मा बच्चेकी कबतक खैर
७९ बबूलबोकर आम खाना मांगेगा
८० बारह वर्ष दिल्लीमें रहे काम भरभूंजेकाकिया
८१ बिच्छूका मंतर न जाने सांपके बिलमें हाथ डाले
८२ भय बिनु प्रीत नहीं
८३ भई गति सांप छछूंदर केरी
८४ भरमभारी खीसा खाली
८५ भरोसेकी भैंस पाडा ब्यानी
८६ भटा एकको पितकरै करै एकको बाय

८७ भूखा सिंह तृण न खाय
८८ भूल ससाकी, गौन गधाकी
८९ भूरका लड्डूखाय सो पछताय, न खाय सो पछताय
९० मनमुडा बिन माथा मुडा किसकामका
९१ मखमलीजूती
९२ मारसे भूत भागे
९३ मारतेके पीछे और भागतेके आगे
९४ मूतादियाजलना
९५ मौत मुंह माँगी न आवे
९६ मोतीका पानी उतरा सो उतरा
९७ राखपत तो रखापत
९८ रास्तेमें हगे और आंखें दिखावे
९९ रांधैं ते रानी पानीभरैंते लौंडी
१०० राज नहीं है पोपाबाईका
१०१ राजा लटै तौ किससे कहे

१०२ राजा कर्णका पहरा है
१०३ रोड़ा मीठा हो तो सियाल न छोडे
१०४ लोहेके चने
१०५ लोमड़ीको अंगूरखट्टे
१०६ लेनादेना गांडूका काम लड़नेको मौजूद
१०७ लेना इसका देना नहीं
१०८ वर मरौके कन्या मरौ, मेरी गौरका भाडाभरौ
१०९ वहतीगंगा पांवधोना
११० वेश्या वरस घटावही योगी वर्ष बढाव
१११ व्याजके आगे घोड़ा नहीं दौडसक्ता
११२ शेखचिल्ली का विचार
११३ सबमरजाँय और मैं सबका लाडू खाऊं
११४ सब सबकी संभालना मैं अपनी फोडताहूँ
११५ सांप टेढाचलेपर बांबीमें सीधा
११६ सात पांचकी लाठी एक जनेका बोझ
११७ सातपांच मिलकीजे काज

११८ सिन्धु तैरकर सरस्वतीमें डूबना

११९ सिंहका बच्चा सिंहही होय

१२० सिर सलामत तो पगड़ी बहुत

१२१ सिफारिशकी गधी घोडेको लातमारे

१२२ सुखमें निद्रा दुःखमें राम

१२३ सौचूहेमारकर बिलीहजको चली

१२४ सौदवाने एक हवा

१२५ सोनेको दाग न लागै

१२६ हरनवाले बिसमिल्ला

१२७ हनता को हनिये पाप दोष ना गनिये

१२८ हलालमें हरकत हराममें बरकत

१२९ हारिल लकड़ी पकड़ी सो पकडी

१३० होन हार बिरवान के होत चीकने पात

इति प्रथमकुसुम समाप्त।

द्वितीय कुसुम ॥

अंगरेजी

Children of the same parents.

१ (चिल्डरन आफ् दि सेम पेरेन्ट्स) एकही मा वापके वालक, एकही मूंगकी दो फाड़, ॥ व्यवहारमें समानता वतलानेका जव अवसर आता तव यह कहावत कही जातीहै ॥

Cocks Make free of horses' corn.

२ (कॉक्स मेक फ्री आफ् होर्सेस कॉरन) पारके पैसे दिवाली ॥ जो लोग दूसरेके पैसे से या वेटा वापके कमाये हुए धनसे आनन्द मनाता और उसे व्यर्थ व्यय द्वारा उड़ाताहै तव यह कहावत कहतेहैं ॥

Clouds that the Sun binds.

३ (क्लौड्स दैट दि सन वाइन्ड्स) हाथके किये को क्या पछताना ॥ जव कोई आदमी अपने हाथसे कुछकाम विगड़नेपर पछताने लगता तव ऐसा कहतेहैं ॥

Common fame is often a Common liar.

४ (कॉमन फेम इज ऑफिन ए कॉमन लाइर माथे मूढ़ेजती नहीं आधे ओढ़े सती नहीं ॥ कोई मनुष्य जो जिसका चिन्हहै उससे रहित होनेपर पहिचाना नहीं जाता तब ऐसा कहतेहैं ॥

Confide not in him who has once deceived you.

५ (कनफाइड नॉड इन हिम हू हैज वन्स डिसीवूडयू) कुत्ता एकहीवार रोटी लेजाताहै ॥ जो आदमी किसीके साथ एकवार छलकरे तो फिर उसके चैतन्य होजानेसे कपटीका कपट दुवारा नहीं चलसक्ता तब अथवा जो आदमी किसीसे एकवार ठगाया गयाहो तो दुवारा होशयार रहताहै तवभी ऐसा कहतेहैं ॥

Confidence is the companion of success.

६ (कॉनफीडेन्स इज दि कॅम्पेनियन ऑफ सक्सेस) सफलताका मूल विश्वासहै ॥ दुनियांमें सव काम विश्वाससे चलतेहैं जब कोई मनुष्य दूसरेपर

विश्वास न करके हानि अथवा दुःख पाता तब ऐसा कहतेहैं ॥

Consciences and coveteousness can never coalesce.

७ (कॉन्सीएन्सेज् एन्ड कवेचिअस नैसकेन नेवर केलेस) ईमानदारी और बेईमानी एक साथ नहीं ॥ कोई आदमी ऐसी दो बातें जो एक दूसरेसे विरुद्ध हों (जैसे रोना और हंसना) एक साथ करना चाहता तब ऐसा कहतेहैं ॥

Contempt will soon kill an injury than revenge

८ (कन्टैम्पट विल सून किल इन इंजरी दैन रिवेन्ज) जो गुड़दीनेही मरै क्यों विष दीजे ताहि ॥ जो भले करनेहीसे अपना काम सफल होतो बुरा करके न करना चाहिये जो लोग इसके विरुद्ध चलतेहैं उनके लिये ऐसा कहतेहैं ॥

Contentment can never really be purchased

९ (कन्टैन्टमेन्टकैन नेवर रियली बी परचेज्ड जूड) संतोष कभी नहीं खरीदा जासक्ता ॥ संतोष

यह एक स्वाभाविक गुण है जो अमूल्य अर्थात् पैसे देनेसे प्राप्त नहीं होता जिनका संतोषी स्वभावतो नहीं पर दूसरेकी देखा देखी संतोष करकेआत्माको दुःखी करतेहैं उनके विषयमें यह कहावत कही जातीहै ॥

Counsel and wisdom achieve more & greater exploits than force.

१० (कौंसिल ऐंड विज़्डम एचीव मॉर ऐंडनग्रेटर एक्सप्लाइट्स दैन फार्स) बलसे कल बढतीहै ॥ मनुष्य स्वयं उतना काम नहीं करसक्ता जितना कि कलकी सहायतासे करसक्ताहै तब अथवा कठिन कामके करनेकी जब कोई सहज रीति बतावे तब भी ऐसा कहतेहैं अथवा बलकी अपेक्षा बुद्धि द्वारा जब अधिक काम निकलताहै तौभी ऐसा कहा जाताहै

Covetsous men are bad sleepers

११ (कॉवेचस् मैन् आर बैड् स्लीपर्स) लोभी-को आहार और निद्रा नहीं ॥ इस संसार में जो लोग लोभी हैं वे धन संचयके लिये रात्रि दिवस भट-

कते रहते हैं यहाँ तककि घडीभर आराम नहीं पाते। जब कोई लोभी कहता है कि भाई हम को कभी भी सुख नहीं, तब ऐसा कहते हैं ॥

Courage without conduct is like ship without ballast

१२ (करेज विदौट् कान्डक्ट इज लाइक ए शिप विदौट् वालास्ट) होशयारीके विन हिम्मत नाहक है ॥ आदमी जब हिम्मतवान तो हो परंतु होशयारीन होनेसे कोई भी कार्य सिद्ध नहीं कर सक्ता तब ऐसा कहते हैं ॥

Crosses are ladders that lead to heaven.

१३ (क्रोसेस आर लैडर्स दैट् लीड टू हैवन्) विना मरे स्वर्ग न दिखाय॥ कोई काम जब अपनी ठीक मरजीके माफिक अपने ही किये विना नहीं बनता अथवा कोई आदमी अपने कहनेके अनुसार ठीक २ काम नहीं करता तब भी ऐसा कहते हैं ॥

Danger past God is forgotten.

१४ (डैन्जर पास्ट गाड इज फार्गाटन) दुःखमें रामा, सुखमें वामा ॥ सभी आदमी दुःखमें ईश्वरका और सुखमें स्त्री का स्मरण करते हैं तब ऐसा कहा जाता है ॥

Dead Man tells no tale

१५ (डेड मैन टैल्स नो टल्) मुआ आदमी माथा नहीं उठाता ॥ जो बात निश्चित तथा स्वयं सिद्ध है उसमें यदि कोई आश्चर्य जनक अपूर्व घटना का होना बतावे तब उसकी असत्यता प्रगट करने को ऐसा कहते हैं ॥

Do not spur a free horse

१६ (डू नॉट स्पर ए फ्री हॉर्स) तेज घोड़ेको एड़ी क्या ॥ जो आदमी अपने काममें तेज है वह कामको इस प्रकार सावधानी और योग्यतासे करता है कि किसीको कुछ कहनेकी आवश्यक्ता नहीं होती यदि इतने परभी कोई ऊपरसे ताडना करे तब ऐसा कहा जाता है ॥

Deserve success and you shall command it

१७ (डिजर्व सक्सेस एन्ड यू शैल कमान्डइट) योग्य को सब जोग ॥ जब आदमीके अच्छे वर्ताव के कारण दूसरे लोग उसके साथ भी अच्छा वर्ताव तथा मित्रता रखकर सुख दुःखमें सहायक होते हैं तब ऐसा कहा जाता है ॥

Diet cures more than the Doctors.

१८ (डाएट क्योर्स मोर दैन दि डॉक्टर्स) पथ्य ही उत्तम चिकित्साहै ॥ जब अवगुणकारी पदार्थोंके खानेसे किसीको रोग होजाताहै तब वह औषधि तो करता है परंतु पत्थ्य नहीं रखता तब ऐसा कहजाताहै ॥ अथवा जो मनुष्य प्रकृति अनुसार भोजन करके निरोगी रहता है उसकी प्रशंसामें भी यह कहावत कहतेहैं ॥

Divine the power of giving with the will to give oppurtunity

१९ (डिवाइन् दि पावर आफ गिविंग विथ दि

विल टू गिव अपर्चुनीटी) तुरत दान, महा पुण्य ॥ जब मनुष्य किसी कामके लिये किसीके पास जाताहै और वह उसकी इच्छानुसार तत्क्षण काम करदेता है तब यह कहावत कहते हैं अथवा जो लोग इसके विरुद्ध चलतेहैं उनकी निन्दामें ऐसा कहतेहैं ॥

Do as a frior says but not as he does

२० (डूएज ए फ्राइर सेज् बट नाट एज ही डज गुरूकी शिक्षा पर चल, पर चाल पर न चल ॥ गुरू शास्त्र विधिसे शिक्षा दे उसको मानना चाहिये, भाग्यवशात् गुरुके चालचलन में कोई दोष हो तो वह अंगीकार न करना चाहिये इस शिक्षाके लिये यह कहावतहै ॥

Diamonds cut diamonds

२१ (डायमन्ड्स कट डायमन्ड्स) विषस्य विषमौषधम् ॥ जिस प्रकार हीरा हीरेसे कटता है इसी प्रकार दुर्जन मनुष्य दुर्जनको हराता या दुर्जनसे हारताहै तब ऐसा कहतेहैं ॥

Do evil and look for like

२२ (डू इविल एन्ड लुक फॉँर लाइक) जैसा बोवे, तैसा लुने ॥ जो आदमी दूसरोंके साथ भला करता उसे प्रत्यक्ष भला और जो बुरा करता है उसे बुरा फल जब मिलता है तब ऐसा कहा जाताहै ॥

Do not throw oil into the fire

२३ (डूनॉट थ्रो आइल इन टू दि फाइर)लायमें पूरा ॥ जिस समय कोई क्रोधित हो यदि उसी समय कोई कटाक्षमय मर्म भेदी वचन कहाजावे तो और भी क्रोध बढकर बढानेवाले को अनिष्ट कारक होताहै तब ऐसा कहतेहैं ॥

Do as you like, you cannot curb men's tongue

२४ (डू एज यू लाइक यू कैन नॉट कर्ब मैन्स टङ्ग) अपनी जबान पकड़ सक्ते पर जगकी नहीं आप किसीकी भली बुरी बात मुंहसे निकाल सक्ते पर दूसरे लोग निकालें तो उनका कुछ न करसकने पर दर्जालाचारी ऐसा कहना पडताहै ॥

Do not measure other people's corn by your own bushel

२५ (डू नॉट मेझर अॅदर पीपुल्स कार्न बाइ यूअर ओन बूशल) होवै जैसा, लखै तैसा ॥ जो आदमी अच्छा होता वह सबको अच्छा इसी प्रकार बुरा सबको बुरा और सच्चा सबको सच्चा तथा झूठा सबको झूठा समझता हे तब यह कहावत कहते हैं ॥

Draw not thoy bow before thoy arrow is fixed

२६ (ड्राव नॉट दाइ वो बीफोर दाइ एरोव इज फिक्सड) पानी पहिले पार बांधना॥जो लोग किसी कामको करनेके पहिले ही उपाय तथा योग्यायोग्य निर्णय नहीं करके ठीक समयपर घबराहटमें पडते हैं उनके लिये यह कहावत चरितार्थ होती हैं ॥

Every rogue is at length out rogued.

२७ (एव्रीरोग इज एटलैंक्थ औट रोगुड) राई भाव रातैगया ॥ अच्छी या बुरी बात जो हो चुकती है उसका जब कोई जिकर निकालताहे तब ऐसा कहतेहैं ॥

Every one thinks his his shilling worth thirteen pence

२८ (एव्री वन थिंक्स हिज शिलिंग वर्थ थर्टीन पैन्स) अपनी सो लापसी, दूजेकी लेई ॥ संसारमें बहुधा मनुष्य ऐसे हैं कि अपने और दूसरेके पास एकसा पदार्थ होनेपर अथवा अपने सरीखा ही काम दूसरेको करनेपर अपनेको अच्छा और दूसरेको बुरा कहतेहैं तब यह कहावत चरितार्थ होतीहै ॥

Evry thing rises but to fall.

२९ (एव्री थिंग राइजेज बट टु फाल) चढ़ै सो पड़ै ॥ आदमी जो काम सदैव करता है उसमें हानि एक न एक दिन अवश्य उठाता है दूसरे जब कोई आदमी या वात वढते २ वढ जाती है वह अन्तमें किसी समय न्यून दशा को अवश्य प्राप्त होता ही इसी प्रकार जो अधिक अभिमान करता है उसका अपमान भी कभी न कभी होता है तब ऐसा कहते हैं ॥

Every tub must smell of the wine it holds

३० (एव्री टब मस्ट स्मेल आफ दि वाइन इट

होल्ड्स) हींग जाय, परवास न जाय ॥ जिसका जो स्वाभाविक गुण है व स्वभाव है वह चाहे चला जावे, पर उसका असर बनाही रहता है तब ऐसा कहते हैं ॥

Evil to him who evil thinks

३१ (इविलटू हिम हू इविल थिंक्स) खाडा खोदै सोपडै ॥ जो दूसरेके बुरा करनेका प्रयत्न करताहै उसकाही जब उस प्रयत्न द्वारा स्वभाव सिद्ध बुरा होजाता है तब ऐसा कहतेहैं ॥

He that will steal an egg, will steal an ox

३२ (ही दैट स्टील एन ऐग बिल स्टील एन एक्स) तृणचोरसो वज्र चोर ॥ जिसने एकबार थोडासाभी कलुषित कर्म किया तो फिर उसके विशेष वैसेही कर्म करने पर भरोसा आने लगता है तब यह कहावत कहतेहैं ॥

Expect not all at a time

३३ (एक्स्पेक्ट नाट आल एट ए टाइम) दोनों

हाथ लाडू नहीं खाये जाते ॥ जो आदमी लाभ दायक सबही काम जल्दीसे इकदम करनेके लिये छट पटाते हैं उनके उपदेशार्थ यह कहावत है ॥

Fancy passeth beauty.

३४ (फैन्सी पासेथ ब्यूटी) मन मिले जिसकी जाति क्या पूंछना ॥ जब किसी आदमीको जो पसंद आया उसके विषयमें सर्वप्रकार के अच्छे बुरे निर्णय जब व्यर्थ जातेहैं तब ऐसा कहतेहैं ॥

Fetters though made of gold are fetters still

३५ (फैटर्स दो मेड आफ् गोल्ड आर फेटर्स स्टिल) सोनेकी बेड़ी क्या बेडी नहीं कहलाती ॥ यद्यपि पदार्थ एकही आकारके व एकसेही सुखदाई दुःखदाई हों पर उनको समय अथवा मूल्य या उनकी अवस्थाके अनुसार मान्य दिया जाताहै तब यह कहावत कहते हैं

Ever spure, ever bear.

३६ (इवर स्प्यौ इवर बैर)मियां जोड़े पलीर खुदा उठावे कुप्पा ॥ जब लोभी आदमी अपने

पेटमें दाव मारकर कौड़ी २ करके बहुतसा धन एकत्र करलेवे ओर भाग्य वशात् सबका सब नष्ट होजावे तब ऐसा कहतेहैं ॥

Follow the river & you will get to the sea

३७ (फालो दि रिवर एन्ड यू विल गैट टू दि सी) पूंछते २ लंका जाय ॥ किसी कामको सिद्ध करनेके लिये जो एक सीधी रीति दृढतापूर्वक पकड लेकर काम सिद्ध कर लिया जाता है तब यह कहावत कहतेहैं ॥

A gambler & a swinder are near neighbours

३८ (ए गेम्बलर एन्ड ए स्विन्डलर आर नियर नेबर्स) चोरका भाई उचक्का ॥ जो दो बुरे काम करनेवाले आपस में मिलकर एक दूसरेके सहायक होतेहैं तब यह कहावत कही जातीहै ॥

Gold cures & Doctor takes the fee

३९ (गॉड क्योर्स एंड डाक्टर टेक्स दि फी) खुदा चंगाकरे डाक्टर फीस मांगे ॥ जब काम तो

कोई दूसरा करै और फल दूसरा पावे तब ऐसा कहतेहैं ॥

He that wears black. must hang a brush at his batch

४० (ही दैट वेअर्स व्लैक मस्ट हैङ्ग ए ब्रुश एट हिज़ बैच) भेड़िया धसान ॥ संदवकी चालको जब सब आदमी विना निर्णय अंगीकार या ग्रहण किये जातेहैं तब ऐसा कहा जाताहै ॥

He robes his belly to provide for his back.

४१ (ही रोव्स हिज़ बैली टू प्रोवाइड फार हिज बैक) घरमें ऊंदरे डंड पैलें, वाहिर वडी २ वाते मारें ॥ जिसके घरमें पैसा तो है ही नहीं पर लोगोंमें वडी २ शेखी हांकता है अथवा चने तो खाने को न मिलें पर चांवल बतलाताहै तव यह कहावत कहतेहैं

He adopts new views for loaves & fishes

४२ (ही इडाप्ट्सन्यू न्यू फार लूवस ऐन्ड फिशेश) खानेके पीछे वावा होना ॥ जब आलसी अथवा

निरुद्योगी पुरुष खानेसे तंग होजाते हैं यद्यपि ज्ञान और विवेक कुछभी नहीं पर पेट पोषणके बावा [साधु] बनजाते हैं ॥ जैसा कहाहै--नारि मरी घर संपति नासी, मूड मुडाय भये सन्यासी ॥ ऐसे लोगोंके लिये यह कहावतहै ॥

If one will not another will

४३ (इफ वन विल नॉट अनादर विल ॥ जहां कूकड़ा होता क्या वहीं सुबह होता ॥ यदि कोई आदमी इस बातका घमंड करे कि अमुक काम मेरे विना न होगा यह विचार निर्मूल है ऐसे निर्मूल विचार करनेवालोंके लिये यह कहावत कही जाती है ॥

If a man once fall all will tread upon him.

४४ (इफ ए मैन ओवंस फाल ऑल विलट्रीड अपान हिम) मरतेको सब मारे ॥ जो लोग दीनहैं उनहीको सब सतातेहैं क्योंकि वे बदला नहीं लेसक्ते, और ऐसेही अवसर पर यह कहावत कही जातीहै ॥

It is not lost what a friend gets

४५ (इट इज नॉट लास्ट व्हाट ए फ्रेन्ड गेट्स) घी

खिचडीमें ढुला॥ जिससे जिसका मिलना संभवहै यदि विना प्रेरणाके वह नियमित समयके पहिलेही स्वयमेव मिलजावे अथवा जिसका जिससे मिलना संभवहै उसीकी ओर ढुले तो ऐसा कहतेहैं॥

Like dog & cat

४६ (लाइक डाग एन्ड कैट) बिल्ली चूहे की दोस्ती॥ जब दो ऐसे व्यक्तिकी मित्रता हो जिनमें एक दूसरेको डरता हो अथवा दूसरा उसे भयभीत किये रहता हो तब ऐसा कहते हैं॥

A man is known by the company he keeps.

४७ (ए मैन इज नोन बाइ दिकम्पनी ही कीप्स) जैसे अन्नकी तैसी डकार॥ जब जैसे आदमी को तैसेही सुहबती मिल जाते हैं तब ऐसा कहा जाताहै॥

Marriage is honorable in all & the bad indefolcd

४८ (मेरेज इज आनरेबिल इन आल एन्ड दि बैड ऐनडी फाइल्ड) सासरे जानेवाली कोई छिनाल

नहीं कहलाती ॥ जो आदमी उचित कार्य करता है उसकी जब कोई निन्दा नहीं करता तब ऐसा कहतेहैं।

Money my god & woman my guide.

४९ (मनी माई गाड वूमन माइ गाइड) पैसा परमेश्वर और स्त्री अगुआ पैसेसे सबकाम संसारके चलते हैं इसी प्रकार स्त्रीसे अर्थ धर्म काम मोक्ष आदि प्राप्त होसक्ते इसलिये अथवा जो लोग पैसेकेलिये धर्म कर्म और स्त्रीके लिये सब सत्कर्मोंको त्याग देतेहैं तो उनके लिये ऐसी कहावत कही जातीहै ॥

No fishing like fishing in the sea

५० (नो फिसिंग लाइक फिसिंग इन दिसी) मारनातो हाथी लूटना तो भंडार ॥ जो अच्छे कामको करना तो बहुतही अच्छा करना और जो बुरा करना तो बहुतही बुरा करना इस शिक्षाके लिये यह कहावत है ॥

A pitcher that often goes to the well breaks at last.

(५१) एपिचर देट ऑफन गोज टु दि वेल ब्रेक्स एट लास्ट) पापका घड़ा एक दिन फूटता है ॥

जो (पाप) कर्म गुप्त रीतिसे किये जाते हैं वे एक न एक दिन प्रगट हो ही जाते हैं तब ऐसा कहा जाता है ॥

Plenty makes daidty

५२ (प्लेन्टी मेक्स डेन्टी) जितना गुड़ डालो उतनाही मीठा ॥ किसी काममें जितना श्रम व्यय अथवा विचार अधिक किया जावेगा उतनाही बनेगा यह शिक्षामय कहावत है ॥

Small rain will lay a great dust

५३ (स्मालरैन विल ले ए ग्रेट डस्ट) अधूरो घड़ा छलकै ॥ जब अधूरे काममें गड़बड़ और बुराई उत्पन्न होती तब ऐसा कहा जाता है ॥

To stop the mouth of a dog with a sop.

५४ (टू स्टॉप दि मौथ ऑफ ए डॉग विथ ए सॉप) भूकते कुत्तेको रोटीका टुकडा ॥ जो मनुष्य

झंगड़ाई करता है वह कुछभी पाने पर जब चुप चाप हो जाता है तब ऐसा कहते हैं ॥

Strive not to vie with the powerful.

५५ (स्ट्राइव नॉट टू वाइ विथ दि पावर फुल) बड़े के साथै छोटा जाय ॥ नहीं मरै तौ मांदो थाय ॥ जब कोई छोटा मनुष्य किसी भी विषयमें बडे आदमी की बराबरी करके दुःख पाता है तब ऐसा कहते हैं ॥

Such as boast must foil much

५६ (सच एज बोस्ट मस्ट फैल मच) अहंकार मौतकी निशानी है ॥ जब घमंडी आदमी मरण प्राय दुःख पाते तब ऐसा कहा जाता है ॥

Solitude is at times tue best society.

५७ (सालिटयूड इज एट टाइम्स दि बैस्ट सुसापटी) जंगळ में मंगळ॥ जब किसी समय पर जिस काम व स्थानमें सुख होनेकी संभवता किसीको नहीं है और यदि किसीको सुख प्राप्त होवे तो ऐसा कहा जाता है ॥

Set bounds to your zeal by discretions

५८ (सेट् बॉन्ड्स टू यूअर जील बाइ डिस-क्रीशन) मनके घोड़ेको विवेक की लगाम ॥ इस संसारमें चित्त घोड़ेसे बढ़कर चंचल है यदि वह विचार रूपी लगाम के द्वारा वश न किया जावे तो हानि होता है इसलिये हरएक बातमें जो विचाराविचार न करके दिलके माफिक करते हैं तब ऐसा कहा जाता है ॥

Sweet are the slumbers of the virtuous.

५९ (स्वीट् आर दि स्लम्बर्स ऑफ दि वरचु-अस) सांचा सुखसे सोवे ॥ जब कोई बात प्रगटमें बुरी मालूम होती हो और परिणाम में अच्छी तथा लाभकारी हो जैसे कडवी औषधि तब यह कहावत कही जाती है ॥

Set not your house on fire to be revenged of the moon.

६० (सेट नाट यूअर हौस ऑन फायर टू बी रिवे

अदिमून) चन्द्रमासे वैरलेनेको घर न जलाओ ॥ जब कोई नुकसान करते बडेसे वैर तथा बदला लेनेको तय्यार होता है तब ऐसा कहते हैं ॥

Soft woods ate hard argeumnts

६१ (साफ़्ट् वर्ड्स् आर हार्ड आर्ग्युमेन्ट्स) मृदु भाषण बडी विनती है ॥ मीठे वचन बोलने वालेके सब मित्र तथा सहायक होते जिससे उसका कैसा भी कठिन काम क्यों न हो शीघ्र सिद्ध हो जाता है तब ऐसा कहते हैं ॥

The burnt child dreads the fire.

६२ (दिवर्न्ठ चाइल्ड ड्रेड्स दि फायर) दूधका जला छांछ फूंक २ कर पीता है ॥ जो आदमी असावधानीसे एकवार किसी काममें हानि उठा लेता है और जब कभी उससे सहल भी काम करना होता है तो बडी सावधानीसे करता तब ऐसा कहते हैं ॥

The full stomach loaths the honey comb

६३ (दि फुल स्टमक लूथ्स दि हार्न कोम्ब) भरे

पेटपर शक्कर खारी ॥ जब कोई भर पेट खा चुकता है फिर उसे कैसा मीठाभी पदार्थ क्यों न खिलाओ बे स्वाद लगता है तब ऐसा कहते हैं ॥

Throw not pearls before the swine.

६४ (थ्रो नॉट् पर्लस बिफोर दि स्वाइन) भैंसके आगे भागवत॥ जब अज्ञानी तथा अरसिकके सन्मुख अच्छी २ बातें कही जावें और वह न उसे समझे न उससे प्रेम करे जिससे कहनेवाले का परिश्रम व्यर्थ जावे तब ऐसा कहा जाता है ॥

Te deal fools dole

६५ (टुडील फूल्स डोल) घर बेचकर यात्रा करना ॥ जो आदमी किसी कामका परिणाम जानता है कि बुरा होगा क्योंकि अभी इसके करनेमें असमर्थ है उतने परभी उसी कामको करनेके लिये सर्वस्व खोकर कष्ट उठावे तब ऐसा कहते हैं ॥

इति द्वितीय कुसुम ।

तृतीय कुसुम ।

गुजराती ।

१ अति लोभ, ते पापनुं मूल ॥ अधिक लोभके कारण बहुतसे पापकर्म होतेहैं इस लिये यह शिक्षामय कहावतहै ॥

२ अन्नमारे, अन्न जिवाड़े ॥ जब भोजन प्रमाणसे किया जाताहै तो जीवन कारण होताहै परंतु वही जब बे प्रमाणसे खाया जावे तो मृत्युका कारण होताहै इसी शिक्षाके लिये यह कहावतहै ॥

३ अणी चूक्यौ, सौ बरस जीवे ॥ जब कोई आदमी दावमें (मौकेपर) आनेपर बचकर बहुत दिनके लिये अवकाश पाजाताहै तब अथवा क्रोधका अवसर टलजानेपर बहुधा फिर बच जाताहै तबभी ऐसा कहतेहैं ॥

४ आवडे नहिं धेश, नेराधवां पेश ॥ किसीके

काम करनेकी रीति ज्ञात न होनेपर जब कोई उसके करनेको आगे २ दौड़ताहै तब ऐसा कहा जाताहै ॥

५ आगुली चाटें पेट भराय ॥ जब क्रमशः थोड़ा २ एकत्र करनेसे कुछ समयमें अधिक (समूह) होजाताहै तो ऐसा कहा जाताहै ॥

६ आंखने नहीं गमें, तोह्योंने शूंगमें ॥ जब कोई पदार्थ देखनेमें अच्छा नहीं लगता और उसका उपभोग करना आवश्यक होताहै तो ऐसा कहा जाताहै

७ उड़तो पहाड़ो पगपर लेवों नहीं ॥ कोई उपद्रव अपनेही हाथ अपने ऊपर जब कोई डाल लेता तब ऐसा कहा जाताहै ॥

८ ऊजड़ गाममी अरैंड़ो प्रधान ॥ किसी उत्तम पदार्थकी अस्तत्वतामें जब मध्यम तथा निकृष्टको मान मिलताहै तब ऐसा कहा जाताहै ॥

९ ऊपर वागा, ने मांहें नांगा ॥ जब कोई ऊपर तो बड़ी टीपटाप रखताहो परभीतर खाली खोखलाहो तब ऐसा कहतेहैं ॥

१० ऊंघतानों पाडो, ने जागतानी पाडी ॥ किसी कार्य जो सावधान रहता वह लाभ पाता और जो आलस्य करता वह हानि उठाताहै तब ऐसा कहतेहैं ॥

११ ऊंघता सिंहने, जगाड़वौ ॥ जब प्रबल शत्रुको जो अपनी ओरसे अचेतहो स्वतः चैतन्य करै तब ऐसा कहतेहैं ॥

१२ ऊंटने शिंग, जोइये नथी आंख्यां ॥ जो कोई किसी विषयमें असंभव संयोग मिलाताहै तब ऐसा कहतेहैं ॥

१३ एक अंगारौ, सौमन जारवाये ॥ एक तेजस्वी अपने तेजद्वारा जब सैकड़ोंको पराजित करताहै तब ऐसा कहतेहैं ॥

१४ एकना पागड़ी, बीजाने पहेरावबी ॥ जब एकके जिम्मेका काम दूसरेके जिम्मे किया जावे तब ऐसा कहतेहैं ॥

१५ एक कोहेली मछली, आखा तालावने गंधेलुं करै॥ समाजमें जब एक दोषीके कारण सब दोषी ठहराये जातेहैं तब ऐसा कहा जाताहै॥

१६ एक डूबताँ, बीजाने डुबाड़े॥ जो आदमी अपना नुकसान होनेपर दूसरेकाभी नुकसान होना विचारतेहैं तब ऐसा कहा जाताहै॥

१७ एक लिख्यानें, सौ बक्या॥ जब किसी लिखीहुई बातके विरुद्ध कोई जबानी सौ प्रमाणभी देताहै पर नहीं माने जाते तब ऐसा कहतेहैं॥

१८ एवूं शोतुं शूं कामपहरिये कै कानटूटै॥ जब कोई आदमी बहुमूल्य और अच्छा पदार्थ दुःख होते हुएभी ग्रहण करताहै तब ऐसा कहतेहैं॥

१९ अंधा आंगल आरसी, नेबहरा आंगल गान॥ मनुष्यमें जिसके गुण पहचाननेकी शक्ति नहीं और वह गुण उसके सन्मुख प्रकाशित किया जावे जिसे वह कुछभी समझे तब ऐसा कहतेहैं॥

२० अंधे मुल्ला, ने फूटी मसजिद ॥ जैसेको तैसा संयोग मिलजाता तहाँ ऐसा कहतेहैं ॥

२१ कमजोर, ने गुस्सा घोत ॥ जब निर्बल आदमी लड़कपनकी बातें करता तब ऐसा कहतेहैं ॥

२२ कथा सांभली फूट्या कान ॥ तेयुन आयौ ब्रह्मज्ञान ॥ जब सदैव चिक्षा लेते २ या शास्त्र सुनते २ कुछ असर नहीं होता तब ऐसा कहतेहैं ॥

२३ कहवां करतां, करवुं भलूं ॥ जो मनुष्य बार २ कहतेहैं किमैं अमुक काम करूंगा पर नहीं करते तब ऐसा कहा जाताहै ॥

२४ कहवुं थोडूं, करणूं घणू ॥ जो आदमी कहते तो बहुतपर करते थोड़ाहैं उनके शिक्षार्थ यह कहावत कही जातीहै ॥

२५ कर्णा आना आपथीं, कईं बरसाद अटके जो होनाहै वह किसीके संकल्प विकल्पसे नहीं मिटती तब अथवा कोई उसके न होनेके लिये संकल्प विकल्प करे तोभी ऐसा कहतेहैं ॥

२६ कक्का नामें, केरुन जाणे, नें हूं मोटौ विद्वान ॥ जो किसी विषयमें कुछ तो जानतेही नहीं परंतु वड़े ज्ञातावने फिरतेहै उनके लिये ऐसा कहा जाताहे ॥

२७ काने झाल्या, हाथीया नरहे ॥ जब कोई छोटा आदमी तुच्छ प्रयोजनमें वड़ेको दवाना चाहता तव ऐसा कहतेहैं ॥

२८ कुठाम गुंमडौने ससुरवैद ॥ जहाँ किसी वातके कहनेका तो अवसर नहीं और कहे विना चलता नहीं अथवा दुःख उठाना पड़ताहै तव ऐसा कहतेहैं ॥

२९ कुतरांनी पुंछडी वांकी नेवांकी ॥ किसी आदमीके सुधारनेको जव वहुत उपाय निष्फल जातेहैं तव ऐसा कहा जाताहै ॥

३० कीड़ी सांचरे, ने तीतर खाय ॥ जव

किसीके बड़े परिश्रमका कमाया द्रव्य बलवान् वैरी छीनलेवे तब ऐसा कहते हैं ॥

३१ खेती धनकी नाश, जो धनी न होवे पास ॥ जो आदमी दूसरेके भरोसे खेती करके हानि उठातेहैं तब ऐसा कहा जाताहै ॥

३२ खेड़ खातरने पानी, करमने आणो ताणी जब अपने हाथसे बुरा काम करके कोई भाग्यको दोष देताहै तब ऐसा कहतेहैं ॥

३३ खोटौ रुपयौ चलकै घणों ॥ जो मनुष्य दोषी होताहै वह अपने तई अदोषी प्रगट होनेका उपाय करके ऊपरी पन लोगोंको जब अच्छा वतलाताहै तब ऐसा कहतेहै ॥

३४ गाय दोही कुतरीने पावीं ॥ जब परिश्रमसे उपार्जन किया हुआ उत्तम पदार्थ उन लोगोंको खिलाया या देदिया जावे जिनसे कुछभी स्वार्थ तथा परमार्थ नहीं होनाहै तब ऐसा कहतेहैं ॥

३६ गाय ऊपर पलाण ॥ जब कोई कार्य असं-भव अथवा विरुद्ध किया जाताहै तब ऐसा कहतेहैं ॥

३७ गधानी लात थी, गधौ न मरी सकै ॥ जब बराबरी वालेके द्वारा बराबरी वालाही अधिक हानि नहीं उठा सक्ता तब ऐसा कहते हैं ॥

चार मलें चोटला, त्यां भांगें ओटला ॥ जहाँ चार आदमी एकत्र होकर मन माना काम करडालते तब ऐसा कहते हैं ॥

३८ जेनों काम तेनों थाय, बीजौ करै तो गोता खाय ॥ जब कोई मनुष्य अपने उद्यमको छोड दूसरे के उद्योगको लाभके लिये करता है तो जब उसमें अनजान होनेके कारण बहुत हानि उठाता है तब ऐसा कहते हैं ॥

३९ जेनी आंखमा कामलौ होय, ते सर्व ठि-काणें पीळुं देखे ॥ जो जैसा होता है सबको वैसाही समझता है तब ऐसा कहते हैं ॥

४० जेनी घट्टी ए दलवुं, तेना छोकराना गीत गाववां॥ जिसकी ओरसे जिसका निर्वाह होता हो जब वह उसकी प्रशंसा करता है तब ऐसा कहते हैं अथवा जो निन्दा करे तो शिक्षाके लिये ऐसा कहतेहैं।

४१ जेनी नियत पाक, तेना म्होंमां खाक॥ जेनी नियत खोटी, तेना म्हों मां रोटी॥ जब अच्छे और सज्जन मनुष्य को हानि होती है या पेटभर भोजन नहीं मिलता और लुच्चे लफंगे हलुवा पूडी उडाते हैं (जैसा हालजमाना है) तब ऐसा कहते हैं॥

४२ जेनुं बोल्युं गमें नही, तेनुं काम शुं गमें॥ जब किसीकी बात ही बुरी लगे और कोई कहे कि उसका काम अच्छा लगेगा तब ऐसा कहते हैं॥

जोशीनां रांड़े नहीं, नें वैद्य नां मरै नहीं॥ जब किसी विद्या द्वारा लोग दूसरोंका तो भला करता हो पर स्वतः हानि उठावे तब यह कहावत कहते हैं॥

४४ ज्यारे वार वागे, त्यारे लाडना चूल्हा लागे ॥ जो काम समय पर होनेसे प्रिय लगता है वही असमय पर होनेसे जब अप्रिय लगता है तब ऐसा कहते हैं ॥

४५ जे बापनों नहीं थाय, ते कोई नो नहीं थाय ॥ जब कोई खास अपनेही आदमीके काम न आवे तब ऐसा कहते हैं ॥

४६ झूटानुं, आयुर्दा चार घडी ॥ जब झूठा आदमी थोडीही देरमें परास्त हो जाता है तब ऐसा कहते हैं ॥

४७ टाढा लोहीनुं, सुकौ रोटलौ सारौ ॥ जब विना क्लेशके थोडीही प्राप्तिमें संतोष किया जाता तब ऐसा कहते हैं ॥

४८ ठीकरी, घडा ने फोड़ै ॥ जब कभी छोटेके द्वारा वडेको हानि पहुंचती है या आश्रय दाताकी ओर से हानि पहुंचती है तब ऐसा कहते हैं ॥

४९ डाही सासरे न जाय, गांडी ने शिखापण दे॥ जब कोई आदमी स्वतः किसी कामको न करके उसी कामको करनेके लिये दूसरेको शिक्षा देवे तब ऐसा कहते हैं॥

५० तारानुं मौत पाणी मां॥ आदमी जो कु काम सदैव करता है या जो कु उद्योग जिसका है उसी के द्वारा वह किसी न किसी दिन हानि यामौत पाता है तब ऐसा कहते हैं॥

५१ तूट्या मन, ने वींध्या मोती, फरी ने संधाया॥ जब दो आदमियोंका दिल बिगड जानेपर फिर नहीं मिलता तब ऐसा कहते हैं॥

५२ थुकीनु, चाटबु॥ जब कोई आदमी बात कहकर बदल जाता है तब ऐसा कहते हैं॥

५३ थोड़ीसे खाना, वड़े सूं रहना॥ जो आदमी खाने पीनेमें अधिक व्यय करके अपनी प्रतिष्ठा खोते हैं उनके शिक्षार्थ यह कहावत है॥

५४ दमड़ी कीरांई, नें सासू वहूकी लड़ाई ॥ जब थोड़ीसी बातके लिये आपसमें झगड़ा किया जाता है तब ऐसा कहते हैं ॥

५५ दमड़ीना दश सोगन ॥ जब लोग थोड़ी सी बातके लिये बहुतसी कसमें खाते हैं तब यह कहावत कही जाती है ॥

५६ दरजी मल्यौ वाटमां, नेगजने कातर हाथमां ॥ जब मनुष्य अपने कामका हथियार सदैव पास रखता है तब ऐसा कहते हैं ॥

५७ दहाड़े ऊंघे, नेराते जागे तेनें चोर पायें लागें ॥ संदेह स्थल व समय पर जब कोई चैतन्य रहकर किसीका घात न लगने देवे चाहे सहजमें असावधान रहता हो तब ऐसा कहते हैं ॥

५८ दरदीनीं गत, दरदी जानें ॥ जिसको जिसका मर्म ज्ञात है वही उसको जानता है तब ऐसा कहते हैं ॥

५९ दशेरानां दिवसे घोडु दौड़े नहीं तोशा कामनुं ॥ समयपर जो अपना हुनर नहीं बतलासक्का उसके लिये यह कहावत कहते हैं ॥

६० दहाड़े डोवौ नसूझे, नें रातेहीरा पारखे ॥ जो साधारण बातको जानता नहीं और कठिन बातको करना चाहे तब ऐसा कहते हैं ॥

६१ दाई अण आगल पेट छुपाववुं ॥ जो आदमी जिस विषयका भली प्रकार ज्ञाता है यदि उसी विषयमें कोई धोखादेवै तो ऐसा कहते हैं ॥

६२ दातारी दानदे, ने भंडारीनां पेटमां दुखे॥ जब दानी दान करताहो और सूम भंडारीको दुखहो तब ऐसा कहते हैं ॥

६३ दूधनुं दूध, नें पाणीनुं पाणी ॥ जहां यथार्थ न्याय होता तहां ऐसा कहा जाता है ॥

६४ दूधत्यां साकर, नें छांछत्यां मीठुं ॥ जिसकां जिससे मेल सोहता है उसीके साथ मिलाया जाता है तब ऐसा कहते हैं ॥

६५ दूध पाइने सांप उछेरवो ॥ जो लोग दुष्टको आश्रय देकर वा पालनकरके पुष्ट करता और कभीन कभी उसके द्वारा दुख उठाता है तब ऐसा कहते हैं ॥

६६ दांते दरद, नें माथे करज ॥ जिस प्रकार दांतकी पीड़ा वाला सदैव दुखी रहता है उसीप्रकार ऋणी दुखी रहता है यह यथार्थ कहावत है ॥

६७ देखतीं आंखें, कुवामां पड़वुं ॥ जो जान बूझकर असावधानी करके हानि तथा दुःख पाता है तब ऐसा कहते हैं ॥

६८ देश मूकिये, परदेश चालनें मूकिये ॥ जब लोग अपना देश छोड़ दूसरे देशमें जाकर वहांकी चाल चलने लगते तब ऐसा कहते हैं ॥

६९ नरेणातें, नखजकाटे ॥ जिससे या जिसके द्वारा कोई कार्य संपदान होता हो उसके द्वारा न करके दूसरेके द्वारा कोई करे तब ऐसा कहते हैं ॥

७० नवरौ नाई, पाटलौ मूँडे ॥ आदमी

बेकाम होने पर जब कोई ऐसा काम करने लगता है जिससे कुछ लाभ नहीं तब ऐसा कहते हैं॥

७१ न मामार्थी कहेणो, मामो सारो॥ यदि किसीके पास कोई पदार्थ अच्छा न हो पर साधारणही हो तब ऐसा कहते हैं॥

७२ नागौन्हाय शूं अने निचोवे शूं॥ जिसके जो पदार्थ नहीं उससे जब वही पदार्थ मांगाजावे तो ऐसा कहते हैं॥

७३ नाककापीने अशगुन करवां॥ दूसरेके बुरे करनेको जब कोई महान् कष्ट अंगीकार करलेता तब ऐसा कहतेहैं॥

७४ पडीगया, तौकै, जेवने नमस्कार कर्या॥ जब आदमीसे कोई ऐसा कार्य बन पडता है जिसके करनेकी आन्तरिक इच्छा नहीं है॥ तब वह उसको जान बूझकर करनेका बहाना बनाताहै तो ऐसा कहते हैं॥

७५ पहेली रातनां मरे, तेनी पाछली रात सुधे कौन रडे॥जब कोई कार्य अति दुखदाई होने पर कोई शान्तिदाता न होनेसे स्वतः संतोष करना पडता तब अथवा कोई ऐसा संयोग होजावे जिसका दुःख लाचार होकर जन्मभर भुगतना पडे तबभी ऐसा कहते हैं

७६ पानी वलोयें माखण न निसरे ॥ जब अयोग्य द्वारा कोई परिश्रम करके भी सुयोग्यफलचाहे तब ऐसा कहते हैं ॥

७७ पित्तलनें, सौ भट्टी मांनाखे, पण सोनु न थवाय ॥ निकृष्टको उत्तम करनेके लिये कैसा ही कठिन उपाय क्यों न करौ पर निष्फल होता है तब ऐसा कहतेहैं ॥

७८ पीठ पर मारौ, पेट पर न मारौ ॥ जब किसी अपराधमें ऐसा दंड दिया जावे तो दोषीके भोजन निर्वाहमें वाधक हो तब दयार्द्र चित्त पुरुष ऐसा कहते हैं ॥

७९ पेट करावे वेठ ॥ जब पेट अर्थात् भोजन निर्वाहके, मनुष्य निन्दित अनिन्दित, करनेके, न करनेके, कार्य करने लगता तब ऐसा कहते हैं ॥

८० पैसा दारनां छोकरा, घुंघरे रमै ॥ जब धनवान् पुरुष धनके बलसे संभव, असंभव कैसाभी कार्य क्यों न हो, कर डालता है तब ऐसा कहते हैं ॥

८१ पैसा वालानीं, बकरी मरी ते वधा गामें जाणी गरीबनीं छोकरी मरी, ते कोई ए नहीं जाणी ॥ वडे तथा प्रतिष्ठित पुरुषकी कोई भी क्यों नहो सबमें शीघ्र प्रगट होजाती और सहानुभूति प्रगट करनेको दौडते हैं पर गरीबकी कोई कानोंकान नहीं जानता तब ऐसा कहते हैं ॥

८२ फरैते चरै, ने बांध्युं भूखों मरै ॥ जो आदमी उद्योग करता है वह सो लाभ पाताहै पर आलसी बेठे २ भूखां मरते हैं॥ यह शिक्षार्थ कहावतहै।

८३ बन्ने बाजुनी ढोलकी वजाववां ॥ जब

कोई आदमी छुपी हुई रीतिसे प्रसिद्ध होना चाहता तो शिक्षार्थ यह कहावत कहते हैं ॥

८४ बलतां मां घी होमवुं ॥ जब किसीके क्रोधित होनेपर फिरभी कटाक्षपूर्वक मर्म भेदी वचन कहे जावे तब ऐसा कहतेहैं ॥

८५ बयड़ीनां पेटमां, छोकरूं रहे, पण बात रहे नहीं ॥ जिसके पेटमें बड़ी ३ बातें तो रहैं पर छोटी बात न ठहरे तब ऐसा कहतेहैं

८६ बायड़ी जुवे लावतो, माजुवे आवतो ॥ स्त्री यह देखती कि मेरा पति कुछ लावे और माता देखती किं मेरा पुत्र कुशलसे आवे एकही विषयमें भिन्न २ लोगोंके भिन्न२भाव प्रगट करनेके लिये यह कहावतहै

८७ बायडी बगडी तेनों भवबगडो ॥ जिसके घरमें कुलक्षणा नारि होनेसे सदैव कलह रहती उसके लिये यह कहावतहै ॥

८८ बारह बरसे आवो, बोलों, तारो नसो

जो जाइये॥ जो आदमी कभी बोले नहीं और जब बोलेभी तो दुर्वचन, तब ऐसा कहतेहैं॥

८९ बाबो जपै, नेजे आवे, तेखपै॥ जो दूरसे देखनेमें सन्तबने बैठेहैं जो आजाता उसे नहीं छोड़ते तब ऐसा कहा जाताहै॥

९० विवाह पहेले माडवो शूं॥ किसी कार्यके अंतर्गत जो काम क्रमसे करनाहो पेश्तरही करलिया जावे तब ऐसा कहतेहैं॥

९१ बुरा निवाला खाइये, पण बुरा बोल न बोलिये॥ यह शिक्षार्थ कहावतहै॥

९२ बीज वरणी परणी, बहु सुखपामछे॥ जब दूसरे विवाहकी स्त्री पतिप्रेमद्वारा अधिक सुखी होती तब ऐसा कहतेहैं॥

९३ बीबाथया वर जोग, त्यारे मियांथया गोर जोग॥ जब बुढापेमें विवाह करनेसे ऐसी अनुचित अवस्था प्राप्त होतीहे तो ऐसा कहा जाताहै॥

९४ बीछू कामंतर न जाने,ने सांपके बिलमां हाथ डालें ॥ जो थोड़ासाभी ज्ञान न रखते हुए बड़े ज्ञानमय विषयमें बैठना चाहते उनके लिये ऐसा कहा जाताहै ॥

९५ वैसवानी डालन कापो, खाओ तेनुं न खोदो ॥ जब कोई कृतघ्नी अपने स्वामी या उपकारीका बुरा करताहै तब यह कहावत शिक्षार्थ कही जातीहै ॥

९६ बे दिल दोस्त दुशमनकी गरज सारे ॥ जहां दो मित्रोंके दिल जुदे २ होनेसे शत्रुको अवसर मिलजाताहै तब ऐसा कहतेहैं ॥

९७ बरैमानी, तेने घरै मानी ॥ जब कोई [illegible] घरके स्वामीको स्वीकार करलेनेमें [illegible] पड़ती तब ऐसा कहतेहैं ॥

९८ वैकुंठ सांकड़ा, ने [illegible] ॥ [illegible] स्थानमें बहुतका समावेश [illegible] तब ऐसा कहतेहैं ॥

९९ बलतुं घर भाडे न लेवुं॥ प्रत्यक्षमें जिसका नाश होरहाहो जब कोई जान बूझकर उसका आश्रय लेनेकी इच्छा करै तब ऐसा कहतेहैं ॥

१०० भरम भारी. गजऊं (खींसा) खाली ॥ जिसके पास कुछभी नहो पर सब लोगोंको उसके पास होनेका भ्रम बनारहे और उसका अन्तभी कभी न निकले तब ऐसा कहतेहैं ॥

१०१ भांडुआ तें, भीड न भागै ॥ जब कोई निस्तेज पुरुष तेजस्वीके काम सिद्ध करनेका साहस करताहे तब ऐसा कहते ॥

१०२ भूस्या कुत्ता काटै नहीं ॥ जो आदमी क्रोधमें आकर बहुत बकबक करलेताहै और किसीको आन्तरिक पीडा नहीं पहुंचाता उसके लिये यह कहावत चरितार्थ होतीहै ॥

१०३ माथुं आपै, ते मित्र ॥ जब कोई सहजमें तो मित्रता जनावे पर आपत्तिके समय मुंह फेरे तब ऐसा कहते हैं ॥

१०४ माथे पडी सगा वापनी॥ जब कोई बात जान बूझकर या अचानक आपडती है और उसे भोगना पड़ता है तब ऐसा कहते हैं ॥

१०५ मारवी मारवी ने, चढाववी तोप ॥ जब कोई आदमी छोटेसे कामके लिये भारी तय्यारी करे तब ऐसा कहते हैं ॥

१०६ माटी मादियाने, वैयर नादिया ॥ जब किसी स्त्री का पति निर्बल दूबला और वह बलवान् हृष्ट पुष्ट होती तब ऐसा कहते हैं ॥

१०७ मारी पडौसण चावल छडै ॥ ने म्हारे हाथ फफौला पडै ॥ जब कोई आदमी ऐसी सुकुमारता जनावे जो असंभव प्रतीत हो तब ऐसा कहतेहैं

१०८ रूपनी रड़े, अने कर्मनी खाय ॥ जब कोई खूबसूरत या उद्योगी पुरुष भूखों मरता और कुरूप या शान्तिचित्त भाग्यवशात् आनन्द उड़ाता है तब ऐसा कहते हैं ॥

१०९ वणशे खीचड़ी हलावी, वणशे दीकरी भणावीं ॥ जिस तरह खिचड़ी हिलानेसे सुधरती उसी प्रकार पुत्री शिक्षा देनेसे सुधरती है शिक्षार्थ कहावतहै

११० शत्रुने रोग, ऊंगता छेदना ॥ जो अपना दुःखदाई हो उसे छुटपनहींमें नाश कर देना नहीं तो बढनेपर दुःख देता है और नाश होना भी कठिन हो जाता है यह शिक्षार्थ कहावत है ॥

१११ शियाळ ताणें शीम भली ॥ ने कुतरू ताणें गाम भली ॥ जो जिसका वास स्थान है अन्तमें वह उसी स्थानको अच्छा समझकर जाता है यह यथार्थ कहावत है ॥

११२ शेठ ना साळा सौ थवा जाय ॥ बडे आदमीसे (चाहे लघुतर हो चाहे गुरुतर) सब संबंध करना चाहते तब ऐसा कहाजाताहै ॥

११३ शेर ना माथे सवाशेर ॥ जबकिसी जबरदस्तका मुकाबला ऐसे से पड़जावे जो उससे भी जबरदस्त हो तब ऐसा कहते हैं ॥

११४ सुतार तुं मन वावटी ए ॥ जिन पदार्थ से किसीका सदैव निर्वाह होता है वह दूसरी बातोंपर ध्यान न करके अपने प्रयोजनीय बात पर ध्यान देता है तब ऐसा कहते हैं ॥

११५ सोतुं देखे, मुनिमन चाले ॥ अच्छी वस्तु देखकर जब अच्छे २ लोग मोहित हो जावे तब ऐसा कहा जाता है ॥

११६ साठी बुद्धि नाठी ॥ जब जवान आदमीको वृद्धकी शिक्षा पसंद नहीं होती तब वह ऐसा कहकर उसकी बात काट देता है ॥

११७ सांपनां पग, सांप जाणे ॥ जब किसीका हाल उसके सिवायकोई दूसरा नहीं जान सका तब ऐसा कहते हैं ॥

११८ सर्प मरै नहीं, नें लाठी भांगे नहीं ॥ जहां किसी दोमेंसे एककी हानि होकर कार्य सिद्ध

होता हो वहां जब दोनोंको बचाकर काम साध लिया जाता तो ऐसा कहते हैं ॥

११९ सोनुंने सुगंध होय ॥ जब किसीमें दो उत्तम गुणहों तो ऐसा कहते हैं ॥

१२० हाथे ते साथे ॥ जब पासहीके पदार्थसे आदमीका काम निकलता है तब ऐसा कहा जाताहै॥

१२१ हरि गुणगाती, नें पेटमां काती ॥ जो ऊपर बगुलाभक्त होकर हृदयमें कपटी रहते उनकी समताको यह कहावत कहते हैं ॥

१२२ होठ बाहिर, ते कोट बाहिर ॥ जब कोई बात मुंहसे निकलतीहै कि फिर उसका फैलना नहीं रुकसक्ता जब कोई आदमी दूसरेसे मनकी बात कहकर चाहतेहैं कि दूसरोंपर प्रगट नहो तब ऐसा कहा जाताहै

१२३ हाथी पछवाडे, कूतरा भूस्याज करे ॥ जब बडे आदमीका कई तुच्छ शत्रु कुछभी नहीं करसके तब ऐसा कहा जाता है ॥

१२४ हाथ ना आवेली, बाजी, खोवती नथी॥ मौका पाकर फिर किसी बातको हाथसे जाने न देना चाहिये शिक्षार्थ कहावत है ॥

१२५ हैये छै, पण होठें न थीं ॥ जब कोई बात किसीसे कहना अवश्य होती पर भूलजाती या कहनेके समय ही स्मरण नहीं रहता तब ऐसा कहतेहैं

नीचे लिखी कहावतों का स्पष्ट अर्थ है ॥

१ अकर्मी धणी, वैयर परशूरी

२ आनिर्मो नाख्यौ हाथ न आवे

३ अति वेपारे दीवालुं,ने अति भक्तिये छिनालुं

४ अफीमनों जीवड़ौ शाकरमें न जीवे

५ अवसर आवी पद्मनी

६ अंधेरी रातने मग काला

७ आजैं हंसेने कालै रड़ै

८ आशिर्वादनों उधारौ शौ

९ आवाने ईंटमारे, तो पण फल आपै
१० आखौ दहाड़ौ नांगौ, ने जी मती वखत
११ आखो लाडूं कई इकदमन खवाय
१२ आगे ओढे घूंगटौ ताणे, ताके लक्षण कोई वागौ
१३ आचार पण विचार नहीं
१४ आणुं करवा गयौ,ने वहू भूल आव्यो न जाने
१५ ईजार पहेरे, ते पशावनी जगा राखीने
१६ उसको तो दोसींग था
१७ उलटी गंगा चालवी
१८ ऊंट तोलाय, त्यांगधेड़ा धड़े जाय
१९ एकज लाकड़िये सौने हाकवूं
२० कन्या पारकौ धनछै
२१ कागड़ौ, कोयल ने हंसे
२२ काणी सहेवाय, पण फूटी न सहेवाय
२३ काम परथें कारकून उतयाँ, कोंड़ीना

२४ काम कामने शिखावै
२५ कौणना जोड़ा कौणना पगमां
२६ कोल नूं काम पड़्यौ, त्यारे डूंगरपर चढबैठो
२७ गगन साथे वात करवी
२८ गधा पच्चीसीमें पड़शे, त्यारे खबर पड़शे
२९ गोर होय, त्यां मक्खी आवे
३० घणौ घस्यांथीं चंदनतें आग नीसरै
३१ घर धणीने कहै जाग, नें चोरने कहै मूंस
३२ घेर घट्टी, नें पर घेर दळवां जाय
३३ जीभ मां जहर, ने जीभमां अमृत
३४ जूंआके भयतें लुगड़ो न काढ़ीन खाय
३५ जेनां ऊपर पड़ै ते जाणे
३६ जेनां हाथ ऊपर तेना बोल ऊपर
३७ जे सारं नहीं करै ते मित्रकरै
३८ जे सूरज पर धूल छांटेते पो तेज छंटाय
३९ टकौले नें पंचमा गिण

४० डाह्यो कागड़ो नर्के ऊपर जाइने बैठे
४१ डांचां कान नीवात जमणांने जणाववी
४२ डाभकी अणीपर पानी केटली
४३ तेरे मुंहपर तेरी, ने मेरे यार मुंह पर मेरी नहीं
४४ नरहे आपतो शुं करै माने बाप
४५ नाक ऊपर माखी पैसे तो नाक कापी नाख
४६ निधंधी न्यातमां पंद्रह पटैल
४७ हाता मूतै तेने कोण पकड़ै
४८ परणीने पाले, नेकुटुम ने जिमाड़े
४९ पहले लड़ाव्या लाड़, नेपछी भाग्यां
५० पाड़ानी उतावले कांई भैंस जणे
५१ पाड़ानी लडाईमां झाड़ोंना नाश हाड़
५२ पेटनी आग पेट जाणै
५३ पोथीमां नांरींगणा
५४ प्रीतित्यां पर्दां कैसो, पर्दौंत्यों प्रीति कैसी
५५ फरता फरती छायाछै
५६ बिलाड़ी नाँपेटमाँ खीर टके नहीं

५७ बूढ़ाने बारा बरोबर
५८ बेहाथ बगर ताली न पड़े
५९ बोलतांनां बोर वेंचाय, ना बोलतां
नीं खारक न वेंचाय
६० भलानी दुनियां नथी
६१ भालानीं अणी ने चोख्खानीं कणी
६२ भीतनें पण कान होय छे
६३ भैंसना शींगडा, कई भैंस ने भारी लागै
६४ मसाण ज्ञान
६५ माथुराखै पाघड़ी, ने पाघड़ी राखै माथाने
६६ म्होड़े थी माखी उड़ता न थी
६७ रहे ते आपथीं, ने जाय ते सगा बापथीं
६८ रांडनी बुद्धि
६९ रांड्या पछी रांडसे मरे,ने रांध्या पछी चूल्हो
संभरै
७० रांध्या फेर न रंधाय
७१ राध्यु धान रहे नहीं

७२ राम तुं राज
७३ रोये थे राज्य न मिलै
७४ लंका बारीने, हनूमान अलग ना अलग
७५ लक्ष्मी चंचल जातछै
७६ बखत एवी बात
७७ व्यापार बधंती लक्ष्मी
७८ शाकर के खानार तो बहुत पर जहरका कौन
७९ शियाला भोगीनो, ने उनाला जोगीनो
८० शिखीने कोऊ अवतरो न थी
८१ सुकुमार राणीने पादतां प्राण जाय
८२ सोनेनी कटारी, पेटमां न मारी जाय
८३ हाड़ सलामत, तो मास घणो आवशे
८४ हाड़ियो बैसे त्यां विष्टा करे
८५ हाथ ना आलसे, मूंछे मुंह मां जायँ
८६ हिये होय ते ओठें आवे
८७ हैये होली, होठें दिवाली, शूंकामनी

इति तृतीय कुसुम

चतुर्थकुसुम ।

संस्कृत ।

१ अभ्यास कारिणी विद्या ॥ (कोईभी विद्या अभ्यास रखनेसे बनी रहती या बढ़तीहै) जब कोई काय साधन यत्न जो एकबारका सीखाहुआ काम करते २ अधिक बढ़ता या सुधरता जाता तब ऐसा कहतेहैं

२ अति सर्वत्र वर्जयेत् ॥ (अधिकतासे कोईभी कार्य करना रोका गयाहै) जब कोईभी कार्य आधिक्यता पूर्वक करनेसे हानि अथवा लज्जा उठाना पडती तब ऐसा कहतेहैं ॥

३ अव्यवस्थित चित्तानां प्रसादोपि भयंकरः (जिसका चित्त अस्थिरहै उसकी प्रसन्नतामेंभीडर उपस्थित होताहै ॥ बहुधा जिनका चित्त स्थिर नहीं वे कभी तो प्रसन्न होजाते और कभी अप्रसन्न होकर बुरा कर बैठतेहैं तब ऐसा कहा जाताहै ॥

४ आपत्सुमित्रं, जानीयात ॥ (मित्रकी कसौटी
पत्ति) साधारणमें "मित्र२" कहनेवाले जब विपत्तिके
य पासभी नहीं खडे होते तब ऐसा कहा जाताहै ॥
५ आकरे पद्मरागाणां, जन्मकांच मणेकुतः ॥
त्नोंकी खानिमें कांच कहाँ) बहुधा सत्पुरुषोंके
ुत्र नहीं होते तब ऐसा कहतेहैं ॥
६ उद्योगं पुरुष लक्षणम् ॥ (पौरुष करै वही
प) निरुद्योगी मनुष्य जो भाग्य आधीन बैठे रह-
: दुःखी होते उनके शिक्षार्थ यह कहावतहै ॥
७ कायः कस्य न वल्लभा ॥ बहुधा लोग ज्ञानसे
ःत होनेपरभी कहतेहैं कि, हमारा तो शरीरसे निःम-
वहै तब ऐसा कहाजाताहै ॥
८ काकतालीयवत् ॥ (जिसप्रकार थप्पडीमें
आ आजावे) जब किसी अचानक विना उद्योग
ये प्राप्ति होजाती तो ऐसा कहा जाताहै ॥
९ खलः करोति दुर्वृत्तम् ॥ (दुष्ट दुष्कर्मही

करताहै) जिसका जो स्वाभाविकगुण तथा वृत्ति नहीं छूटकर दृढ़ बनी रहती तब ऐसा कहतेहैं ॥

१० गजानां पंक मग्नानां, गजा एव धुरन्धरः॥ (चूहेकी खालसे नगारा नहीं मढ़ा जाता) जब कोई छोटा मनुष्य बड़ेके कार्यकी सिद्धिके लिये प्रयत्न करता पर निष्फल जाता तब ऐसा कहतेहैं ॥

११ गतानुगतिको लोकाः॥ (परंपराकी चाल) जब मनुष्य अपने पूर्वजोंकी चालपर जो चाहे कैसी-भीहो चलते जाते तब ऐसा कहा जाताहै ॥

१२ गर्दभानां मिष्टान्न पानं किम् ॥ (गधेको मिठाई खिलाना) जो जिसके गुणागुणसे अज्ञातहै उसके सन्मुख परिश्रम तथा व्यय जब व्यर्थ जाता तब ऐसा कहतेहैं ॥

१३ छिद्रेष्वनर्था बहुली भवन्ति (एक दोषमें बहु दोष) जहाँ एक अनुचित बातने घर करलियाहो वहाँ सूक्ष्म दृष्टिसे देखनेमें बहुतसी बातें आने लगतीं तब ऐसा कहा जाताहै ॥

१४ तृणेन कार्यं भवती स्वराणाम् ॥ (छोटेसे बड़ा काम) वहुधा ऐसे २ अवसर आते हैं जब कि तृण सरीखे छोटे २ आदमियोंसे वडोंके वडे काम सिद्ध होते हैं तभी यह कहावत कही जाती है ॥

१५ देहरी दीपक न्याय ॥(दोनों ओर समदृष्टि) जब किसी काममें दोनों ओर समभाव रहता है तव ऐसा कहाजाताहै ॥

१६ दारिद्र्यात मरणं वरम् ॥ (दरिद्रता से मरण अच्छाहै) जब कोई प्रतिष्ठित पुरुष द्रव्यहीन होकर दुःख तथा अपमान पाता तव ऐसा कहा जाता है ॥

१७ दैवाधीनं जगत्सर्वं ॥ (सब संसार दैवाधीनहै) वहुतेरे लोग भाग्यको तुच्छ समझ पौरुषकाही आश्रय लेते हैं पर पौरुष करने पर जब कार्य सिद्ध नहीं तव ऐसा कहाजाता है ॥

१८ न खलु वयस्तेजसो हेतुः (पराक्रमके आगे अवस्था नहीं देखी जाती) ॥ जव मनुष्य

अवस्थामें अधिक होकरभी कुछ नहीं करसक्ता पर छोटी अवस्था वाला अपने दैव तथा प्रयत्न द्वारा सफलीभूत होकर उत्तम गिना जाता तब यह कहावत कहते हैं ॥

१९ नहि वन्ध्या विजानाति गुर्वीं प्रसव वेदना। (बांझ,पुत्रोत्पत्ति का दुःख क्या जानें) जब तक जिस पर जो दुःख नहीं बीता तब तक वह उसका मर्मभी नहीं जानता तो ऐसा कहते हैं ॥

२० निजं गुणं मुञ्चति किं पलाण्डुः ॥ (क्या पियाज अपना गुण छोड़ सक्ता है) जब कोई आदमी अपने स्वाभाविक गुणको किसी भी अनोपानसे नहीं छोड़ता तब ऐसा कहते हैं ॥

२१ न मूर्ख जन संपर्कः ॥ (मूर्खकी संगति अच्छी नहीं) जो मूर्खकी संगतिसे दुःख तथा हानि सहता या सज्जनका स्वभाव बिगडजाता तब ऐसा कहते हैं ॥

२२ न्यायात् पथ प्रविचलन्ति पदं न धीराः॥ (बुद्धिमान् न्यायसे चलते हैं) जब कोई मनुष्य अपने ठीक विवेकसे न देखकर सज्जनों पर दोषारोपण करता है तब यह कहावत कही जाती है॥

२३ न भूतो न भविष्यति ॥ (नहीं हुआ, न होगा) जब कोई निपट असंभव बात कहता है तब यह कहावत कही जाती है॥

२४ न वारिणा शुद्ध्यति चान्तरात्मा॥ (जलके धोनेसे अंतरङ्ग शुद्ध नहीं होता)॥ जब मनुष्य बहुतसी वाह्य क्रिया करता पर आन्तरिक सुधारकी ओर कुछ भी ध्यान न देता हुआ अपने तई पवित्र और क्रिया-वान जानता है तब ऐसा कहते हैं॥

२५ निवृत्त रागस्य गृहं तपोवनम्॥ (विरागी को घर तपोवन है) जो सांसारिक वृत्तियोंको घरही रहते हुए त्याग देते हैं उनके लिये यह कहावत है॥

२६ प्रक्षालनाद्धि पंकस्य, दूरादस्पर्शनंवरम्॥

(कीचडको छूकर धोनेसे न छूना भला है) जिसका परिणाम बुरा है ऐसा काम करना और हानि पाकर फिर उपाय करना जो लोग ऐसा करते हैं उनके लिये यह कहावत है ॥

२७ परोपदेशे, पांडित्यं ॥ जो स्वतः तो कुचलन चलते पर दूसरोंको शिक्षा देनेमें चतुर हैं उनके लिये यह कहावत है ॥

२८ प्रथम ग्रासे मक्षिका पातः ॥ (पहिले ग्रासमें मक्खी गिरना) जब कामके आरंभहीमें कुछ असगुन अथवा विगाड होजाताहै तब ऐसा कहतेहैं ॥

२९ प्रयोजन मनुद्दिश्य नमन्दोपि प्रवर्त्यते ॥ (विना प्रयोजन मूर्ख भी कुछ काम नहीं करता)जब कोई आदमी किसी कामको व्यर्थ बतलाते हुए करता है तब ऐसा कहतेहैं ॥

३० विनाश काले विपरीत बुद्धिः ॥ (नाश होनेके समय उलटी बुद्धि होजातीहै) जब अच्छे २

ज्ञानी पुरुष बुरा काम करके हानि तथा दुःख सहते हैं तब अथवा जब किसीकी बुद्धि भ्रष्ट होजातीहै तो यह कहावत कही जातीहै ॥

३१ वृथा वृष्टि समुद्रेषु ॥ (समुद्रमें वर्षा) जो पदार्थ किसीके पास अधिकतासे होनेपर इच्छा रहित हो तिसपर वही पदार्थ कोई उसे दे तब यह कहावत कही जाती है ॥

३२ विक्रीणीते करिणि किमंकुशे विवादः ॥ (हाथी बेचकर अंकुशके लिये विवाद करना) जब कोई बडी बातपर ध्यान न करके छोटीके लिये झगडा करताहै तब यह कहावत कही जातीहै ॥

३३ मक्षिका स्थाने मक्षिका ॥ (जैसे की तैसी नकल) जब कोई मनुष्य किसी विषयमें विवेक रहित होकर ज्योंका त्यों बना देता है तब यह कहावत कही जातीहै ॥

३४ मानोहि महतां धनम् ॥ (महत्पुरुषोंके

मानही धनहै) जब बडे आदमी अपनी प्रतिष्ठाके साम्हने सर्वस्व खोना स्वीकार करलेते तब यह कहावत कही जाती है ॥

३५ मौनं सर्वार्थ साधनम् ॥ (चुप रहनेसे सब काम सधतेहैं) जो लोग चुप रहकर अपना भेद किसी पर प्रगट नहीं करते उनका कार्य निर्विघ्नता पूर्वक सधता है तब ऐसा कहा जाता है ॥

३६ मणिना भूषितः सर्पः किमसौ न भयंकरः॥(मणियुक्त सर्प क्या भयंकर नहीं होता) जब कोई दुष्ट पुरुष ऊपरी सुन्दर आडंवर सहित होताहै पर उसकी दुष्टतासे लोग डरतेही रहते हैं तब ऐसा कहा जाताहै ॥

३७ मतिरेव बलात् गरीयसी ॥ (बुद्धि बलकी अपेक्षा गुरुतरहै) यदि पुरुष बलवान हो पर बुद्धिमान नहो तो उसका कार्य जब सिद्ध नहीं होकर बल निरर्थक जाता तब ऐसा कहतेहैं ॥

३८ महान् महत्येव करोति विक्रमम् ॥ (बडे आदमी अपना पराक्रम बडेकोही दिखलातेहैं) जब कोई बडा आदमी छोटेपर अपना पराक्रम जनाताहै तब यह कहावत कही जातीहै ॥

३९ मूर्खस्य नास्त्यौषधम् ॥ (मूर्खकी औषधि नहीं) मूर्ख जब किसी प्रकारसे भी अपनी मूर्खता नहीं छोडता तब ऐसा कहते हैं ॥

४० यस्यार्थः स्तस्य मित्राणि ॥ (धनवानके सब मित्र हैं) जब धनवानके सब लोग मित्र होकर बुरे कामको भला बताते हैं तब ऐसा कहा जाताहै ॥

४१ लिखित मपि लिलाटे, प्रोझितुंकः समर्थः (कर्म रेखपर कौन मेख मारसक्ताहै) जब कोई बहु तेरे उपायोंसे भी होतव्यताको नहीं मेंट सक्ता तब ऐसा कहा जाताहै ॥

४२ लोभः पापस्य कारणम् ॥ (लोभ पापका

मूलहै) जब लोभी मनुष्य दुष्कर्म करनेसे भी नहीं डरता तब ऐसा कहतेहैं ॥

४३विष वृक्षोपि संवर्घ्य पुनच्छेतुम साम्प्रतम्॥ (विषकाभी रोपण किया हुआ वृक्ष कोई हाथसे नहीं काटता) जो आदमी अपने द्वारा किसीका रोपण करे और वह रोपण कर्ताके विरुद्ध होजावे तबभी वह उसका बुरा नहीं करता ॥ तब अथवा पुत्र जब माता पितासे विरुद्ध होजाते और उनका बुरा करते हैं और माता पिता सदैव स्नेह दृष्टि रखते हैं तब भी ऐसा कहा जाता है ॥

४४ वचने किं दरिद्रता ॥ जब कोई मनुष्य यद्यपि अंतःकरणसे तो किसीको बुरा जानता है पर मुंहसे प्रशंसा करता अथवा हृदयमें घृणा करता पर मुंहसे आदर भाव बतलाता है तब ऐसा कहते हैं ॥

४५ शुभस्य शीघ्रम् ॥ (अच्छा काम जल्दी करना) शुभ काममें देर करनेसे बहुधा विघ्न आजाते

हैं इस लिये जब लोग शुभ कामके लिये समय टाल-ते हैं तब यह कहावत कही जाती है ॥

४६ सर्वः स्वार्थं समीहते ॥ (सब अपना स्वार्थ चाहते हैं) जब लोग सदैव अपने प्रयोजनके विना कोई कार्य नहीं करते तब ऐसा कहा जाता है ॥

४७ साधवो नहि सर्वत्र ॥ (सज्जन पुरुष सब जगह नहीं) जब हर कोई आदमी चाहे उसमें दुर्गुण भीहों अपने तईं अच्छा बतलाता है तब ऐसा कहते हैं ॥

४८ संदीप्ते भवनेतु कूप खननं, प्रत्युद्यमः कीदृशः ॥ (आग लगनेपर कुआ खोदना) जब कोई मनुष्य संकट आनेपर फिर उसके उपायको दोड़ता है तब ऐसा कहते हैं ॥

४९ सर्वे गुणाः कांचन माश्रयंति ॥ धनके आ-धीन सब गुण) जब धनवानकी सेवा गुणी करते और उसके आश्रयसे रहते तब ऐसा कहा जाता हैं ॥

५० स्वार्थी दोषन्न पश्यति ॥ (स्वार्थी दोष नहीं देखता) जो लोग अपने प्रयोजनके लिये दूसरे की हानि अथवा दोषपर लक्षनहीं देते तब ऐसा कहा जाता है ॥

५१ सूची प्रवेशो,मुसल प्रवेशा ॥ (सुईके स्थानमें मूसल) जब छोटा कार्य आरंभ करनेपर सहारा मिलनेसे वड़ा काम सिद्ध होजाता तब ऐसा कहा जाता है ॥

५२ सत्ये नास्तिभयं क्वचित् ॥ सत्यमें भय नहीं) जो सच बोलकर सुखी रहते उनके लिये ऐसा कहते हैं ॥

५३ षट्कर्णो भिद्यते मंत्रा ॥ (छः कानसे बात का भेद खुलना) जब दो मनुष्योंसे तीसरेके कान बात पहुंची कि प्रगट होने लगती अथवा स्त्री पुरुष दोनों परकी बात दोमेंसे किसीनेभी तीसरेसे कही कि फिर नहीं रुकसक्ती तब ऐसा कहा जाता है ॥

५४ हितं मनोहारिच दुर्लभं वचः॥ (हित-कारी और प्यारे वचन दुर्लभ हैं) हितकारी वाक्य बहुधा कठोर होते हैं पर वाक्य चातुर पुरुष जब ऐसा बोलते हैं कि प्यारा लगने पर हितकारी होता है तब ऐसा कहते हैं॥

५५ क्षीणा नरा निष्करुणा भवन्ति॥ (निर्धनी दया रहित होजाता है) जब निर्धनी पुरुष कठोरताके काम करने लगता तब ऐसा कहते हैं॥

नीचे लिखी कहावतोंका स्पष्ट अर्थहै॥

१ अशक्तिवान् भवेत् साधु,कुब्जानारी पतिव्रता
२ अधिकस्य, अधिकं फलम्
३ अतो भ्रष्ट स्ततो भ्रष्टः
४ अंते धर्मोजय, पापोक्षय
५ आकृति गुणा न कथयति
६ क्षमा वीरस्य भूषणम्
७ धर्मस्य तुरता गतिः

८ परान्नं विष भोजनम्

९ परोपकाराय सतां विभूतयः

१० पाखंडा पूजिते लोक, साधु नैवच नैवच्

११ बहुरत्ना वसुन्धरा

१२ मूलं नास्ति कुतः शाखा

१३ विभूषणं मौनं अपंडितानाम्

इति चतुर्थ कुसुम ।

पंचम कुसुम

फारसी

१ अरां कशीदन, कारे बूज़नानीस्त॥ (आरी चलाना बन्दरका काम नहीं) जब कोई होशयारी और चतुराई का काम अज्ञानी लोग करके बिगाड़ देते तब यह कहा जाता है॥

२ अव्वल खेश, बाद दरवेश॥(पहिले अपना, पीछे पराया) " स्वकार्य्यं साधयेत् धीमान् " जो अपना आवश्यकीय काम छोड़ परायेके काममें लग-कर हानि सहते उनके लिये यह कहावत है॥

३ अन्दक २ खैले शवद, व कतरा २ सेले गरदद॥ (बूँद २ से नाला) जब कोई काम क्रमसे थोड़ा २ करते, बहुत हो जाता तब ऐसा कहते हैं॥

४ अव्वल अन्देशो आँ गहे गुफ़्तार॥ (सोच फिर कह) जो लोग बिना विचारे कोई बात कहकर फिर पछताते हैं तब ऐसा कहा जाता है॥

५ आँके चूं पिस्तादी दमश हमासगज पोस्तवर पोस्त वूद हमचो पियाज (देखनेमें पिस्ता भीतर पियाज) जब किसीका ऊपरी आडंवरतो सुहावना तथा भड़कदार हो पर भीतर उसके विरुद्ध घृणा कारक हो तब ऐसा कहते हैं ॥

६ आफ़तश दर तारवीर ॥ (देरमें हानि) जब किसी काममें देर होनेसे विघ्न आकर सिद्धि नहीं होती तब ऐसा कहते हैं ॥

७ आवाज़े दुहुल अज़ दूर खुशमे नुमायद ॥ (ढों दूरके ढोल सुहावने)जब किसीकी दूरसे अधिक प्रशंसा सुनी जावे पर देखने पर तुच्छ निकले तब ऐसा कहते हैं ॥

८ इलाजे वाक़या पेशज़ वुकूअ वायद कर्द ॥ (पानी पहिले पार बांधना) काम हो चुकनेपर जब पीछे उपाय किया जाता तब ऐसा कहते हैं ॥

९ एक न शुद, दो शुद ॥ एक काम नहीं करना

चाहते कि दो होगये इसी प्रकार तीसरा काम नहीं करते कि चौथा होगया ऐसी दशामें यह कहावत कही जाती है ॥

१० एके टा नोश, दीगरे रा नेश ॥ (एक को शक्कर दूसरेको विष) जहाँ एकही विषयमें दो आदमियोंको भिन्न २ प्रकारके भाव उत्पन्न होते वहाँ ऐसा कहते हैं ॥

११ कुंजिश्क दरदस्त बेह, कि बाज़दर हवा॥ (प्राप्तको छोड अप्राप्त को नहीं दोड़ना) हाथमें की थोड़ी प्राप्ति छोड़ जो लोग बहुतके लिये दौड़ते और दोनों हाथसे जाते तब ऐसा कहा जाता है ॥

१२ करदये ख़ेश, आयद पेश॥(जो करेगा सो आगे आवेगा) जब कोई काम गुप्तरीति से करने पर फल सबको प्रगट हो जाता तब ऐसा कहते हैं ॥

१३ कोफ़तारा, नानेतिही कोफतस्त॥ (भूखेको सूखी रोटी मिठाईके बराबर) जिसको किसी पदार्थ

की अत्यावश्यक्ता है यदि वो कैसाभी मिल जावे और वह उसे पाकर अति संतुष्ट हो महत्व प्रकाश करे तब ऐसा कहते हैं ॥

१४कोह कन्दन,व मूस बराबुर्दन॥(पहाड खोदकर चूहा निकालना) बहुत परिश्रम थोड़े फलकी प्राप्तिके लिये जहाँ किया जाता वहाँ ऐसा कहते हैं ॥

१५ कारे इमरोज़, बफर्दा नबायद गुज़ाश्त ॥ (आजका काम कलको न रख) समय परका काम जब पीछे डाल देनेसे बिगड़जाता है तब ऐसा कहतेहैं

१६ खर्च बअन्दाजे दखल कुन ॥ (आमदनीको देखकर खर्च) जब कोई आदमी प्राप्तिसे अधिक व्ययकर दुःखी होता तब शिक्षार्थ यह कहावत कहतेहैं ॥

१७ खामोशी अलामते रज़ास्त ॥ (चुप रहनेसे एक प्रकारकी राज़ी पाई जातीहै तब यह कहावत कहतेहैं ॥

१८ खरे गुत्फा जौ नमी खुर्द ॥ (सोया गधा जव नहीं खाता) जव विना उद्योगके कुछ काम नहीं होता तव आलसियोंके शिक्षार्थ यह कहावतहै ॥

१९ गमें फर्दा इमरोज़ नवायद खुर्द ॥ (कल कागम आज न करना) प्रत्येक काम समयका समय परही करना चाहिये यह यथार्थ कहावतहै ॥

२०गुले वोस्तां वुर्दन ॥ (वागमें फूल लेजाना) जिसके पास जो पदार्थ वहुतायतसेहै यदि उसे थोडासा दिया जाकर कुछ मान न मिले तव ऐसा कहतेहैं ॥

२१ चाह करना चाह दरपेश॥ (कुआ खोदनेवालेके आगे कुआ) आदमी किसीके वुरा करनेका जव कोई उपाय करताहै और दैवयोगसे उस उद्योगमें उसीका वुरा होजाता तव ऐसा कहते हैं ॥

२२ चिराग़ गुल पगडी गायव ॥ लुच्चोंकी समाजमें जव भलेमानुष को थोडीसी असावधानीके कारण हानि पहुंचती तव ऐसा कहतेहैं ॥

२३ जायगुल गुलबाशो जाय खा़र खा़र॥ (मिहरबानीके वक्त मिहरबानी और गुस्सेके वक्त गुस्सा) जैसे समयपर वैसाही बर्ताव अथवा जैसेके साथ तैसे बने रहना यह शिक्षार्थ कहावतहै॥

२४ जौरे उस्ताद् बेः जिमहरे पिदर॥ बापकी मुहब्बतसे उस्तादकी सख़्ती अच्छी होती यह यथार्थ कहावतहै॥

२५ तन्दुरुस्ती हज़ार नियामत॥ जब किसीके पास सर्व सामग्रीहै पर रोगी होनेके कारण भोग नहीं सक्ता तब ऐसा कहतेहैं॥

२६ तुख़्म तासीर, सुहबत असर॥ यह यथार्थ कहावतहै कि हरएकमें बीजकी तासीर और सुहबतका असर अवश्य रहताहै॥

२७ ताज़ा खतर नानिही बर दुश्मन जफर नयाबी॥ (जबतक जान खतरेमें न डालें, दुश्मन फतह नहीं होता) जब मनुष्य दुःख तथा

हानिके संदेहसे कोई काम नहीं करता तब फलभी कभी उसे नहीं मिलता तब ऐसा कहतेहैं ॥

२८ तीर तकदीर अज सिपरे तदबीर रद नमी गर्दद ॥ (तकदीरके साम्हने तदबीर कुछ नहीं करसक्ती) जो बड़े उद्योगीहैं वे तकदीर बुरी होनेके कारण किसीभी काममें सफलीभूत नहींहोते तब ऐसा कहा जाताहै ॥

२९ तिश्नगारा नुमायद अन्दर ख्वाब, हमा आलम बचश्म चश्मये आब ॥ (बिल्लीको स्वप्नमें गोश्त दिखता) जिसको जिसबातका शौक व लतहै उसका ध्यान सदैव उसीबात पर रहता तब ऐसा कहतेहैं ॥

३० दुश्मने दाना वेह अज़ दोस्ते नादाँ ॥ (अज्ञानी मित्रसे ज्ञानी वैरी अच्छा अकलमन्द दुश्मन निष्प्रयोजन नहीं सताता पर नादानदोस्त हमेशा सताता तभी ऐसा कहतेहैं ॥

३१ दर अमल कोश, हरचे खाही पोश॥ काम अच्छाकरो कपडे जैसे चाहे तैसे पहनो, यह यथार्थ कहावतहै॥

३२ नेकी बरबाद गुनाह लाजिम॥ जब किसीके काममें भलाई तो दूर रहती पर बुराई मिलती है तब ऐसा कहते॥

३३ नीम हकीम खतरे जान॥आधा वैद्य प्राण लेताहै) जो आदमी किसी विषयको पूरा नहीं जानता और उससे वही काम लियाजावे तो अवश्य बिगड जाताहै तब ऐसा कहतेहैं॥

३४ नतीजा कार बदका कारबदहै॥ जब कोई दूसरेके साथ बुराई करके आपभी उसकी ओरसे बुराईका भागी होता तब ऐसा कहतेहैं॥

३५ पिशाचो पुर शुद बे जानद पीलरा॥ (मच्छरका हमला हाथीपर) जब तुच्छ आदमी बडेको हरानेके लिये उद्यमी होता तब ऐसा कहतेहैं॥

३६ फर्बेही शयये दीगर, व आमास चीजे दीगर॥(मोटापन और बातहै तथा सूजन और बात) जब कोई दो बातैं तथा एक समान प्रतीत हों पर एक दूसरेके विरुद्ध हों याने एक सुखदाई और दूसरी दुखदाई तब ऐसा कहतेहै ॥

३७ फ़ुरसतरा गनीमत शुमार ॥ समय एक लूट समझो यह यथार्थ कहावतहैं ॥

३८ बरे संगे गर्दां नरोयद न बात ॥ (चलता फिरता जोगी बदनाम नहीं होता) ॥ दोहा ॥ जोगी तो रमता भला दाग न लागै कोय । बहता पानी निर्मला भरा गदीला होय ॥ १ ॥ संसारके लोगोंके नाईं, संसारसे विरक्त होकर रहनेसे बदनामी होती इस लिये शिक्षार्थ कहावतहै ॥

३९ ब अन्दाजे गलीम पादराज कुन् ॥(जितनी चादर उतना पांव फैलाना) अपनी योग्यताके बाहिर

काम करके जो लोग बदनाम होते उनके शिक्षार्थ यह कहावतहै ॥

४० बाद अज मुर्दने सुहरा बनोशदारू॥ मरन पर दवाई भला बुरा काम होचुकने पर जब उपाय निरर्थक जाते या किये जाते तब ऐसा कहतेहैं ॥

४१ महमान अजीजस्त मगर तासिह रोज ॥ (तीन दिनका महमान चौथे दिनका हैवान) पहिले दिनका पाहुना दूजे दिनका भई ॥ तीजे दिनकी बेशरमी चौथे दिन मतगई ॥ जब कोई मनुष्य दूस· रेके आश्रय बहुतदिन रहकर अनादरपाता तब ऐसा कहते हैं ॥

४२ मुश्क आनस कि खुद बुबोयद, नके अत्तार बुगोयद ॥ श्लोक ॥ नहि कस्तूरिकामोदः शपथेन विभाव्यते ॥ जो काम अच्छा है उसकी अच्छाई जब कहकर बताई जाती है तो ऐसा कहा जाता है ॥

४३ मप्सन वकस आंचे वखुदनापसन्दी ॥ जो अपने तईं ठीक काम नहीं करसक्ता और दूसरे का भी विगाड़ देता है उसके लिये ऐसा कहते हैं ॥

४४ मुत्फ माल दिलेवेरहम ॥ (मुत्फके मालमें दिल वेरहम) जब लोग विना परिश्रम किये धन पाते और विना कलेजेके उड़ाते तब ऐसा कहते हैं ॥

४५ मुत्फराचे वायद गुत्फ ॥ (मुत्फकी चीज का क्या पूंछना) जो चीज मुत्फ मिले उसके भले बुरेका जब निर्णय नहीं किया जाता तब ऐसा कहतेहैं॥

४६ वक्ते ज़रूरत चुन मानन्द गुरेज, दस्त विगीरद सारे शमशेरे तेज ॥ (सीधी तरह काम न निकले तव टेढी तरह निकालना)कार्य सिद्ध करनेके ४ उपाय हैं साम, दाम, भेद, दंड । जब तीनसे काम नहीं निकलता तो चौथेप्रकार से काम निकालते हैं तभी ऐसा कहा जाता है ॥

४७ वाकुन कीसा, वुकुर हरीसा ॥ (टके खर्च

करके मोहन भोग उड़ाओ) जो पैसा खर्च न करके आनन्द लूटना चाहते उनके लिये ऐसा कहते हैं ॥

४८ मुलूक आँ चुनाँ कुन बखलके जहाँ ॥ क ख्वाहीके बातों कुनन्द आँ चुनाँ॥ दुनियांमें ऐसा बर्ताव करना जैसा कि औरसे अपने लिये चाहते हो॥ यह यथार्थ कहावत है ॥

४९ हर दरख शिन्द तिलानेस्त ॥ (हरएक चमकने वाली चीज सोना नहीं है) एकही रूपरंगके पदार्थ जब मानमें एक समान नहीं होते तब ऐसा कहा जाता है ॥

५० हरकि कुश्ती गीरस फन्नश बिसिया रस्त ॥ (जो लड़ने वाला है उसे दाव बहुत याद हैं) जो मनुष्य जिसकामको करता रहता है उसकी सब प्रकारकी बारीकी जाननेमें भी प्रवीण होजाता, तब ऐसा कहते हैं ॥

८१ हरकसे पनूजरोज नौवते ऊस ॥(घमंड केवल चार दिन रहता है) जो आदमी घमंड करता उसकी थोड़ेही दिनोंमें दुर्दशा होजाती तब ऐसा कहते हैं ॥

८२ हिम्मते मर्दा, मदद खुदा ॥ जो आदमी किसी कामके करनेका साहस करता ईश्वर कृपासे उसका काम भी सिद्ध हो जाता है तब ऐसा कहतेहैं॥

८३ हरकुजा चश्मये बुवंद शीरीं, मर्दुमों मुर्गों मोर गिर्दाइन्द॥(जहां मीठा पानी होता वहां मनुष्य चिड़िया और जानवर सब आते हैं) प्राप्ति और पोष-णके स्थान पर जब सब लोग आते हैं तब ऐसा कहा जाता है ॥

८४ हर मुल्के राह रस्मे ॥ (जैसा देश वैसा भेश) जिस देशमें जाना वहीं कैसा बर्ताव करना यह शिक्षार्थ कहावत है ॥

५९ हरजाके गुलस्त खारस्त ॥ (जहां फूल तहां कांटा) जो काम सुखके लिये किया जाता और जब उसमें मज़ाकी सज़ा मिलती है तब ऐसा कहतेहैं ॥

इति पञ्चमकुसुम ।

षष्ठ कुसुम ।

मरहठी ।

१ अडल्याचा सारथी भगवान् ॥ जब अटके हुए आदमीको किसीकी ओरसे मदद नहीं मिलती तब ऐसा कहा जाताहै ॥

२ आकाशची कुऱ्हाड कोल्ह्याचे दांतावर ॥ जब अचानक कोई ऐसी बात हो जातीहै कि, जिससे किसीकी आपत्ति बचकर आपत्ति दाताकी हानिहो तब ऐसा कहतेहैं ॥

३ इच्छिलेलें साधेल, तर दरिद्र कां बाधेल ॥ इच्छाका पदार्थ मिलनेपर दरिद्र नहीं रहता तब ऐसा कहतेहैं ॥

४ उधारीचें पोतें, सव्वा हाथ रितें ॥ जो लोग उधारके भरोसे रोजगार करके हानि उठाते उनके लिये यह कहावत कही जातीहै ॥

५ औषधा वांचून खरूज गेली ॥ जिस आपत्तिको उपाय करके दूर करना चाहतेहैं ॥ यदि वह स्वतः दूर होजावे तब ऐसा कहतेहैं ॥

६ कान द्यावा पण कानू न द्यावा ॥ जो सज्जन पुरुषहै उनका सर्वस्व नष्ट क्यों न होजाय, पर वे अपनी पद्धति नहीं छोड़ते तब ऐसा कहा जाताहै ॥

७ कुत्र्यास खीर आणि गद्ध्यास चपात्या॥जो जिसके मजेमें नहीं जानता उसको देनेसे जब वह उपकार निरर्थक जाता तब ऐसा कहते हैं ॥

८कोळसा उगाळावा,तितका काळा॥दुष्टकी जितनी अधिक परीक्षा करो उतनी अधिक दुष्टता प्रगट होती है तब ऐसा कहा जाता है ॥

९ खरारा खाजवील,नगारा वाजवील ॥ जो पदार्थ जिसकामकाहै उससे वही लेना चाहिये यह शिक्षार्थ कहावतहै ॥

१० गांवा मागें घोडे,आणि वराती मागें वेडे॥ अपनी२ही आवश्यकताकर पदार्थ सब चाहते तब यह कहावत कहतेहैं ॥

११ गाढवाचा गोंधळ, लाथाचा सुकाळ ॥ (गधा प्रेममें आता तौ लात मारता) दुष्ट आदमी किसीसे प्रसन्न होकर स्वभावानुसार उसके साथभी दुष्टता करता तब ऐसा कहातेहैं ॥

१२ गव्हांचा आटा आणि कुणब्याचा बेटा ॥ जबकूटा तब२ मीठा॥उत्तम आदमीको सताते हुए भी जब उत्तम फल मिलताहै तब ऐसा कहतेहैं ॥

१३ गाजर पारखी, त्याला रत्नाला काय॥हलका काम करनेवाला पुरुष जब महत्कार्यका कुछ भी भेद नहीं जानता तब ऐसा कहतेहैं ॥

१४ घरचा वाघ व बाहेरची शेळी ॥ जो लोग सहजमें तो बहादुरबने फिरते पर काम पड़नेपर कायर बनजाते तब ऐसा कहतेहैं ॥

१५ घेतां दिवाळी, देतां शिमगा ॥ जो लेतेसमय तो ऐसे रहते कि,कोई जानने भी नहीं पाता पर देतेवक्त प्रसिद्ध करतेहैं तब ऐसा कहाजाताहै ॥

१६ घरावर नाहीं कौल, रिकामा करी डौल ॥जब छोटे आदमी बड़ी२ बातें मारते तब ऐसा कहाजाताहै ॥

१७ जशासतसें भेटें आणि मनाचा संशय फिटे॥ जो आदमी जैसा होता वैसे कोही चाहता। और तभी उसकी इच्छा पूर्ण होतीहै यह यथार्थ कहावतहै ॥

१८ डोंगरचेआँवळे आणि समुद्राचें मीठ ॥जब एक व्यक्तिको वैसीही दूसरी व्यक्ति मिलजाती तब ऐसा कहाजाताहै ॥

१९ डगशीलतर, काय वघशील ॥ जो लोग हरकार कोईकाम नहीं करते तो उनको उसका नतीजाभी मालूम नहीं होता तब ऐसा कहाजाताहै ॥

२० ढोंग धत्तूरा, हातींकटोरा ॥ जो लोग ढोंग

धतूरेसे धनवान् होना चाहते पर भाग्योदय विना कुछभी नहीं पाते तब ऐसा कहाजाताहै ॥

२१ तवई पेक्षां, आवई काठिण ॥ जब कोई प्रत्यक्षमें बात न कह कर परोक्षमें कहताहै और सुननेसे बुरा मालूम होता या कठोराघात होता तब ऐसा कहतेहैं ॥

२२ ताज्या घोडचा वरच्या गोमाशा ॥ बड़े आदमीके यहां जब बहुतेरे स्वार्थी पुरुष आतेहैं तब ऐसा कहाजाताहै ॥

२३ तिळभर दुखणें, मनभर कुँथणें ॥ जब कोई थोड़ा दुखहोनेपर अधिक प्रगट करतेहैं तो ऐसा कहाजाताहै ॥

२४ तोंडवांकडें, पण दैव फांकड़ें ॥ जिसका कुरूप होनेपर भाग्य बड़ा होताहै उसके लिये यह कहावत कही जातीहै ॥

२५ तरवार मारत्याची, विद्या करत्याची ॥ जिसको जिसकार्यका अभ्यासहै तथा साधन जानताहै वही वो करसक्ताहै या उसके काम आताहै तब ऐसा कहतेहैं ॥

२६ थट्टाआधी करूंनये, मग बोम मारूंनये ॥ जो लोग किसीकी मसखरी करके उसके चिड़कने तथा बुरा कहनेसे फिर गुस्सा होने लगतेहैं उनके शिक्षार्थ यह कहावतहै ॥

२७ थोड्याने उदार, व बहुताने कृपण ॥ जो लोग थोडे व्ययके लिये तो कुछ नहीं कहते पर बहुतके लिये चुप रहततेहैं उनकी यथार्थता बतानेको यह कहावतहै ॥

२८ दोघांचे भांडण, तिसऱ्यासलाभ ॥ जहां दो आदमियोंके झगड़ेमें तीसरेको लाभ होताहै तहां यह कहावत कहतेहैं ॥

२९ दर्यामें खसखश ॥ जब बड़े आदमीके नज-दीक छोटी वस्तुका कुछ प्रमाण नहीं होता तब ऐसा कहतेहैं ॥

३० दुआणी चा मुळा, तीनपैसे हेल ॥ जब छोटे आदमीको बड़े आडम्बर की आवश्यकता होती है तब ऐसा कहतेहैं॥

३१ देवतारी, त्यासकोण मारी ॥ किसीका भाग्य प्रबल होने पर जब सताने वालेका परिश्रम व्यर्थ जाता तब ऐसा कहतेहैं ॥

३२देवाची गति, विलक्षण अति ॥ जबकुछ काम किया जाता और फलकुछ और होता तब ऐसा कह-तेहैं॥

३३दोहों डगरीं वर हात ॥ लोगोंको समान दोपक्षों से मिल रहना चाहिये जिससे कभी हानि नहीं हो यह शिक्षार्थ कहावतहै ॥

३४दिनभर चले अढाई कोस॥ जब आलसी आदमीसे काम पड़जाता या बडा काम करना चाहैं और बड़े परिश्रमसे थोड़ाहो तब ऐसा कहतेहैं ॥

३५धन्याला धत्तूरा, चोराला मलीदा ॥ जोलोग परिश्रमकरके धनउपार्जन करते वे मितव्ययी होनेके कारण अच्छी तरह खर्च नहीं करसक्के पर जिनको मफ्तका मिलजाता वे अन्धाधुन्ध खर्च करके आनन्द उड़ाते तब ऐसा कहाजाताहै ॥

३६ नगान्याचे घाय ॥ तेथें टिमकीचें काय॥ जहाँ बड़ों२को कोई पूछता नहीं वहां छोटे२लोग मान चाहैं तब ऐसा कहतेहैं ॥

३७ पदरचें द्यावें,पण जामिन न व्हावें ॥गांठसे देदेना पर जामिन न होना, यह शिक्षार्थ कहावतहै ॥

३८फिरेल तो चरेल ॥ जब लोग उद्योग करके अपना पोषण पूर्णता पूर्वक करलेतेहैं तब ऐसा कहजाताहै ॥

३९ बळी तो कान पिळी ॥ जो बलवान् होकर सत्र को परास्त करता और अपना काम निकाललेता उसके लिये ऐसा कहतेहैं ॥

४० भररे पोटा जारे दिवसा॥ जो लोग मुफ्तके भोजन पाकर दिन काटते उनके लिये यह कहावतहै॥

४१ मिथ्या भाव मनाचा, इच्छा देवी ॥ जो लोग इच्छा तो कुछ करते और भाग्यवशात् होता कुछ और हे तब ऐसा कहाजाताहै ॥

४२ मुंगीला मुताचा पूर (चींटीको पेशाव हीनदी) जब निर्बल आदमी को थोड़ासादुःख बहुत मालूम होता तब ऐसा कहतेहैं ॥

४३ यजमान सुस्त, आणि चाकर मस्त ॥ जब मालिक् की सुस्ती से नौकर लोग खूब हाथ मारते तब ऐसा कहाजाताहै ॥

४४ लहान मूर्ति पण थोरकीर्ति ॥ जब छोटा

आदमी अपनी करतूति द्वारा बहुत यशका भागी होता है तब ऐसा कहतेहैं ॥

४९ हत्ती होऊन लांकडे खावीं, आणि मुंगी होऊन साखर खावी ॥ जो जिसके योग्य काम होता वही करता है तब ऐसा कहा जाता है ॥

इति षष्ठोऽध्यायः ।

इति कहानत कल्पद्रुम समाप्त ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-
खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेंकटेश्वर" छापाखाना-बंबई.